भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 312 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 07 नवम्बर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता बने हुए हैं पीएम मोदी, छठे नंबर पर जो बाइडेन : एजेंसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी को एक कंसल्टिंग एजेंसी ने अपनी दुनिया का सबसे लोकप्रिय नेता माना है। ग्लोबल लीडर अप्रूवल ट्रैकर में पीएम नरेंद्र मोदी को सबसे ज्यादा 70 फीसदी रेटिंग मिली है और वह दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेताओं में शुमार हुए हैं। वहीं जर्मन चांसलर अंगेला मर्केल 54 फीसदी रेटिंग मिली है। दिलचस्प बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन छठे नंबर पर आए हैं, उन्हें महज 44 फीसदी रेटिंग ही मिली है। वहीं मेक्सिको के राष्ट्रपति लोपेज ओब्राडोर 66 फीसदी रेटिंग के साथ दूसरे नंबर पर हैं। कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो को 43 फीसदी रेटिंग के साथ 7वें नंबर पर रखा गया है। दक्षिण कोरिया के नेता मून जे इन को 9वें नंबर पर रखा गया है। टॉप 10 की बात करें तो आखिरी पायदान यानी 10वें नंबर पर बोरिस जॉनसन को रखा गया है, जो ब्रिटेन के पीएम हैं।

महाराष्ट्रः अहमदनगर के सिविल अस्पताल में दर्दनाक हादसा

आईसीयू में आग लगने से 11 की मौत

अहमदनगर (एजेंसी)। महाराष्ट्र के अहमदनगर के सिविल अस्पताल के आईसीयू वार्ड में शनिवार सुबह भीषण आग लग गई है जिसमें 11 कोरोना रोगियों की मौत हो गई। यहां कोरोना रोगियों का इलाज चल रहा था। आग में झुलसे लोगों को पास के एक अन्य अस्पताल में शिफ्ट किया गया है। मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई जा रही है।

आग लगने के तुरंत बाद अस्पताल कर्मियों और स्थानीय लोगों की मदद से आग बुझाने की कोशिश की गई इसके बाद दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंच गईं और आग पर काबू पाया। अधिकारियों ने कहा कि महाराष्ट्र के अहमदनगर शहर में जिला सिविल अस्पताल के आईसीयू में शनिवार को भीषण आग लगने से कम से कम 11 कोरोनो वायरस रोगियों की मौत हो गई और एक व्यक्ति गंभीर रूप से झुलस गया। आग शनिवार सुबह 11.30 बजे के आसपास लगी। इस दौरान आईसीयू वार्ड में 20 लोग मौजूद थे, इनमें से कुछ वैंटिलेटर पर भी थे। हॉस्पिटल के वार्ड बॉय, नर्स और डॉक्टर्स ने सभी मरीजों को सेफ वार्ड में शिफ्ट किया। जानकारी के अनुसार जिस वार्ड में आग लगी, वह अस्पताल के बिलकुल बीचो-बीच है।

आग लगने पर पहले अस्पताल के अग्निशमन यंत्र से इस पर काबू पाने की कोशिश की गई, लेकिन यह कोशिश नाकाम रही। इसके बाद अहमदनगर नगर निगम और एमआईडीसी दमकल विभाग की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचीं। इसके अलावा पुलिसकर्मी और अस्पताल प्रबंधन के लोग राहत और बचाव कार्य में जुटे। इस हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शोक प्रकट किया है। पीएम मोदी ने कहा- महाराष्ट्र के अहमदनगर के एक अस्पताल में आग लगने से हुए लोगों की मृत्यु से दुखी हूं। पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना। घायल लोग जल्द से जल्द स्वस्थ हो। वहीं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी हादसे पर दुख जताते हुए कहा कि अहमदनगर के एक अस्पताल में आग लगने से लोगों की मौत देखना दुखद है। उन्होंने पार्टी कार्यकताओं से राहत कार्य में मदद करने का आग्रह किया। उन्होंने आग में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति भी अपनी संवेदनाएं भेजी हैं।

तेल टैंकर में धमाकाः सिएरा लिओन में बड़ा हादसा, रिस रहा तेल भरने उमड़े लोग, 92 की मौत

फ्रीटाउन (एजेंसी)। पश्चिम अफ्रीकी देश सिएरा लिओन की राजधानी फ्रीटाउन में एक तेल टैंकर में धमाके के साथ आग लगने से 92 लोगों की मौत हो गई। ये लोग टैंकर से रिस रहा तेल भरने के लिए उमड़े तभी तेल में आग लग गई और फिर टैंकर में जोरदार धमाका हो गया। इससे वहां मौजूद लोग उसकी चपेट में आ गए। शनिवार अल सुबह हुए हादसे के प्रत्यक्षदर्शियों व अधिकारियों ने बताया कि बड़ी संख्या में लोग टैंकर से लीक हो रहा तेल एकत्रित करने के लिए पहुंच गए थे। उपनगर वेलिंगटन में एक बस टैंकर से टकरा गई थी। यह फ्रीटाउन के पूर्व में स्थित है। न्यूज एजेंसी एएफपी के अनुसार सरकार ने अब तक मरने वालों की संख्या की पुष्टि नहीं की है, लेकिन फ्रीटाउन में केंद्रीय मचुर्री के प्रबंधक के अनुसार विस्फोट के बाद उन्हें 91 शव मिले थे।

घटना उस वक्त हुई जब करीब 40 फीट लंबा तेल टैंकर एक बस से टकरा गया। इसके बाद हुए टैंकर से तेल का रिसाव होने लगा और कुछ ही देर में आग के साथ हुए भीषण विस्फोट ने पूरे इलाके में तबाही मचा दी। पोर्ट सिटी के मेयर यवोन अकी सॉयर ने बताया कि पीड़ितों में वे लोग भी शामिल हैं जो क्षतिग्रस्त टैंकर से रिस रहे तेल को एकत्रित करने उमड़े थे। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी की प्रमुख ब्रिमा ब्यूरेह सेसे ने कहा कि हमें कई जले हुए शव मिले हैं। यह बेहद भयावह दुर्घटना है। घटना के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। वीडियो में देखा जा सकता है कि लोग बुरी तरह से जले हुए हैं। आसपास के घरों और दुकानों में भी आग लग गई है।

भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आज, कौन सा प्रस्ताव होगा पास, किन मुद्दों पर होगी बात?

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक रविवार को होने वाली है। इस दौरान सिंगल पॉलिटिकल रिजॉल्यूशन पास किया जाएगा। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह ने इस बारे में जानकारी दी। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति भाजपा की निर्णय लेने वाली सर्वोच्च संस्था है। कोरोना प्रतिबंधों के चलते दो साल के बाद रविवार को इसकी मीटिंग होने जा रही है। भाजपा में राष्ट्रीय और आर्थिक मुद्दों पर रिजॉल्यूशन पास करने की परंपरा रही है। पूरे दिन चलने वाली इस मीटिंग के दौरान इस साल सरकार द्वारा कोरोना से निपटने की तैयारियों, वैक्सीनेशन ड्राइव की रफ्तार और इकॉनमी को बेहतर करने वाली नीतियों के संबंध में चर्चा होने की संभावना है। वहीं कुछ लोग इस मीटिंग में वर्चुअली भी शामिल हो सकते हैं। अरुण सिंह ने बताया कि इस मीटिंग को प्रधानमंत्री नरेंद मोदी भी संबोधित करेंगे। अरुण सिंह के मुताबिक मीटिंग के दौरान मुख्य एजेंडा, पंजाब, मणिपुर, गोवा, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव होंगे। साथ ही सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। इसमें आत्मनिर्भर भारत और गरीब कल्याण योजनाएं शामिल रहेंगी। अरुण सिंह ने बताया कि कोरोना के दौरान पार्टी कार्यकताओं ने जो काम किया है, उसे भी इस प्रदर्शनी में शामिल किया जाएगा। साथ ही कुछ दिन पहले 100 करोड़ लोगों को टीका लगाने का जो माइल स्टोन प्राप्त किया गया है, उसे भी इसका हिस्सा बनाया जाएगा।

जहरीली शराब से 33 मौतें : नीतीश बोले-

अगर गलत चीज का इस्तेमाल होगा तो ऐसी स्थिति आएगी, करेंगे सख्त कार्रवाई

पटना (एजेंसी)। बिहार में शराब से हुई मौतों पर सीएम नीतीश कुमार ने विपक्ष के आरोपों का जवाब दिया। नीतीश ने कहा, मैं बार-बार कह रहा हूं कि अगर आप गलत चीज का इस्तेमाल करेंगे तो ऐसी स्थिति आएगी। मैंने अधिकारियों से बात की है, त्योहार के बाद इस पर विस्तार से समीक्षा होगी। उन्होंने कहा कि एक कैंपेन चलाए जाने की जरूरत है कि बताया जाए कि शराब खराब है और इस पर पाबंदी सही है। ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की गई है। वहीं, बिहार सरकार के मंत्री जनक चमार ने घटना स्थल का दौरा किया और नकली शराब के बहाने साजिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इसके सेवन करने वाले लोग गरीब हैं। जब कार्रवाई और छापेमारी की जाती है, तो कमजोरों को पकड़ा जाता है। कार्रवाई के

चलते कमजोर लोग मर जाते हैं। उन्होंने कहा कि लोगों में पुलिस का खौफ नहीं दिख रहा है। गोपालगंज के दौरे के दौरान मंत्री ने कहा कि गोपालगंज में मृतकों के परिजनों से मुलाकात कर हर संभव मदद करने का भरोसा दिया और अस्पतालों में भर्ती मरीजों के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है। वहीं, बिहार सरकार के मंत्री सुनील कुमार 21 लोगों की मौत की पुष्टि की है, जिसमें 11 मौतें गोपालगंज और 10 मौतें बेतिया में हुई है। हालांकि, पूर्वी चंपारण (बेतिया) के जिला अधिकारी कुंदन कुमार ने आठ मौत की पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि प्रथम दृष्टया इन लोगों की मौत जहरीली शराब सेवन करने से हुई है। बता दें कि बिहार में 15 दिन में जहरीली शराब पीने से 33 लोगों की मौत हो गई। विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने शराबबंदी से मौतों के लिए नीतीश सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। तेजस्वी ने ट्वीट कर कहा, जहरीली शराब से बिहार में दीवाली के दिन सरकार द्वारा 35 से अधिक लोग मारे गए। किसी की सनक से बिहार में कागजों पर शराबबंदी है अन्यथा खुली छूट है क्योंकि ब्लैक में मौज और लूट है।तेजस्वी ने नीतीश कुमार के पुराने बयान का वीडियो भी ट्वीट किया है जिसमें वो कहते नजर आ रहे हैं -गड़बड़ चीज पीएंगे, तो यही होगा। कितना मना करने के बाद भी पीते हैं। साल 2016 से हमने शराबबंदी को सख्ती से लागू किया हुआ है। लोगों का अधिकांश हिस्सा शराबबंदी के पक्ष में है।

सावधान रहे देश! एकता को खत्म कराने का काम करते हैं आरएसएस और भाजपाः राकेश टिकैत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राकेश टिकैत ने शनिवार को भाजपा और संघ पर बरसते हुए कहा कि ये देश में लोगों की एकता खत्म करने का प्रयास करते हैं। इनसे सावधान रहने की जरूरत है। राकेश टिकैत ने कहा, 'आरएसएस और भाजपा के लोग वैसे नहीं हैं, जैसे वे दिखाने का प्रयास करते हैं। लोगों को उनसे सावधान रहने की जरूरत है। ये लोग जहां भी जाते हैं, वहां लोगों की एकता को तोड़ने का काम करते हैं।' किसान आंदोलन का एक साल पूरा होने के बाद अब आगे की तैयारियों को लेकर पूछे जाने पर टिकैत ने कहा, 'यदि सरकार हमसे बातचीत करना चाहती है तो उसका स्वागत है। अन्यथा यह आंदोलन जस का तस जारी रहेगा। राकेश टिकैत ने कहा कि सरकार बात नहीं करती है तो फिर हम आंदोलन को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। सर्दियां आ रही हैं। हम किसानों से कहेंगे कि वे खाने और कपड़ों की व्यवस्था बढ़ा लें।

नवंबर में ही फ्री बांटे जाएंगे स्मार्टफोन और टैबलेट : सीएम योगी

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी सरकार युवाओं को स्मार्ट फोन और टैबलेट इसी माह बांटने जा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि इसके लिए जल्द ही सूची तैयार करा ली जाए। उन्होंने इसके साथ ही प्रदेश में निवेश कर रहीं औद्योगिक इकाइयों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से दिए जा रहे इंसेंटिव का भुगतान समय से कराने का निर्देश दिया है। ऐसे सभी मामलों की समीक्षा की जाए और इस संबंध में आ रही समस्याओं का शीघ्र समाधान करने का भी निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने शनिवार को टीम-9 के साथ बैठक में अधिकारियों से कहा कि प्रोक्योरेंट की कार्यवाही को तेजी से आगे बढ़ाया जाए, जिससे पात्र व्यक्तियों को समयबद्ध ढंग से राशन दिया जा सके। खाद्यान्न वितरण में किसी भी प्रकार की शिकायत न मिले। इसके लिए जीरो कम्पलेंट पर पहले से ही तैयारी सुनिश्चित कर ली जाए। जिन बच्चों को स्मार्टफोन और टैबलेट वितरित किए जाने हैं, उनकी सूची तैयार कर ली जाए, जिससे नवंबर माह के अंत तक स्मार्टफोन और टैबलेट वितरण की प्रक्रिया प्रारंभ की जा सके।मुख्यमंत्री ने कानपुर नगर में जीका वायरस से संक्रमित मरीजों की पुष्टि होने पर विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। प्रत्येक मरीज के स्वास्थ्य की सतत निगरानी की जाए। डेंगू जैसी बीमारियों से प्रभावित जिलों में रोगियों के उपचार के लिए सभी प्रबंध सुनिश्चित करें। सभी जिलों में स्वच्छता सेनिटाइजेशन और फॉगिंग का काम पूरी सक्रियता से चलाया जाए। निगरानी समितियों का पूरा सहयोग लिया जाए।उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देशों में कोविड के केस बढ़ रहे हैं। देश के कई राज्यों में भी कोरोना संक्रमण के मामलों में बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसे में अतिरिक्त सतर्कता और सावधानी बरतने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अन्य राज्यों से यूपी आ रहे लोगों की कोविड जांच जरूर कराई जाए। बस, रेलवे स्टेशन और एयरपोर्ट पर कोरोना टेस्ट कराए जाने पर विशेष बल दिया।

लिस्ट तैयार करने के दिए निर्देश

हरियाणा में लागू होगा रोजगार कानून 2020, स्थानीय नागरिकों को प्राइवेट नौकरी में मिलेगा 75% आरक्षण

चंडीगढ. (एजेंसी)। हरियाणा की मनोहर लाल खट्टर सरकार ने प्रदेश की जनता को बड़ा तोहफा दिया है। शनिवार को स्थानीय नागरिक रोजगार अधिनियम 2020 लागू कर दिया है। यह कानून 15 जनवरी 2022 से लागू होगा। इस कानून के तहत हरियाणा की जनता को प्राइवेट नौकरी में 75 फीसदी आरक्षण मिलेगा। हरियाणा सरकार की ओर से शनिवार को कहा गया कि स्थानीय नागरिक रोजगार अधिनियम 2020 प्रदेश में 15 जनवरी 2022 से लागू किया जाएगा। यह अधिनियम हरियाणा राज्य में स्थित विभिन्न कंपनियों, सोसायटी, ट्रस्ट और फर्मों में

50,000 रुपये की मासिक वेतन सीमा के साथ निजी नौकरियों में स्थानीय लोगों को 75 प्रतिशत आरक्षण देगा। राज्य श्रम विभाग की अधिसूचना के मुताबिक, "हरियाणा राज्य स्थानीय नागरिक रोजगार अधिनियम 2020 (2021 का 3) की धारा 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल द्वारा उक्त उप-अनुभागों के उद्देश्य के लिए 15 जनवरी 2022 से प्रभावी करते हैं।

अधिसूचना में लिखा गया है, ₹हरियाणा राज्य स्थानीय नागरिकों के रोजगार अधिनियम 2020 (2021 का 3) की धारा 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल एतद्द्वारा पंजीकरण के लिए सकल मासिक वेतन या मजदूरी के रूप में तीस हजार रुपये अधिसूचित करते हैं। 15 जनवरी 2022 से उक्त अधिनियम के शुरू होने की तारीख प्रभावी मानी जाएगी।

जिन्ना वाले बयान पर घिरने के बाद भी अड़े अखिलेश, कहा- लोग फिर से पढ़ें किताबें

लखनऊ (एजेंसी)। कुछ दिन पहले हरदोई दौरे पर पहुंचे अखिलेश यादव जिन्ना वाले बयान को लेकर बुरी तरह फंस गए हैं। भाजपा ने सपा अध्यक्ष को चारों तरफ से घेर लिया है। हालांकि अखिलेश यादव अब भी अपने बयान पर टिके हैं। भाई दूज पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा, मुझे संदर्भ क्यों साफ करना चाहिए? मैं चाहता हूं कि लोग फिर से किताबें पढ़ें। अखिलेश यादव ने यूपी चुनाव को जिक्र करते हुए कहा कि सीएम योगी आदित्यनाथ को 2022 में विधानसभा चुनाव नहीं लड़ना चाहिए क्योंकि वह इस बार हारने वाले हैं। महंगाई का जिक्र करते हुए सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव

ने कहा है कि 7 साल में पेट्रोल-डीजल के दाम 200 प्रतिशत से बढ़ाकर दस प्रतिशत घटानेवाली भाजपा सरकार का झूठा खेल जनता समझ गयी है। भाजपा सरकार पेट्रोल-डीजल के दाम जीरो भी कर दे तो भी जनता इन्हें चुनाव में जीरो कर देगी। अब सरकार का ये तर्क कहाँ गया कि पेट्रोल-डीजल के दाम पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है। अखिलेश यादव ने शनिवार को अपने सहयोगी दल जनवादी पार्टी सोशिलस्ट के कार्यालय के उद् घाटन के मौके पर पत्रकार वार्ता में यह बात कही। उन्होंने कहा कि वह सरकार बनने पर सम्राट पृथ्वीराज चौहान की विशाल प्रतिमा पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर लगवाएंगे। जिन्ना संबंधी बयान पर अखिलेश यादव से पूछा गया कि उन्होंने कहा कि मैं फिर कहूंगा, कि लोगों को फिर से इतिहास की किताबें पढ़नी चाहिए। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति कभी इतनी खराब नहीं रही जितनी आज है। पुलिस का उत्पीड़न बढ़ा है। कोई न्याय देने वाला नही है। उन्होंने कार्यकताओं को मतदान और मतगणना के समय सतर्क एवं सजग रहने की सीख देते हुए कहा कि भाजपा चुनाव से पहले कुछ भी कर सकती है। रंग बदलने, नाम बदलने और उद्घाटन का उद्घाटन और शिलान्यास का शिलान्यास करने के अलावा उसने कुछ नहीं किया है। भाजपा भीमराव अंबेडकर के सिद्धांत नहीं मान रही है। वह सब कुछ बेचना चाहती है। भाजपा सरकार मेट्रो का एक स्टेशन नहीं बना पाई है। मुख्यमंत्री जिस जेल का इटावा में उद्घाटन करने जा रहे हैं, वह सपा की देन है। भाजपा का एक ही काम है, बड़े पैमाने पर पैसे बांटकर वोट खरीदना। सीएम योगी के चुनाव लड़ने के ऐलान पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि सरकार जा रही हैं, बाबा इलेक्शन में ना उतरें। खुद के चुनाव लड़ने के सवाल पर कहा कि समाजवादी पार्टी तय करेगी, और मैदान में जब चुनाव होगाङ्क तो चुनाव में होंगे मैदान में। चुनाव लड़ने की बात कहेंगे तो सीट भी बतानी होगी। पिछड़ों की भी जातिगणना हो, कम से कम पता लगे कि कौन कितनी जाति का है।

खबर संक्षेप

भैया दूज पर बहनो एवं पेड़ों की रक्षा का लिया संकल्प

जसरा। भैया दूज भाई बहन के स्नेह के प्रतीक का पर्व हैं इस दिन बहने भाई के लम्बी उम्र की कामना के लिए विशेष रूप से पूजा अर्चना करती हैं उक्त बातें चनैनी ग्राम सभा के प्रधान धीतेश तिवारी ने शनिवार को ग्राम सभा चनैनी सहित क्षेत्र के अन्य जगहों पर भी बेटियों को तुलसी, अश्वगंधा, राजमोहिनी, पारिजात औषधियुक्त पौधे सहित अशोक, अर्जुन, आम आदि के पौधे किये। प्रधान धीतेश तिवारी ने पौधों एवं बहनों को समाज व राष्ट्र का कर्णधार की संज्ञा दिया। नारी के साथ हों रहें विभिन्न प्रकार के अपराधों को रोकना व्यक्ति की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। राष्ट्र एवम पर्यावरण के लिए अधिक से अधिक मात्रा वृक्षारोपण एवं संरक्षण के लिए प्रेरित भी किया। यहां पर काजल तिवारी, नूरजहाँ, रोशनी समेत सैकड़ों बेटियों को पौधा भेंट कर सम्मानित किया गया।

खेत में अजगर देख ग्रामीणों की लगी भीड़

सहसों। क्षेत्र के कसेरुआ कला गांव में नहर के बगल खेत में अजगर दिखाई देने से किसानों और ग्रामीणों में खलबली मच गई। जानकारी के अनुसार थाना सराय इनायत के पुलिस चौकी सहसों क्षेत्र के कसेरुआ कला गांव स्थित नहर की पटरी के बगल खेत में शुक्रवार को पूर्वाह्न लगभग 11 बजे खेत में काम करने गए किसान अजगर देख खलबली मच गई। देखते ही देखते किसानों एवं ग्रामीणों तथा राहगीरों की भीड़ इकट्ठा होने लगी लाठी-डंडों के साथ ग्रामीण मौके पर अजगर को देखने पहुंचे। उस वन्य जीव अजगर को कोई छति न पहुंचे सूचना पाकर सहसों चौकी की पुलिस मौके पर पहुंच गई। और ग्रामीणों के सहयोग से 5 फिट लम्बा लगभग 50 किलो वजन अजगर को पकड़ कर पुलिस चौकी पर लाया गया। तत्पश्चात सहसों पुलिस ने वन विभाग को सूचित कर अजगर को उनके हवाले कर दिया गया।

भईया दूज के मेले में सुजावन देव यमुना घाट पर हजारों श्रद्धालुओ ने लगाई मोक्ष की डुबकी

सुजावन देव घाट पर स्नान करते श्रद्धालु

भीटा देवरिया का ऐतिहासिक मेला में उमड़ी लोगों की भीड़

सुजावन देव मंदिर सहित मौत का कुंआ, झूला, डांस थियेटर रहा आकर्षण का केंद्र, क्षेत्रीय लोगों को साल भर रहता है इस मेले का इंतजार, खेतीबाड़ी-गृहस्थी की जमकर की खरीददारी

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। यमुनापार का घूरपुर के भीटा देवरिया का भईया दूज के दिन दो दिवसीय एतिहासिक व पौराणिक मेले के प्रथम दिन बुधवार को आस्था के केंद्र सुजावन देव यमुना घाट पर हजारों श्रद्धालुओ ने मोक्ष की डुबकी लगाई। और यमुना मां का पूजा अर्चना दीपदान कर यमुना धारा में स्थित सुजावन देव मंदिर जाकर भगवान शिव का दर्शन और जलाभिषेक कर लगाकर पुन्य लाभ लिया ।और मेले में खेतीबाड़ी-गृहस्थी की वस्तुएं जमकर खरीददारी की ।कोरोना संक्रमण काल को देखते हुए पिछले वर्ष प्रशासन ने ऐतिहासिक स्थल सुजावन देव घाट पर भैया दूज के दिन लगने वाले मेले के आयोजन की परमीशन नहीं दी थी ।सिर्फ स्नान करने वालों को कोविड -19 के नियम के तहत स्नान करने का ही निर्देश दिया था । लेकिन इस बार के मेले के आयोजन की प्रशासन ने हरी झंडी दिखा दी जिससे मेले में भारी संख्या में पहुंच मेले का लुत्फ उठाया।

किवदंतियो और धार्मिक मान्यता के अनुसार भैया दूज के दिन यमराज देव अपनी बहन यमुना से मिलने के लिए सुजावन देव यमुना तट पर ही आये थे ।काफी अर्से के बाद पहुंचे भाई यमराज की बहन यमुना ने जमकर आतिथ्य सत्कार किया बहन के आतिथ्य से खुश हो यमराज ने बहन यमुना को वर मांगने के लिए कहा ।यमुना ने जन कल्याण के भाई यमराज से यह वरदान मांगा कि आज के दिन जो यमुना स्नान करेगा वह आपके बंधन से मुक्त रहेगा और उसे मोक्ष प्राप्त हो। यमराज ने तथास्तु कहते हुए अंतर्धान हो गए ।तभी से लोग भैया दूज के दिन सुजावन देव यमुना घाट पर क्षेत्रीय सहित दूर दराज के भारी संख्या में लोग स्नान करने आते हैं। बता दें कि दीपावली के दिन भारी संख्या मे लोग चित्रकूट में कामतानाथ को दीपदान कर सुजावन देव यमुना घाट पर भैया दूज के दिन तक रुकते हैं। और भैया दूज के दिन स्नान कर लेगा अपने घर वापस जाते हैं।

सुबह से शाम तक स्नानार्थियों का रेला

बुधवार को भैया दूज के दिन भोर तीन बजे से सायंकाल तक सुजावन देव यमुना घाट पर स्नानार्थियों का रेला लगा रहा वहीं यमुना धारा में स्थित सुजावन देव मंदिर स्थित भगवान के दशनार्थियो का भी लाइन लगी रही। मंदिर के मुख्य पुजारी ज्ञानेंद्र गोस्वामी श्रद्धालुओ को व्यवस्थित रूप से दर्शन कराने में लगे रहे। महिला श्रद्धालु मंगलगीत के साथ यमुना का पूजा अर्चना कर आरती की। गरीब असहायों को दान देकर पुन्य कमाया।

सुजावन देव मंदिर में भक्तों की लगी रही कतारें

यमुना की धारा में पहाड़ी के उपर स्थित सुजावन देव मंदिर को भव्यतापूर्ण तरीके से सजाया गया था। मंदिर स्थित शिव भगवान की पूजा अर्चना के लिए भक्तों की कतारें लगी रही। यमुना स्नान के बाद श्रद्धालु मंदिर जाकर पूजा अर्चना किया। मंदिर के मुख्य पुजारी ज्ञानेंद्र भारथी पूरी व्यवस्था में लगे रहे।

खेतीबाड़ी- गृहस्थी की सामानो की जमकर हुई खरीददारी

मेले में खेतीबाड़ी से लेकर गृहस्थी सहित सौंदर्य प्रसाधन की आवश्यक उपयोग की वस्तुओं की जमकर खरीदारी की गई। मेला गृहस्थी और खेतीबाड़ी के सामानों के लिए भी प्रसिद्ध है क्षेत्रवासी इस मेले को लेकर साल भर इंतजार करते है। कई जनपदों की दुकानें आती है। घरेलू में कड़ाही ,चिमटा ,कलछुल ,तावा,खलबट्टा ,सूपा , सिल ,चकरी ,मूसर ,ओखली ,चलनी चाकू आदि व खेतीबारी में कुल्हाडि ,फावडा ,कुदाल,हंसिया खूरपा डलिया ,टोपा , आदि जो सहजता व सस्ते मूल्यों में उपलब्ध रहती है सुबह से रात तक खरीदारों की भीड़ जुटी रही ।स्थानीय लोगो के दूर दराज के

`खेतीबाड़ी और गृहस्थी का सामान खरीदते मेलार्थी

रिश्तेदार भी सुजावन देव यमुना तट में जानें के लिये घरो में पहुंच खरीददारी करते हैं।

घूरपुर- प्रतापपुर मार्ग पर दिन भर लगा रहा जाम

तीन किलोमीटर की दूरी मे फैली मेला जहां सुबह से रात तक खचाखच भरा रहा वहीं दिन भर घूरपुर बाजार से लेकर प्रतापपुर मार्ग पर जाम लगा रहा।

महिलाओ समेत डेढ़ दर्जन लोगों का उड़ाया पर्स

सुरक्षा व्यवस्था में खामियों की वजह से जेबकतरों की चांदी रही। स्नान घाट से लेकर मेले के बीच से महिलाओ समेत डेढ़ दर्जन लोगों का पर्स और बैग उच्चको ने उड़ा दिया। स्नान घाट पर एक भी पुलिस कर्मी तैनात नहीं दिखे हा अधिकारियो के निरीक्षण करने आते देख एक दो सिपाही भाग खड़े हो जाते थे। अधिकतर पुलिस कर्मी मेले के रास्ते में खड़े रहे। और जिसके वजह से स्नान घाट पर कांटी के सरोज देवी, अकोठा के विटोला, सुमन, करमा की अर्पिता, रेरा की मालती, चंपतपुर की गीता की बैग उड़ा दिया गया। वहीं कौंधियारा के मनोज श्रीवास्तव, बारा के शिलवंत, बादलगंज के मनोज, नारीबारी के दशरथ मांझी सहित आदि का मेले के बीच से पर्स उड़ा दिया गया। एक दूकान से एक महिला चोर को दुकानदार ने रंगेहाथ पकड़ मारपीट कर पुलिस को सौंप दिया।

अधिकारियो ने किया निरीक्षण

एसडीएम बारा सौम्या गुरुरानी, सीओ करछना राजेश कुमार यादव, सुबह मेले का निरीक्षण किए। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस, पीएसी, रेलवे पुलिस,जल पुलिस तैनात रही

अव्यवस्था का रहा आलम

स्नान घाट से लेकर मेला के बीच तक अव्यवस्था का आलम रहा। स्नान घाट पर जहां चारो तरफ कीचड़ था तो वहीं महिलाओ को वस्त्र बदलने के लिए इतनी बड़ी भीड़ में पालीथीन के बनाए गए महज कमरे में दो धराशाई हो गया था महिलाओ को वस्त्र बदलने के लिए शर्मसार होना पड़ा। पेयजल की भी मुक्कमल व्यवस्था नहीं दिखी। मेले में चारों ओर धूल उड़ रहा था।

मौत का कुंआ, झूला, डांस थियेटर रहा आकर्षण का केंद्र

श्रद्धालुओं को जहां आस्था का केंद्र सुजावन देव मंदिर आकर्षण का केंद्र रहा तो वहीं मेले में आए युवकों के लिए मौत का कुंआ, झूला, आधा दर्जन डांस थियेटर, जादूगर आकर्षण का केंद्र बने रहे। सुबह से रात तक युवकों की भीड़ लगी रहे और लुत्फ उठाते रहे। मेले में विभिन्न प्रकार की स्वादिष्ट व्यंजनो का भी मेलार्थियों ने चख लुफ्त उठाया।

जसरा में धूम-धाम से मनाया गया गोवर्धन पर्व

जसरा। विकास खंड जसरा के तातारगंज गांव में गोवर्धन पर्व बड़े धूमधाम से मनाया गया। गोवर्धन पर्वत की झांकी सजाकर पूरे गांव में घुमाया गया। इस दिन गोवर्धन पर्वत और भगवान श्री कृष्ण की पूजा का विधान है। इस दिन गायों की विशेष श्रृंगार करने उनकी पूजा भी की जाती है। लोग अपने घरों में गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाते हैं और फिर फूल, धूप, दीप आदि से उसकी पूजा करते हैं। इस दिन घरों में तरह-तरह के पकवान भी मनाए जाते हैं। तातारगंज में भगवान शिव के मंदिर से गोवर्धन पर्वत की झांकी सजाकर गांव के गली मुहल्लों में घुमाया गया। शोभा यात्रा में अगल बगल गांवों के सैकड़ों लोग मौजूद रहे। जिसमें श्याम बिहारी द्विवेदी, राजाबाबू पाठक,कृष्णा प्रसाद दुबे,कमला कान्त दुबे, राजेन्द्र प्रसाद दुबे, मुन्नू दुबे,अशोक तिवारी,ब्रह्म दत्त पाठक,धीरेंद्र मिश्र, गुड्डू मिश्रा, मनीष, दिवाकर त्रिपाठी, सुनील मिश्र,रमेश पांडेय,चन्द्रशेखर पांडेय सहित सैकड़ो महिला पुरुष मौजूद रहे।

जसरा में गोवर्धन पूजा करतीं महिला भक्त

रुक्मणी विवाह का प्रसंग सुन भक्त श्रोता जन हुए मंत्रमुग्ध

कुंजल वैश्य का पूरा गांव में चल रही सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा कहते वृंदावन से आये व्यास शैलेन्द्र जी महाराज व उपस्थित श्रोतागण।

अखंड भारत संदेश

बाल कृष्ण भगवान की कलाकारों की ओर से आकर्षक व सुंदर झांकी भी निकाली गई

करछना। तहसील क्षेत्र के कुंजल वैश्य का पूरा गांव में चल रही सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा में कथा श्रवण करने के लिए भक्त श्रोता जनों की भीड़ जुट रही है । भक्त श्रोता जन कथा सुन भाव विभोर हो रहे हैं। कथावाचक के रूप में व्यासपीठ पर विराजमान श्री धाम वृंदावन से पधारे शैलेंद्र जी महाराज ने अपने मुखारविंद से अमृतमयीवाणी की सुमधुर वर्षा कर- के भक्त श्रोता जनों को कथा का रसपान करा रहे हैं। उन्होंने कथा श्रवण पर विशेष बल देते हुए बताया कि कथा सुनने से मानव की सारी व्यथा दूर हो जाती है। और कहा कि भागवत के रसपान से हीमोक्ष की प्राप्ति संभव है। उन्होंने कथा के छठे दिन शनिवार को बाल कृष्ण भगवान की अद्भुत लीलाओं का बखान करते हुए रुक्मणी विवाह का प्रसंग सुनाकर भक्त श्रोता जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कथा के मुख्य श्रोता यजमान एडवोकेट जनार्दन प्रसाद शुक्ला व पत्नी सुशीला देवी ने कथा व्यास सहित पूज्य कुल गुरु के अलावा सभी आचार्य जनों का माल्यार्पण कर स्वागत व अभिनंदन किया। कथा के संयोजक व व्यवस्थापक भाजपा किसान मोर्चा यमुनापार के जिला उपाध्यक्ष राजेश कुमार शुक्ल ने कथा श्रवण के लिए आए सभी भक्त जनों के प्रति आभार जताया। इस मौके पर अनिल कुमार कुमार शुक्ला विमल कुमार शुक्ल आलोक कुमार शुक्ल संतोष कुमार मिश्र कमला शंकर तिवारी दिवाकर दत्त शुक्ल उज्जवल अभिनव शोभित आदि लोग मौजूद रहे।

भाकियू ने भरी हुंकारःमौजूदा सरकार में किसानों, मजदूरों का जमकर शोषण

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। मौजूदा सरकार द्वारा किसान व मजदूरों का जमकर शोषण किया जा रहा है। उन्हें शिक्षा से वंचित करने की साजिश रची जा रही है। इससे ज्यादा अच्छा किसानों के लिए अंग्रेजी हुकूमत थी। उक्त बातें शंकरगढ़ के रामगढ़ धाम में आयोजित किसान महापंचायत में भारतीय किसान यूनियन टिकैत ग्रुप के जिलाध्यक्ष अनुज सिंह ने कही।

उन्होंने कहा कि किसान अपनी जायज मांग को लेकर बीते एक साल से धरना प्रदर्शन कर रहा है, लेकिन किसान विरोधी यह सरकार किसानों से बातचीत करने तक के लिए समय नहीं निकाल पा रही है। यही नहीं बॉर्डर पर धरने पर बैठे अन्नदाताओं के ऊपर तमाम तरह के आरोप लगाकर जैसे उन्हें खालिस्तानी कहा जाता है, कभी पाकिस्तान का समर्थक कहा जाता है ऐसे ही घृणित शब्दों का प्रयोग कर उन्हें बदनाम करने की साजिश रची जा रही है। उन्होंने कहा हमारी लड़ाई अब तक तीन कृषि कानून को समाप्त करने तथा एमएसपी का गारंटी कानून बनाने की थी। लेकिन अब हमारी लड़ाई लुटेरा समाज भगाओ, कमेरा समाज लाओ की हो गई है। श्री सिंह ने कहा कि आज 11 महीने से किसानों का आंदोलन शुरू है। लेकिन सरकार किसानों की नहीं सुन रही है। उन्होंने कहा इतनी लंबा आंदोलन देश की आजादी में भी नहीं चला था। उन्होंने कहा कि हमारी यह लड़ाई अब जन आंदोलन बन चुकी है। श्री सिंह ने इस जन आंदोलन में युवाओं से बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करने का अनुरोध किया। क्षेत्रीय किसानों द्वारा बिजली, पानी तथा पराली की समस्या उठाई गई तो जिला अध्यक्ष अनुज सिंह ने कहा कि किसान पराली अपने खेत में ही जल आएगा। किसी भी थानेदार द्वारा यदि किसी किसान के ऊपर पराली जलाने का मुकदमा कायम किया जाता है, तो उस पूरे गांव के किसान अपनी पशुओं को लेकर संबंधित थाने में घेराव करेंगे। उन्होंने कहा यदि किसी किसान की बिजली काटी जाएगी तो सबसे पहले बिजली विभाग के उस कर्मचारी की बिजली किसान संगठन काटेगा। उन्होंने उपस्थित लोगों से संगठित होकर किसान आंदोलन में भाग लेने की अपील करते हुए आने वाले आगामी विधानसभा चुनाव में किसान विरोधी सरकार को उखाड़ फेंकने की अपील की ।महापंचायत में बोलते हुए किसान यूनियन के जिला उपाध्यक्ष संजय यादव उपस्थित लोगों से कहा कि आगामी चुनाव में किसान विरोधियों को गांव में घुसने नहीं दिया जाएगा उन्होंने कहा जो हमारा हित नहीं करेगा हम उसको किसी भी सूरत में ना तो अपने गांव में घुसने देंगे नाही विधानसभा में पहुंचने देंगे। संचालन कर रहे भारतीय किसान यूनियन के तहसील अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह एडवोकेट ने कहा की आगामी 18 नवंबर को जिले पर यूनियन द्वारा किसान महापंचायत का आयोजन किया गया है। जिसमें पराली, बिजली, पानी आदि पर विस्तार से चर्चा होगी तथा जिला प्रशासन को अवगत करा दिया जाएगा। किसान महापंचायत में प्रमुख रूप से राम कैलाश कुशवाहा, कबीरा समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वजीत सिंह एडवोकेट, प्यारे लाल पटेल, राजेंद्र पटेल, आशा देवी, अवध राज सिंह, जालंधर पटेल, प्रभाष सिंह, महेश सिंह, विजय सिंह, लाल सिंह, जीतलाल, गणेश आदिवासी, केके सिंह, बृजेंद्र सिंह, भारत सिंह आदि लोगों ने अपने विचार रखें। कार्यक्रम की अध्यक्षता छेदीलाल सिंह ने की।

भाकियू नेता किसानों को सम्बोधित करते

न्यूज झरोखा

एक हजार दिये से रोशन हुआ सरायममरेज थाना

प्रतापपुर। दीपावली के अवसर पर सरायममरेज परिसर में कुम्हारों के हांथों बने दियों से पूरा थाना प्रांगण जगमगा उठा ।थानाध्यक्ष अमित राय के नेतृत्व में समस्त थाना स्टाफ ने मिलकर 1000 मिट्टी के दिये जलाकर पूरा थाना जगमग कर दिया।

चुनाव की तैयारियों को लेकर मनैया गांव पहुंचे कुंवर रेवती रमण

करछना। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर मनैया गांव पहुंचे राज्य सभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने कार्यकताओं के साथ बैठक कर रणनीति पर चर्चा की उस दौरान उन्होंने भाजपा सरकार में महंगाई को लेकर जिम्मेदार ठहराया ।उन्होंने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में सपा की सरकार बनने पर क्षेत्र के विकास के साथ-साथ युवाओं को रोजगार देने का काम करेगी सपा सरकार, कार्यकताओं को सपा सरकार हमेशा सम्मान किया है, और किसानों, नौजवानों, युवाओं गरीबों का सभी सपा सरकार नें पिछली सरकार में लैपटॉप, बेरोजगारी भत्ता, महिलाओ को पेंशन देने का काम किया है जिसे भाजपा सरकार नें बंद कर दिया है, समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर सभी बंद की गई योजनाओं को लागू किया जाएगा और गरीबों, व महिलाओं को रोजगार देने का काम करेगी सपा सरकार ।उन्होंने कार्यकताओं को अभी से चुनाव की तैयारियों में जुट जाने की अपील करते हुए कार्यकताओं को संबोधित किया ।उनके साथ में करछना ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी, यज्ञदंत त्रिपाठी, पूर्व प्रधान मनैया सहित कयी गणमान्य लोग मौजूद रहे ।

गरीबों की मदद ही सबसे बड़ा पुण्यकार्य : एसओ मनीष त्रिपाठी

जसरा। हर घर दीप जले हर घर रोशन हो के तहत तीसरे दिन का कार्यक्रम प्रयाग संगम सेवा संस्थान द्वारा चिल्ला गौहानी में सम्पन्न हुआ और कार्यक्रम का समापन भी हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रहे लालापुर थानाध्यक्ष मनीष त्रिपाठी , विशिष्ट अतिथि जिलापंचायत सदस्य बृजेश यादव एवं ग्राम पंचायत अधिकारी अमित शुक्ला ।आज के कार्यक्रम की शुरूआत भोलेनाथ के मंदिर में मुख्य अतिथि द्वारा पूजा पाठ करने के बाद शुरू की गयी, जिसमे काफी लोगो के घर को रोशन करने के लिए स्वदेशी वस्तुएँ दी गयी, और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि द्वारा टीम की काफी सराहना की गयी और बोले कि मै इस टीम के साथ सदैव खड़ा रहूँगा और समाज हित में सदैव सहयोग करूँगा ।कार्यक्रम में मौजूद संस्थान के सदस्य में काफी संख्या में युवा उपस्थित रहे जिसमे, अध्यक्ष सुधांशु मिश्र, यमुनापार अध्यक्ष रावेन्द्र तिवारी चामू, रावेन्द्र तिवारी, शनी शुक्ला, आलोक पाठक, आशीष सोनकर,पंचम पटेल, सूरज यादव, अविनाश त्रिपाठी, अभिषेक शुक्ला, बचानी पाठक, अजय द्विवेदी, शुभम द्विवेदी, शेखर यादव, अजय मिश्र, आदर्श मिश्र अंकित मिश्र, विवेक पाण्डेय, अविनाश द्विवेदी, विनोद शाहू, राजीव द्विवेदी, शांतनु मिश्र, नीरज पाण्डेय, नीरज केशरवानी आदि उपस्थित रहे।

35 फीट ऊंचा व 5 मीटर लंबा लगाया गया भगवा ध्वज

प्रतापपुर। खखैचा ग्राम में गहरपुर के चौराहे पर पूरे ब्लाक में सबसे बड़ा भगवा ध्वज लगाया गया ।यह उत्तम कार्य गांव के ही युवा पंडित आलोक द्विवेदी एवं दिलीप दुबे के सुझाव एवं अथक प्रयास से तथा गांव वालों के सहयोग से संपन्न हुआ ।साथ ही दीपदान करके इस चौराहे का नामकरण श्री परशुराम चौराहा किया गया ।इस अवसर पर अखिलेश पांडेय, आचार्य धीरज द्विवेदी "याज्ञिक" संदीप दुबे, सिद्धार्थ सिंह, आशुतोष तिवारी, विपिन मिश्र, बालाजी मिश्र, बबलू प्रजापति, रमेश भारतिया, टार्जन सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

गरीब एवम असहाय की मदद सबसे पुण्यकार्य : ए. पी. सिंह

जसरा। मानव हित एवम इंसानियत हेतु उठाये गये कदम समाज एवम राष्ट्र को बहुत बड़ा संबल प्रदान करते हैं ।किसी भी त्यौहार पर असहाय एवम जरूरतमंद लोगों की मदद करने से व्यक्ति के धन, यश के साथ ही आत्मिक सुकून व असली खुशी प्राप्त होती हैं उक्त नेक एवम प्रभावशाली उदगार सेठ राम अभिलाष इंटर कालेज के प्रबंधक ए. पी. सिंह के हैं। इस अवसर पर प्रबंधक श्री पटेल ने समाज के सभी सम्पन्न लोगों से समाज में मौजूद जरूरमंद एवम निर्धन लोगों की मदद के लिए भी प्रेरित किये ।दीपोत्सव के अवसर ग्रामीणों में वस्त्र, खाद्यान्न सहित अनेकों सामग्री उपहार स्वरूप भेंट प्रदान किये। इस अवसर पर श्री सिंह ने बच्चों को कापी, पेन के साथ आर्थिक सहयोग भी प्रदान किये। उक्त अवसर पर एस. आर. सिंह ने उपस्थित बच्चों को पटाखों एवम अन्य ज्वलनशील वस्तुओं से दूर रहकर पर्यावरण के हित में त्यौहार मनाने के लिए भी प्रोत्साहित किये ।सविता सिंह, रेनू आदि लोग उपस्थित रहें।

जसरा में धूमधाम से मनाया गया दीपावली का पर्व

जसरा ।विकास खंड जसरा में गुरुवार को दीपोत्सव का त्योहार दीपावली बहुत धूम धाम से मनाई गई। ब्यवसाइयों ने लक्ष्मी गणेश जी के पूजन के साथ ही आचार्य द्वारा बही खाता का भी पूजन किया। जसरा बाजार सहित आसपास के गांवों तातारगंज, बुदांवा, पचखरा, परसरा, रेरा, गड़रा,टिकरी ता०कंजासा, खटंगिया,मरुआ, दौना, अमरेहा सहित कई गांवों में पुरोहितों ने अपने अपने यजमानों के घर लक्ष्मी गणेश के साथ ही खाताबही का पूजन अर्चन कराया और ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान दक्षिणा किया। ब्यवसायी राजेश जायसवाल ने पूजन के बाद 21 ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा दिया।

खबर संक्षेप

त्योहार पर स्कूटी सवार ने छीन लिया मंगलसूत्र

प्रयागराज। दिवाली के दूसरे दिन स्कूटी सवार दो युवकों ने बताशा मंडी में एक महिला का मंगलसूत्र छीन लिया। वारदात अंजाम देकर लुटेरे भाग निकले। सीसीटीवी फुटेज में उनका हुलिया कैद है। कोतवाली पुलिस जांच कर रही है।खुल्दाबाद के मनीष गुप्ता की पत्नी रोली गुप्ता शुक्रवार को परिजनों के साथ ई-रिक्शा से कीडगंज आ रही थी। रास्ते में बताशा मंडी से सुलाकी चौराहा के बीच स्कूटी से दो युवक पहुंचे और झपट्टा मारकर रोली के गले से मंगलसूत्र छीन लिया। महिला ने शोर मचाया लेकिन स्कूटी लेकर दोनों युवक भाग निकले। आसपास के घरों में लगे कैमरों की छानबीन की गई। घटनास्थल से कुछ दूर एक घर में लगे सीसीटीवी फुटेज में स्कूटी सवार दोनों युवक नजर आए हैं। इसकी मदद से पुलिस उनकी तलाश कर रही है। फुटेज में दिखे युवक कम उम्र के बताए जा रहे हैं। सफेद रंग की स्कूटी है। एक युवक ने मास्क लगाया है। उसका चेहरा स्पष्ट है। पुलिस का कहना है कि गाड़ी के नंबर से उन्हें ट्रेस किया जा रहा है।

होटल के कमरे में मिली मैनेजर की लाश, शरीर पर नहीं थे कपड़े

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सिविल लाइंस में हाईकोर्ट चौराहे के पास स्थित एक होटल में शनिवार दिन में ऑपरेशनल मैनेजर शरन घटानी की लाश उसके कमरे से मिली। मैनेजर का शव बिना कपड़ों के बिस्तर पर पड़ा था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उसके घर वालों को सूचना दी गई है। जाहिरा तौर पर शरीर पर कोई निशान नहीं मिले। पुलिस का कहना है कि घर वालों के आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। मूल रूप से दार्जिलिंग का रहने वाला शरन घटानी (45) हाईकोर्ट चौराहे के पास स्थित होटल में ऑपरेशन मैनेजर था। शनिवार को दिन में वह अपने कमरे से काफी देर तक नहीं निकला तो मैनेजर में वेटर को भेजा। काफी देर तक खटखटाने के बाद भी अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो होटल मालिक योगेश गोयल और पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस के आने के बाद दरवाजा तोड़ा गया। अंदर शरन का शव बिना कपड़ों के पकड़ा था।शरीर अकड़ गया था। बगल में शराब की बोतल और मुर्गा भी पड़ा था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शरन के परिवार वाले कोलकाता में कहीं काम करते हैं। उन्हें सूचना दे दी गई है। वे प्रयागराज के लिए चल दिए हैं। शरन ने होटल एक महीने पहले दोबारा ज्वाइन किया था। दो साल पहले भी वह इसी होटल में मैनेजर था लेकिन छोड़कर कहीं और काम करने चला गया था। इंस्पेक्टर जेपी शाही ने बताया कि शरीर में जाहिरा तौर पर चोट के कोई निशान नहीं हैं। घर वालों के आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

दीप पर्व बाद घाटों पर पूजन सामग्री का अंबार

प्रयागराज। दीप पर्व के बाद गंगा के घाटों पर पूजन सामग्री का अंबार लग गया है। लोग पूजन सामग्री गंगा में प्रवाहित कर रहे हैं। भाई दूज पर्व के दिन गंगा विचार मंच के गंगा सेवकों ने दशाश्वमेध और रसूलाबाद घाट की सफाई की। दोनों घाटों की सफाई के दौरान गंगा में प्रवाहित एक कुंतल से अधिक पूजन सामग्री मिली। मंच के सदस्यों ने दोनों घाटों की सफाई कर पूजन सामग्री के साथ पॉलिथीन गंगा से निकाली। स्वच्छता अभियान के बाद गंगा विचार मंच की प्रदेश मंत्री अनामिका चौधरी ने बताया कि गंगा में पूजन सामग्री प्रवाहित करने आए लोगों को जागरुक भी किया गया। घाट के सफाई अभियान में सुनील निषाद, जितेंद्र कुमार शुक्ला, अमन कुमार, सोनू निषाद, सुधीर निषाद, आकाश निषाद, राजकुमार निषाद, नरेशचंद्र कश्यप, सुजीत कुमार, आदि रहे।

चाँदोपारा की बेटी ने नीट की परीक्षा पास कर किया क्षेत्र का नाम रोशन

संघर्ष कभी बेकार नहीं जाती-अंजली कुशवाहा, समबध्द तरीके से लगातार अध्ययन करना अंजली की सफलता का मूल मंत्र बना

अखंड भारत संदेश

उतरांव। मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है।एक सायर द्वारा कही गई उक्त पंक्तियां आर्मी रिटायर्ड श्याम कुशवाहा की बेटी अंजली कुशवाहा पर बखूबी बयां करती हैं।जिसका नीट की परीक्षा पास करने पर क्षेत्र में खुशी का माहौल है।प्रयागराज जिले के हण्डिया तहसील के थाना उतरांव अंतर्गत चाँदोपारा गांव निवासी अंजली कुशवाहा ने नीट परीक्षा पास कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उनकी इस सफलता पर बड़ी संख्या में लोग उन्हें बधाई दे रहे हैं। अंजली कुशवाहा के पिता श्याम कृष्ण कुशवाहा जो आर्मी में मेजर के पद से रिटायर्ड हैं। ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी अंजली ने नीट की परीक्षा में आल इंडिया 8410 तथा कटेगरी में 3115 वां रैंक हासिल किया है। साधारण परिवार की इस बेटी ने यह सफलता प्राप्त कर गांव और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। अंजली की प्राथमिक शिक्षा गांव में ही हुई। हाईस्कूल की परीक्षा आर्मी स्कूल पंजाब तथा इंटरमीडिएट आर्मी स्कूल प्रयागराज से अच्छे अंकों से उत्तीर्ण किया। पिता श्याम कृष्ण कुशवाहा आर्मी में मेजर सूबेदार पद से रिटायर्ड हैं तथा माता संगीता मौर्या गृहणी हैं।अंजली के तीन बहन तथा एक भाई है।अपने माता पिता व परिवार के निर्देशन एवं सहयोग से अंजली को यह सफलता मिली है।अपने सफलता का श्रेय वह अपनी माता पिता सहित परिवार और शुभचिंतकों को देते हुए कहती हैं कि सभी की दुआओं से उन्हें यह सफलता मिली है। सेल्फ स्टडी कर अंजली कुशवाहा ने यह परीक्षा पास की है जो ग्रामीण क्षेत्र में गौरव व बड़ी उपलब्धि दी है। उन्होंने छात्रों के लिए कहा कि यदि किसी भी चीज को मेहनत व लगन से पाने की लालसा हो तो वह जरूर मिलेगी। संघर्ष कभी बेकार नहीं जाती। अंजलि चिकित्सक बनकर लोगों की सेवा करना चाहती हैं। परिवार जनों ने मेधावी अंजली कुशवाहा को मिठाई खिलाकर फूल मालाओं से अभिनंदन किया।

विधायक के नेतृत्व में हुआ जलाभिषेक

अखंड भारत संदेश

सहसों। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा केदारनाथ धाम उत्तराखंड में शंकराचार्य जी के मूर्ति के लोकार्पण के अवसर पर देशभर के 12 ज्योतिर्लिंग पर शिवजी का जलाभिषेक किया गया। इसी प्रकार फूलपुर विधायक प्रवीण पटेल द्वारा ग्राम सभा देवनहरी के रामनाथ पट्टी में स्थित प्राचीन शिवालय पर हुए अभिषेक मुख्य यजमान के रूप रहे। कार्यक्रम के संयोजक मंडल महामंत्री पवन कुमार शुक्ल थे जलाभिषेक के साथ प्रधानमंत्री के द्वारा उत्तराखंड केदारनाथ धाम में हो रहे कार्यक्रम का सीधा प्रसारण एलईडी टीवी पर सैकड़ों कार्यकताओं के साथ देखा गया। जिसमें उत्तराखंड के मुख्यमंत्री के द्वारा किए गए कार्यों का बखान एवं प्रधानमंत्री के द्वारा केदार धाम की महिमा का बखान किया गया। प्रधानमंत्री ने बताया कि शंकराचार्य जी ने जिस प्रकार से चार धाम की यात्रा एवं चार पीठों का निर्माण किया वह देश के गौरव के प्रतीक है। जो भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को एकजुट करने का एक माध्यम साबित हुआ उसी परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए आज प्रधानमंत्री ने शंकराचार्य जी के प्रतिमा का अनावरण किया और संकल्प किया कि उत्तराखंड का पानी और उसकी जवानी दोनों उत्तराखंड के काम आएगी। इसी क्रम में शनिवार को क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल ने शिवालय पर जलाभिषेक किया तथा आरती पूजन के पश्चात प्रसाद वितरण का किया गया। और टीवी पर इसका सीधा प्रसारण हुआ इसमें सैकड़ों कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राकेश बहादुर सिंह, पूर्व मंडल अध्यक्ष राकेश मिश्रा, वीरेन्द्र बहादुर सिंह, फूलपुर ब्लॉक प्रमुख विपेन्द्र सिंह पटेल, अनिल कुमार सरोज, राज धर द्विवेदी, नरेंद्र कुशवाहा, डॉ राजेंद्र वर्मा, पुष्कर सिंह, संदीप दुबे, मनोज तिवारी, आलोक गुप्ता, सुरेंद्र मौर्य, गुलाब तिवारी, सत्यम हिंदू , विमल मिश्रा, सूर्यमणि पांडे, संजय बाली, शुभम शुक्ला, लक्ष्मी कांत मिश्र, अतुल कुमार मिश्र, शकुंतला शुक्ला, विजय बहादुर पाल, सुभाष पाल, राजेश पाल व अन्य उपस्थित रहे।

असिस्टेंट प्रोफेसर की मदद में नपेंगे दो और पुलिस वाले

प्रयागराज। दुष्कर्म पीड़िता के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने और चार्जशीट लगाने के मामले में तत्कालीन इंस्पेक्टर और दरोगा के खिलाफ रिपोर्ट भेजी गई है। दरअसल असिस्टेंट प्रोफेसर ने पीड़िता के खिलाफ कालेज में घुसकर मारपीट और धमकी देने का मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस ने इसी मामले में पीड़िता के खिलाफ चार्जशीट लगा दी थी। एसपी सिटी ने इस मामले की जांच की और इंस्पेक्टर व दरोगा के खिलाफ रिपोर्ट भेज दी। दुष्कर्म केस में गवाह को फर्जी तरीके से जेल भेजने के मामले की जांच शुरू हुई तो कई पुलिस वालों के खिलाफ कार्रवाई हो गई थी। इस मामले में सर्विलांस प्रभारी संजय सिंह यादव, हंडिया इंस्पेक्टर बृजेश सिंह और नारकोटिक्स प्रभारी महावीर सिंह हटाकर जोनल दंगा नियंत्रण इकाई में तैनात कर दिया गया था। दरअसल तीनों की मिलीभगत से दुष्कर्म केस के गवाह को फर्जी मामले में जेल भेज दिया गया था। इस पूरे मामले की जांच एसपी गंगापार अभिषेक अग्रवाल को सौंपी गई थी।पीड़िता ने यह भी शिकायत की थी कि उसके खिलाफ फर्जी मुकदमा दर्ज कराया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक पीड़िता ने कालेज में घुसकर असिस्टेंट प्रोफेसर के साथ मारपीट और धमकी दी थी। विवेचना दरोगा बलवंत यादव ने की थी।

सपा की साइकिल रैली को ब्लॉक प्रमुख ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

सपा की साइकिल रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते ब्लाक प्रमुख।

अखंड भारत संदेश

जसरा। समाजवादी पार्टी लोहिया वाहनी के प्रदेश अध्यक्ष के निर्देश पर सभी विधान सभा में साइकिल रैली का आयोजन किया गया। जिसमें साइकिल रैली विधान सभा अध्यक्ष के नेतृत्व में जसरा ब्लॉक से रैली निकाल कर सुजौना तक चलाया गया। रैली को ब्लॉक प्रमुख जसरा अजीत सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

समाजवादी पार्टी के प्रयागराज जिलाध्यक्ष योगेश चन्द्र यादव ने कार्यकताओं से कहा कि अब समय आ गया है, जब वर्तमान सरकार द्वारा महंगाई,बेरोजगारी आदि का बदला बारा क्षेत्र से अपना विधायक चुनकर भेजना होगा। वहीं ब्लॉक प्रमुख जसरा अजीत सिंह ने सपा कार्यकताओं से सपा कार्यकाल में किये गये कार्यों को जन जन तक पहुंचाने का काम करने को कहा है और वर्तमान सरकार में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी को बताते हुए उत्तर प्रदेश में सपा की सरकार बनाने की अपील किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से लोहिया वाहनी के जिलाध्यक्ष नवीन यादव,मनोज सिंह, बृजेश यादव जिला पंचायत सदस्य,कृपा शंकर बिन्द, विधान सभा अध्यक्ष भागीरथी बिन्द, दिवाकर सिंह, रमाकांत यादव, हरिकेश यादव,राहुल पांडेय, अनुज पाल, विकास बारा,मुलायम, विनय, मान सिंह,जय सिंह, गौरीशंकर, अतुल विश्वकर्मा, आदि सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बसपा मुख्य सेक्टर प्रभारी ने ली समीक्षा बैठक दिए निर्देश

प्रयागराज। बहुजन समाज पार्टी के मुख्य सेक्टर प्रभारी ने शनिवार को जनपद के सेक्टर प्रभारियों व विधान सभा अध्यक्षो की एक आपात बैठक लेकर संगठन की गतिविधियों की समीक्षा की। बहुजन समाज पार्टी के वरिष्ठ नेता व मिजार्पुर व प्रयागराज मण्डल के मुख्य सेक्टर प्रभारी अशोक गौतम ने जनपद के विधानसभा अध्यक्षो व सेक्टर प्रभारी को मम्फोर्डगंज स्थित कार्यालय में सम्बोधित करते हुए कहा कि यथा शीघ्र बूथों के गठन का कार्य पूरा करे। किसी प्रकार की निष्क्रियता उचित नही है। उन्होंने सभी विधानसभाओं के लिए विधानसभावार सेक्टर प्रभारियों को जिम्मेदारी सौपी। उक्त समीक्षा बैठक में बाबूलाल भंवरा, राजू गौतम, गुलाब चमार,जगन्नाथ पाल, अतुल कुमार टीटू ,सारदा प्रसाद, एडवोकेट रवींद्र कुमार गांधी, हरिश्चंद्र कुरील जिलाध्यक्ष अभिषेक गौतम सहित विधानसभा के अध्यक्ष एवं जिम्मेदार पदाधिकारी उपस्थित रहे।

फिल्म शूटिंग की लोकेशन देखने पहुँचे अभिनेता और निर्देशक

प्रतापपुर। बॉलीवुड एवं हॉलीवुड फिल्म अभिनेता इमरान हसनी और राइटर,निर्देशक धीरज मिश्रा शनिवार को उग्रसेनपुर में 8 नवंबर को होने वाली शूटिंग को लेकर चयनित लोकेशन उग्रसेनपुर में संतोष सिंह की कोठी को को देखने पहुँचे अभिनेता ने पूर्वजो की विरासत को संभाल और संजोकर रखने के लिए संतोष सिंह की तारीफ किया।इसके अलावा तरहठी में सुशील मिश्रा के यहाँ बने स्वीमिंग पुल,भोगवारा में श्रीविश्वनाथ मंदिर,जिला पंचायत इंटर कॉलेज सहित शूटिंग के माफिक कई अन्य स्थानों का भ्रमण किया।इस दौरान निर्देशक धीरज मिश्रा के स्थानीय मीडिया प्रभारी सूर्या यादव,सीपी यादव राजसोनी संतोष सिंह,जय प्रकाश एवं शूटिंग टीम से जुड़े लोग भी रहे।इमरान हसनी के आने की सूचना फैलते ही उनके चाहने वाले पहुँच गए।लोगो ने उनके साथ सेल्फी ली।

गंगा उत्सव का समापन, आयोजित हुई नौकायान प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत देश में अविरत तीन दिवसीय गंगा उत्सव आयोजन किया गया जिसमें गंगा उत्सव के तीसरे दिवस पर नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज ,नमामि गंगे परियोजना और नई उम्मीद सेवा समिति के संयुक्त तत्वाधान में चाका प्रखंड के अरैल घाट पर नौकायान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ' इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में प्रखंड विकास अधिकारी मौजूद रहे एवं चाका ग्राम पंचायत के प्रधान व सचिव की उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन नेहरू युवा केंद्र के निर्मल कांत पांडे द्वारा किया गया ।नौकायान प्रतियोगिता में युवाओं ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया 'कार्यक्रम जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे व डीपीओ एषा सिंह के मार्गदर्शन में संयोजित हुआ 'नौका प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया ' नौका प्रतियोगिता में प्रथम स्थान विशाल कुमार निषाद, द्वितीय स्थान संदीप और तृतीय स्थान विवेक कुमार निषाद को प्राप्त हुआ इस कार्यक्रम में 1001 दीपक भी जलाकर गंगा घाट को भव्य बनाया गया और गंगा आरती भी कि गई' इसी कड़ी में जिला गंगा समिति द्वारा गंगा उत्सव संगम तट पर पौधरोपण किया गया जिसमें एसडीओ संजय शर्मा, रेंजर दुबे जी, जिला परियोजना अधिकारी एषा सिंह , स्पीयर हेड मेंबर दुकान जी, एवं स्वयं सेवक अमन, अंकित ने प्रतिभाग किया और तत्पश्चात मिंटो पार्क में गंगा उत्सव समापन कार्यक्रम आयोजन में गंगा स्वच्छता गोष्टी रखी गई जिसमें वन संरक्षक बी आर अहिरवार, प्रभागीय वन अधिकारी रमेश चंद्र, मुख्य तौर पर मौजूद रहे ' नौका प्रतियोगिता कार्यक्रम में कई ग्राम के प्रधान और राजेश कुमार, दिनेश कुमार, जीतकुमार, गेंदालाल, सुरेश कुमार, रमेश कुमार, उमेश कुमार, जगदीश, कुलदीप यादव, संदीप आदिवासी, प्रभु नाथ, प्रभाकर, संदीप, मनोज, आदित्य, अतुल, रामधनी, ओम प्रकाश मिश्र, अनिल प्रकार, राम कृष्ण, श्याम कृष्ण, कमलेश कुमार, राम नारायण, बनवारी लाल, आदि लोगों की सहभागिता रही।

कार्यालय ग्राम पंचायत अधिकारी- टिकरी ता. कंजासा विकास खण्ड-जसरा प्रयागराज

अल्पकालीन निविदा

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना, राज्य वित्त/ पन्द्रहवां वित्त योजनान्तर्गत वर्ष 2021-22 में प्रस्तावित निम्नलिखित कार्यों हेतु सामग्री आपूर्ति पंजीकृत विक्रेता से 30.09.2021 से 03.10.2021 तक सायं 4:00 बजे तक निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। दिनांक 03.10.2021 को सायंकाल 4:30 पर निविदा ग्राम पंचायत कार्यालय पर निविदादाताओं एवं प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी।

क्रम संo	कार्य का विवरण	ग्राम पंचायत	योजना/ पद	अनुमानित लागत (लाख में)	निविदा मूल्य (रू में)	धरोहर राशि	आपूर्ति/ कार्यअवधि
1	प्रेम चन्द्र के घर हैण्डपम्प के पास से भारत लाल के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	टिकरी ता. कंजासा	मनरेगा/रा.वि./ पन्द्रहवां वित्त	2.0	500.00	4000	15 दिन
2	प्रेम चन्द्र के हैण्डपम्प के पास से महेन्द्र कुमार के घर तक अण्डरग्राउंड नाली	टिकरी ता. कंजासा	मनरेगा/ रा.वि./ पन्द्रहवां वित्त	2.00	500.00	4000	15 दिन
3	रामकरन पटेल के घर से भैया लाल के कुआ तक इण्टरलाकिंग कार्य	टिकरी ता. कंजासा	मनरेगा/ रा.वि./ पन्द्रहवां वित्त	2.50	500.00	5000	15 दिन
4	विजय कुमार के घर से ट्रांसफार्मर तक इण्टरलाकिंग कार्य	टिकरी ता. कंजासा	मनरेगा/ रा.वि./ पन्द्रहवा वित्त	2.50	500.00	5000	15 दिन
5	हरी लाल के घर से तेज प्रताप के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	टिकरी ता. कंजासा	मनरेगा/ रा.वि./ पन्द्रहवा वित्त	2.00	500.00	4000	15 दिन

सामान्य शर्तें-:

1. कार्य की संपूर्ण जानकारी किसी भी कार्य दिवस में ग्राम विकास अधिकारी कार्यालय से ली सकती है।
2. निविदा दाता/ कोटेशन दाता को समस्त रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र जी.एस.टी. नं. के साथ रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र निविदा कोटेशन के साथ संलग्न करना होगा।
3. निविदा धरोहर राशि 2 प्रतिशत जमानत के रूप में एफ.डी.आर./ एन.एस.सी. जमा करना होगा।
4. निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय दिनांक 03.10.2021 तक पूर्वाह्न 12:00 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं।
5. किसी निविदा/ कोटेशन को निरस्त करने का सर्वाधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा।
6. सभी कार्यों के लिए अलग-अलग निविदा/ कोटेशन स्वीकार की जायेगी।
7. सशर्त निविदा स्वीकार नहीं होगी।

नोट- निविदा प्रपत्र ग्राम पंचायत कार्यालय टिकरी ता. कंजासा से प्राप्त की जा सकती है एवं ग्राम पंचायत कार्यालय टिकरी ता. कंजासा में समस्त निविदायें भी खोली जायेंगी।

(विजय बहादुर सिंह पटेल)
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत टिकरी ता. कंजासा
विकास खण्ड जसरा प्रयागराज

(वृजेन्द्र सिंह)
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत टिकरी ता. कंजासा
विकास खण्ड जसरा प्रयागराज

पत्रांक/मनरेगा/राज्य वित्त/2021-22 दिनांक

इविवि: दीक्षांत में गीतकार गुलजार को नहीं मिलेगी डीलिट की मानद उपाधि

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) के दीक्षांत समारोह में मशहूर गीतकार गुलजार को डीलिट की मानद उपाधि नहीं दी जाएगी। इविवि प्रशासन ने इस उपाधि के लिए उनके नाम का प्रस्ताव केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को भेजा था, लेकिन वहां से अब तक मंजूरी नहीं मिली है, जबकि समारोह के आयोजन में 24 घंटे का वक्त बाकी रह गया है।अर्थशास्त्र विभाग के प्रो. प्रशांत घोष के प्रस्ताव पर इविवि की एकेडमिक कौंसिल की बैठक में डीलिट की मानद उपाधि के लिए गुलजार के नाम पर मुहर लगाई गई थी। इसके बाद चार अगस्त को हुई विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की बैठक में गीतकार गुलजार को कविता, फिल्म एवं संस्कृति में उनके योगदान के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से डीलिट की मानद उपाधि प्रदान किए जाने का प्रस्ताव पारित किया गया था।अंतिम मंजूरी के लिए इविवि प्रशासन ने इस बाबत एक प्रस्ताव केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को भेजा था। इविवि प्रशासन को अब भी मंत्रालय से मंजूरी मिलने का इंतजार है। ऐसे में गुलजार अब दीक्षांत समारोह में शामिल नहीं होंगे। इविवि की पीआरओ डॉ. जया कपूर ने बताया कि गुलजार को डीलिट की मानद उपाधि दिए जाने से संबंधित प्रस्ताव को अभी मंत्रालय से मंजूरी नहीं मिली है। समारोह में गीतकार गुलजार या उनके किसी प्रतिनिधि के शामिल होने की अभी कोई सूचना नहीं है।

कताई मिल के पीछे युवक ने लगाई फांसी, मौत

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र में एक युवक ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लिया प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार को मेजा खास निवासी शिव शंकर उर्फ छोटू पुत्र रामकुमार कताई मिल के पीछे पेड़ पर फांसी लगाकर जान दे दिया परिजनों के मुसीबत शिव शंकर शराब के नसे का आदि था दीपावली के दिन अपनी मां से शराब पैसा मांगा और पैसे न मिलने पर कह कर चला गया वह फांसी लगाकर अपनी जान दे दिया नशे का आदि वह अक्सर ऐसी धमकियां घरवालों को दिया करता था इसीलिए किसी ने उस पर गौर नहीं किया शनिवार को मेजा कताई मे पेड़ से लगते हुआ उसका शव पाया गया फिलहाल परिजनों की तरफ से पुलिस को सूचना नहीं दी गई शव को कब्जे में लेकर पुलिस पोस्टमार्टम भेज दिया गया।

प्रतापगढ़ संदेश

जिले के सात शिवालयों में हुआ जलाभिषेक व रुद्राभिषेक

शिवालयों में आयोजित कार्यक्रम का हुआ सीधा प्रसारण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा केदारनाथ धाम उत्तराखण्ड में आदि शंकराचार्य की मूर्ति का अनावरण किया गया जिसका प्रतापगढ़ के सात प्रमुख शिवालयों में सजीव प्रसारण के माध्यम से केदारनाथ में सम्पन्न हुए प्रधानमंत्री द्वारा किये जा रहे अनावरण कार्यक्रम को देखा गया।

प्रतापगढ़ के शिवालयों में तहसील लालगंज अन्तर्गत घुश्मेश्वरनाथ धाम में सांसद प्रतापगढ़ संगम लाल गुप्ता, तहसील रानीगंज अन्तर्गत प्रगट महादेवन धाम दिलीपपुर में विधायक रानीगंज धीरज ओझा, तहसील क्षेत्र सदर अन्तर्गत गौरीशंकर धाम भुपियामऊ में विधायक सदर राजकुमार पाल व भयहरणनाथधाम में भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, पट्टी क्षेत्र अन्तर्गत बाबा बेलखरनाथधाम में कैबिनेट मंत्री मोती सिंह जी के प्रतिनिधि विनोद पाण्डेय, तहसील कुण्डा अन्तर्गत हौदेश्वरनाथ धाम में प्रदेश कार्य समिति सदस्य शिव प्रकाश मिश्र सेनानी व कचनार वीर बाबा चौरासधाम में जिला महामंत्री पवन गौतम सहित सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारी एवं उपजिलाधिकारी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

उपस्थिति अतिथियों द्वारा शिवालयों में रूद्राभिषेक/जलाभिषेक भी किया गया। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल के नेतृत्व में जनपद के प्रमुख शिवालयों में प्रधानमंत्री के अनावरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण एवं सांस्कृतिक टीम द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।

महादेवन धाम में रुद्राभिषेक करते रानीगंज विधायक धीरज ओझा

आरसी यादव का टीजीटी में हुआ चयन, हर्ष

पट्टी, प्रतापगढ़। यूपीएससी में 23 बार मेंस देने के बाद भी हिम्मत न हारने वाले और लगातार संघर्ष करने वाले आरसी यादव पुत्र रामचंद्र यादव के टीजीटी में चयन होने पर समाजवादी पार्टी के नेता निवर्तमान प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य विजय यादव ने आरसी यादव के गृह गांव भरोखन (पूरेफौजी) पहुंचकर माला पहनाकर तथा मिठाई खिलाकर उनका बधाई दिया। आरसी यादव ने कई बार यूपीएससी परीक्षा में बैठे और 23 बार मेंस दिए लेकिन सफलता हाथ से फिसलती ही जा रही थी, पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए उन्होंने अपने दृढ़संकल्प और इच्छा शक्ति से कुछ कर गुजरने की ठानी और बीएड करने के बाद वह शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए संघर्ष करते हुए इस बार टीजीटी में सफलता हासिल किया। इस मौके पर अजय यादव, हरीलाल यादव, निर्भय यादव, अच्छे लाल यादव, अंकुर यादव, पन्ना लाल यादव, मनोज यादव बीडीसी सहित दर्जन से अधिक लोग मौजूद रहे।

भुईया दूज पर भाई को टीका लगाती बहन

बहनों ने टीका लगाकर भाईयों के सुख समृद्धि की किया कामना

अखंड भारत संदेश

श्रद्धा के साथ मनाया गया भइया दूज का त्योहार

प्रतापगढ़। दीपावली सकुशल बीत जाने के बाद शनिवार को भइया दूज का त्योहार शहर में श्रद्धा के साथ धूमधाम से मनाया गया। छोटे-छोटे बच्चों ने इस पर्व पर उत्साह से भाग लिया। बहनों ने भाइयों के माथे पर टीका लगाकर उनका मुंह मीठा किया और उनके सुख समृद्धि की कामना की। वैसे भइया दूज पर शहर में कई कार्यक्रम होते रहे हैं लेकिन इस वर्ष कायस्थ सभा ने देर शाम कार्यक्रम आयोजित किया। इस तरह भइया दूज के त्योहार के साथ दीपावली का चार दिवसीय कार्यक्रम शनिवार को समाप्त हो गया। भइया दूज में बच्चों में ज्यादा उत्साह देखा गया। शनिवार को सुबह भी नहा-धोकर नए वस्त्र धारण कर भाइयों के माथे पर बहनों का टीका चमकने लगा था। बहनें भी टीका लगाकर खुश दिखाई पड़ रही थीं। जो भाई बहन एक दूसरे से दूर रहे, वे वाट्सअप पर वीडियो कालिंग कर शुभकामनाएं दी। इसके अलावा व्यवसायिक प्रतिष्ठानों पर आज से नया कार्य शुरू किया गया। लोगों ने नई बही बनाकर कलम दवात की पूजा की।

ट्रेन में यात्री की तबियत खराब, नहीं मिली दवाएं

रेलवे डॉक्टर ने यात्री को बिना टिकट बताकर इलाज से पल्ला झाड़ा, डीआरएम सेल में शिकायत के बाद मचा हड़कंप

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रेलवे यात्रियों की सेहत को लेकर कितनी भी फिक्रमंद क्यों न। मातहत पलीता लगाने से बाज नहीं आ रहें हैं। प्रतापगढ़ स्टेशन पर शनिवार को लापरवाही की एक बानगी यहां के रेलवे क्लीनिक स्टाफ के द्वारा देखने को मिली। ट्रेन में बीमारी यात्री का इलाज करने के बजाय डॉक्टर ने उसे बिना टिकट बता दिया।जबकि उसका पीएनआर नम्बर था। इसके बाद भी यात्री बिना इलाज के सफर करता रहा। शिकायत हुई तो हड़कंप मचा हुआ है। रेलवे सूत्रों के अनुसार पुरी से नई दिल्ली जा रही 02875 नीलांचल एक्सप्रेस के कोच संख्या एस-7 में बर्थ 19 के यात्री दिलीप(39) की तबियत खराब हो गई। कंट्रोल सूचना हुई। बताया जाता है कि प्रतापगढ़ में रेलवे के डॉक्टर ने दिलीप को अटेंड किया। लेकिन उसका इलाज नहीं किया। दवाएं भी नहीं दी। उसके बाद ट्रेन चली गई। पता चला कि आगे चलकर इसकी शिकायत डीआरएम सेल में हुई। उसके बाद शुरू हुई पड़ताल। स्टेशन अधीक्षक एसके यादव ने बताया है कि यात्री को डॉक्टर ने अटेंड किया था। दवाएं मिली है कि नहीं यह उन्हें नहीं पता। जब डीआरएम सेल के अधिकारी ने यहां के परिचालन स्टाफ से पूछा तो स्टाफ ने डॉक्टर से तस्दीक की। डॉक्टर ने बताया कि वे उसी ट्रेन से आ रहे थे। बीमार यात्री से टिकट मांगा जो वह दिखा नहीं पाया। अस्पताल स्टाफ को फोन किया। लेकिन दवा नहीं मिल पाई। खास बात यह है कि डॉक्टर ने अपना धर्म निभाना जरूरी नहीं समझा। चेकिंग स्टाफ बन गया था। अगर यात्री के पास टिकट नहीं था तो वह पीएनआर नंबर किसका था जिसको डीआएम सेल ने स्टेशन के परिचालन स्टाफ को फोन पर लिखवाया।

कांशीराम कालोनियों की दलित बस्ती में हुआ एंटी लार्वा का छिड़काव

अखंड भारत संदेश

दीपावली के पहले हो चुकी थी सफाई, आज हुआ दवा का छिड़काव

प्रतापगढ़। डेंगू के प्रभाव को देखते हुए नगर पालिका मलिन बस्तियों की साफ-सफाई कराकर एंटी लार्वा का छिड़काव कर रही है। संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत शनिवार को जोगापुर, सरोज चौराहा के कृषि फार्म के पास तथा मुर्गी फार्म के पास बनी कांशीराम कालोनी व आसपास की मलिन बस्तियों में एंटी लार्वा का व्यापक छिड़काव किया गया।

यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि शासन ने डेंगू के नियंत्रण के लिये आवश्यक निर्देश जारी किये हैं जिसके तहत नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी द्वारा बनाई गई कार्य योजना के तहत तीनों कांशीराम कालोनी की मलिन बस्तियों में दीपावली के पहले सफाई की गई थी और शनिवार को यहां व्यापक स्तर पर एंटी लार्वा का छिड़काव कर बढ़ते मच्छरों के प्रकोप को कम करने का प्रयास किया गया है। बता दें कि इन दिनों मच्छरों का प्रकोप शहर में बढ़ा है जिससे डेंगू का प्रभाव के डर से लोग सहमे हुए हैं। ऐसे में नगर पालिका का एंटी लार्वा का छिड़काव व्यापक स्तर पर होना बहुत जरुरी है।

दलित बस्ती में दवा का छिड़काव करते नगर पालिका कर्मी

विधायक मोना की ओर से चलाया गया विशेष सेनिटाइजेशन अभियान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। दीपावली के त्यौहार को लेकर कोरोना से बचाव के लिए क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के द्वारा विशेष सेनिटाइजेशन अभियान चलाया गया। चार माह से कोरोना की संभावित तीसरी लहर से बचाव के लिए विधायक के द्वारा क्षेत्र के गांवो मे चलाए जा रहे अभियान के तहत कार्यकताओं ने लोगों को स्वच्छता के प्रति भी जागरूक किया। शनिवार को क्षेत्र के इटैला गांव मे विधायक के द्वारा भेजवायी गई निजी मशीन से गांव तथा उसके पुरवों मे सार्वजनिक स्थानों व घर-घर दवाओं का छिडकाव किया गया। अभियान का संयोजन रामू मिश्र ने किया। वहीं ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष केडी मिश्र तथा मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने अभियान मे जुटी टीम की हौसला आफजाई करते दिखे। इस मौके पर अवधेश सिंह, अजय तिवारी, प्रधान वीरेन्द्र वर्मा, नामवर सिंह आदि रहे।

अमृत महोत्सव के रूप में मना दीपोत्सव

अखंड भारत संदेश

आरएसएस ने आयोजित किया दीपोत्सव कार्यक्रम

प्रतापगढ़। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतापगढ़ नगर के स्वयंसेवक, गणमान्य नागरिक गण एवं परिजनों के साथ दीपोत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने भारत के मानचित्र पर दीप प्रज्वलित कर दीपोत्सव को आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर अमृत महोत्सव में परिणत कर दिया।

इस अवसर पर विभाग कुटुंब प्रबोधन प्रमुख रघुवीर प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि वास्तव में यह वर्ष समस्त भारतवंशियों के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतापगढ़ के जिला कार्यवाह डॉ सौरभ पांडेय, प्रख्यात साहित्यकार एवं बड़ौदा उत्तर प्रदेश बैंक के पूर्व क्षेत्रीय प्रबंधक सुखदेव तिवारी, बड़ौदा उत्तर प्रदेश बैंक पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक बृजेश प्रताप सिंह, समाजसेवी हरिशंकर दुबे, वरिष्ठ भाजपा नेता शिव शंकर सिंह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचार प्रमुख प्रभा शंकर पांडेय, गंगा समग्र के जिला संयोजक प्रभात मिश्र, सह नगर कार्यवाह सर्वोत्तम, गंगा समग्र के जैविक कृषि प्रमुख धर्मेंद्र सिंह, कालूराम सरोज, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जिला संयोजक रमेश पटेल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की नगर मंत्री आंचल सिंह, जिला संपर्क प्रमुख शीतांशु ओझा, पंकज तिवारी, राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के प्रदेश मंत्री सुरेंद्र प्रसाद रुद्र आदि ने सहभागिता की।

भारत के मानचित्र पर दीप प्रज्जवलित करते आरएसएस पदाधिकारी

बाइक सवार बदमाशों ने युवक को मारी गोली, गंभीर

जेठवारा, प्रतापगढ़। जेठवारा थाना क्षेत्र के बिकरा ग्रामसभा के रामगढ़ निवासी रोहित शर्मा (22) वर्ष पुत्र श्याम शंकर शर्मा शुक्रवार को शाम लगभग साढे. छह बजे डेरवा बाजार से अपने घर जा रहा था, तभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र डेरवा के पास पहुंचा ही था कि पीछे से आए बाइक सवार हमलावरों ने रोहित शर्मा के ऊपर फायर झोक दिया जिससे गोली उसके पेट में लगी। गोली लगने से वह जमीन पर गिरकर तड़पने लगा। सूचना पर पहुंचे परिजनों ने उसे आनन-फानन इलाज के लिए प्रयागराज ले गए जहां पर एक निजी अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है। मिली जानकारी के अनुसार रात में ही ऑपरेशन हो गया है। जेठवारा पुलिस सीसीटीवी फुटेज निकाल कर जांच पड़ताल में जुटी है। थाने में भी किसी प्रकार की कोई तहरीर समाचार लिखे जाने तक नहीं पड़ी है।

सपा की बैठक में बोलते जिला महासचिव अब्दुल कादिर

30 नवम्बर तक मतदाता सूची में नाम बढ़ाने का करें कार्य : इरशाद

समाजवादी पार्टी की मासिक बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी कार्यालय मीरा भवन पर शनिवार को मासिक बैठक बुलाई गई। साथ ही साथ आकस्मिक बैठक बुलाई गई जिसकी अध्यक्षता जिला उपाध्यक्ष इरशाद सिद्दीकी व संचालन समाजवादी पार्टी के जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी ने किया।

बैठक में इरशाद सिद्दीकी ने कहा कि बैठक का मुख्य उद्देश्य नए नामों के वोटर लिस्ट बढ़ाने का कार्य हो रहा और जो नाम कट गए हैं उनको बढ़ाने के कार्य को करें। बूथ को मजबूत करने का कार्य और 30 नवंबर तक नए नामों के मतदाता सूची के कार्य और लोगों को जागरूक करने का कार्य किया जाए और कार्यकताओं को समझाया गया कि अगर 2022 में सपा की सरकार बनाना है तो हमको बूथ को मजबूत करना है और नवयुवक के नाम बढ़ाना होगा। इस मौके पर पूर्व विधायक नागेंद्र सिंह मुन्ना यादव, पूर्व जिला अध्यक्ष भैया राम पटेल, पूर्व जिला पंचायत सदस्य सुषमा पाल, पूर्व ब्लाक प्रमुख शांति सिंह, अश्वनी सोनी, शकील अहमद, राहुल सिंह, शहर ए आलम शिबू, जगदीश मौर्य, इरफान खान, आशुतोष पांडे, वसिक खान, इंद्र देव तिवारी, समीम खान, गुलफाम खान, मनीष पाल, फारुख खान मीडिया प्रभारी वकार अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

एक ही रजिस्ट्रेशन नम्बर पर चलाई जा रही चोरी की दो ट्रक बरामद

अखंड भारत संदेश

12 टायरा ट्रक के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। थाना रानीगंज से थानाध्यक्ष अनिल कुमार पाण्डेय मय हमराह, देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान जामताली मोड पर मौजूद थे कि मुखबिर खास द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक ही प्रकार की रजिस्ट्रेशन नम्बर प्लेट लगाकर दो ट्रक चल रहे हैं जिनमें से एक ट्रक प्रधान ढ़ाबा, गाजी के बाग के पास व दूसरी ट्रक ग्राम थरिया में खड़ी है। इस सूचना पर तत्काल उक्त पुलिस टीम मुखबिर के बताये स्थान गाजी का बाग पहुचंकर वहां खड़े ट्रक को चेक किया जाने लगा तो ट्रक में ड्राइवर सीट पर बैठा एक व्यक्ति उतरकर भागना चाहा जिसे मौके पर ही पकड़ लिया गया। मौके से पकड़े गये व्यक्ति इफ्तेखार अहमद पुत्र सिराजुद्दीन नि0 रिसालगढ़ थाना रानीगंज जनपद प्रतापगढ़ द्वारा पूछताछ में बताया गया कि यह ट्रक मेरे भाई इरशाद अहमद द्वारा चोरी करके अपने साथियों के साथ लाया गया है, जिसे मै चलाता हूं। इसी नम्बर की एक दूसरी ट्रक लाला पुत्र जगन्नाथ उर्फ मुण्डा नि0 थरिया थाना रानीगंज जनपद प्रतापगढ़ के घर के सामने खड़ी है, जिसे एजार व मेरे भाई इरशाद अहमद कहीं से चोरी करके लाये हैं। पकड़े जाने के डर से तथा धोखे की नीयत से दोनो गाडियों पर एक ही नम्बर प्लेट लगाकर चलाते हैं तथा इन गाड़ियों से माल ढ़ोकर अपना जीवन यापन करते हैं। तत्पश्चात उक्त पुलिस टीम अभियुक्त द्वारा बताये गये स्थान थरिया पहुंची तो देखा कि लाला के मकान के सामने खड़ी ट्रक पर सामने लगे नम्बर प्लेट को एक व्यक्ति खुरच रहा है, जिसे घेराबन्दी कर मौके से पकड़ लिया गया।

अधेड़ ने सई मे कूदकर की आत्महत्या, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शारीरिक कष्ट से पीड़ित अधेड़ ने सई मे छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। सांगीपुर थाना के पहाड़पुर के इटौरा गांव निवासी रोंघई का पुत्र जयराम सरोज 45 शुक्रवार की शाम सिंघनी पुल से सई मे छलांग लगा बैठा। सई मे समाये अधेड़ का शव शनिवार की सुबह बरामद हुआ। पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक मृतक जयराम पिछले वर्ष आग से जल गया था। इससे क्षुब्ध होकर वह परेशान रहता था। शुक्रवार को शाम करीब पांच बजे किठावर मार्ग पर बने सिंघनी पुल पर जयराम पहुंचा। वहां मौजूद एक राहगीर से सई मे कूदने की बात कही। इस बीच अचानक वह पुल की रेलिंग पर चढ़कर नदी मे कूद गया। राहगीर के शोर मचाने पर मृतक का एक रिश्तेदार वहां पहुंचा और उसके घर सूचना दी। गोताखोरों के प्रयास से मृतक का शव बरामद हुआ। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। इधर अधेड की मौत पर परिजनों मे कोहराम मच गया।

रानीगंज के लाखों की अवैध स्प्रिट बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रानीगंज कोतवाली के सराय जमुनी में फिर अवैध स्प्रिट पकड़ी गई। मौके पर पहुंची पुलिस औ? आबकारी विभाग की टीम ने लाखों की कीमत के स्प्रिट को जब्त किया बता दें कि नवनिर्मित मकान में छुपाकर स्प्रिट रखी गई थी। बता दें कि कुछ दिन पूर्व फतनपुर थाना छेत्र में अवधै स्प्रिट पकड़ी गई थी।

खबर संक्षेप

17 नवंबर को मनाई जाएगी ग्यारहवीं शरीफ : शहर काजी

इमामगंज कौशाम्बी। शहर काजी कौशाम्बी हजरत मुफ्ती खुशनूद आलम एहसानी रजवी साहब ने एलान किया है कि 29 रबीउल अव्वल 1443 हिजरी को बाद नमाज ए मगरिब रबीउल आखिर का चाँद नजर नहीं आया और न ही कहीं से शरई तस्दीक ही मौसूल हो सकी। लिहाजा ऐलान किया जाता है कि कल 6 नवंबर 2021 बरोज सनीचर को रबीउल अव्वल शरीफ की 30 तारीख है और रबीउल आखिर 1443 हिजरी की पहली तारीख 07 नवंबर 2021 बरोज इतवार को होगी और ईद ए गौसिया(ग्यारहवीं शरीफ)17 नवंबर 2021 बरोज बुध को मनाई जाएगी।

कस्बे से बाइक चोरी

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना के मूरतगंज पुलिस चौकी क्षेत्र के कस्बा स्टेट बैंक व सहारा अस्पताल के गेट के पास मोहम्मद मोबसिर के पुत्र ब्लैक पल्सर गाड़ी यूपी 73 ₹ 1918 खडी.कर बीमार अपने भांजे को अस्पताल में देखने बुधवार रात्रि को गए थे जैसे ही अपने भांजे को देख कर वह वापस बाहर निकले तो उनकी पल्सर बाइक गायब मिलीं मौके से मोटर साइकिल चोरी हो गई बहुत ढूढने पर भी बाइक नहीं मिलीं तब चौकी इंचार्ज मूरतगंज को उन्होंने घटना की जानकारी दी थाना में अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया चार्ज पर रहे थानेदार महेश चंद्र ने जल्द ही बाइक ढूढनें का अश्वासन दिया है।

दुर्घटना : आधा दर्जन टूरिस्ट यात्री घायल इलाज के दौरान एक यात्री की हुई मौत

अजमेर से बंगाल जा रही सवारियों से भरी टूरिस्ट बस स्पीड ब्रेकर से अनियंत्रित होकर नाले में पलटी

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा भोला चौराहे के निकट शुक्रवार की देर रात एक टूरिस्ट बस स्पीड ब्रेकर से अनियंत्रित होकर सड़क किनारे नाले में पलट गई है हादसे में आधा दर्जन से अधिक लोगों को गंभीर चोटें आई हैं घायलों को स्थानीय पुलिस ने इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है जहां इलाज के दौरान एक व्यक्ति की मौत हो गई है अन्य यात्रियों को पुलिस ने रहने खाने की व्यवस्था स्थानीय मदरसा में कराया है।

जानकारी के अनुसार बस नम्बर हइ15 इ 0736 बस मालिक हसन अली उम्र लगभग 65 वर्ष 65 यात्रियों के साथ अजमेर दरगाह से जियारत कर वापस पश्चिम बंगाल मिदनापुर जा रहे थे शुक्रवार की देर रात को टूरिस्ट बस 65 सवारियों को लेकर कानपुर की तरफ से मिदनापुर बंगाल वापस जा रही थी जैसे ही टूरिस्ट बस अझुवा कस्बे के भोला चौराहे से पहले राष्ट्रीय राजमार्ग पर बने गति अवरोधक (ब्रेकर) पर पहुँची बस अनियंत्रित होकर गलत दिशा में सर्विस लाइन को तोड़ते हुए

सड़क हादसे के बाद टूरिस्ट बस और मौके में मौजूद यात्रियों का दृश्य

घरों के सामने खड़ी सुमित केसरवानी की चार पहिया वाहन टवेरा को पीछे से टक्कर मार कर नाले में बस का पहिया फंस गया जिससे बस में सवार दर्जनों लोग घायल हो गए इस हादसे मे याकूब अली45 वर्ष,कुक्कू अली 50 वर्ष मैना बीवी 50 वर्ष कुरैशा45 यूसुफ,तौफीक 60 वर्ष सरफुद्दीन 39 वर्ष मुर्शिद 30 वर्ष मुस्तकी बेगम 60 वर्ष सहित कई लोग घायल हो गए हसन अली 65 वर्ष गम्भीर घायल हो गए जिसमे हसन अली को गम्भीर स्थिति में सिराथू सरकारी अस्पताल में पुलिस ने भर्ती कराया गम्भीर स्थिति देख चिकित्सकों ने उसे जिला अस्पताल में भेज दिया जहां इलाज के दौरान बस मालिक हसन अली की मौत हो गयी है।दुर्घटना की सूचना पर सैनी कोतवाल तेजबहादुर सिंह चौकी इंचार्ज अझुवा विजेंद्र सिंह मय पुलिस फोर्स के साथ राहत एवं बचाव कार्य मे जुट गए घायलों को 3 एम्बुलेंस से अस्पताल भेज कर कार्रवाई में पुलिस जुट गए थी मौके पर पहुंचे स्थानीय लोगों ने दुर्घटना देखकर कहा सौभाग्य था बहुत बड़ी घटना होने से बच गयी बस के ऊपर ही खुली विद्युत तार का करेंट चल रहा था यदि बस में विद्युत स्पर्श हो जाता तो बहुत बड़ी घटना हो सकती थी।सभी जियारत दारों को चौकी प्रभारी अझुवा ने नास्ते का प्रबंध करवा कर रात में मदरसा यादगारे आलाहजरत के सक्रिय सदस्य मो वसीम, मोहम्मद सिराज, मोहम्मद अहमद, मोहम्मद सरफराज ने सभी जियारत दारों को मदरसा में रोककर इलाज खाना पीना उनके घर भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं वहीं बस ड्राइवर फरार बताया जा रहा है स्पीड ब्रेकर में किसी प्रकार का सूचकांक नही लगा है जिससे कई हादसे हो चुके हैं।

बेखौफ हो रही है उर्वरक की कालाबाजारी

खुले बाजार में व्यापारियों द्वारा 100 रुपये तक उर्वरक की कीमत में अधिक वसूली की जा रही है

आखिर उर्वरक की उपलब्धता के लिए अधिकारियों द्वारा कैसे बनाई गई थी कार्य योजना

कौशाम्बी। सहकारी समितियों से लेकर निजी व्यापारियों के यहाँ उर्वरक की कालाबाजारी बेखौफ हो रही है आलू गेंहू की बुवाई के समय किसान उर्वरक के लिए परेशान है खुले बाजार में व्यापारियों द्वारा 100 रुपये तक उर्वरक की कीमत में अधिक वसूली की जा रही है यही स्थिति सहकारी समितियों की उर्वरक की है वहां भी 50 रुपये से 100 रुपये तक उर्वरक में समितियों के जिम्मेदारों द्वारा बेखौफ वसूली की जाती है जिससे किसान को उर्वरक नहीं मिल पाती है बीते पन्द्रह दिनों से प्रतिदिन सुबह से सहकारी समितियों में उर्वरक के लिए किसानों की लंबी लाइन लग जाती है और कुछ लोगों को उर्वरक देने के बाद समितियों के कर्मचारियों द्वारा यह कह कर किसानों को वापस कर दिया जाता है कि उर्वरक का स्टॉक आज खत्म हो गया है आखिर उर्वरक की उपलब्धता के लिए अधिकारियों द्वारा कैसे कार्य योजना बनाई गई थी जिससे किसानों की समस्या का समाधान होने के बजाए और बढ़ गई है कृषि अधिकारी और उनके कर्मचारी कालाबाजारी में लिप्त व्यापारियों से करोड़ो की अवैध वसूली में मस्त है किसानों द्वारा बार बार शिकायत के बाद भी कृषि अधिकारी का बाल बांका होता नही दिख रहा है जिससे जिले के किसान उर्वरक के लिए परेशान है आखिर उर्वरक की कालाबाजारी पर कब रोक लगेगी और उर्वरक की कालाबाजारी में मस्त व्यापारियों पर कब मुकदमा दर्ज करा कर उनकी गिरफ्तारी कराई जाएगी इतना ही नहीं उर्वरक की कालाबाजारी में लिप्त व्यापारियों को संरक्षण देने वाले कृषि अधिकारियों पर भी कठोर कार्यवाही किए जाने की जरूरत है लेकिन योगी सरकार और उनके आला अधिकारी कालाबाजारी में लिप्त व्यापारियों को संरक्षण देने वाले कृषि अधिकारियों पर कार्रवाई करने को कतई तैयार नहीं है जिससे योगी सरकार की व्यवस्था पर बदनुमा दाग लग रहा है।

मदरसे में मचाया उत्पात तोड़े दरवाजे किया पथराव

अखंड भारत संदेश

इमामगंज कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी वार्ड नंबर 17 सरजूदास नगर स्थित मदरसा दारुल उलूम नूरिया एहसानिया में बीती रात अज्ञात लोगों ने पीछे के रास्ते से घुसकर जमकर उत्पात मचाया छात्र मोहम्मद आरिफ की माने तो देर रात लगभग 2:00 बजे के आस पास 8 लोग पीछे के रास्ते से दाखिल होकर भारी मात्रा में मदरसा में रखे सामानों को नुकसान पहुंचाया व रसोई समेत तीन दरवाजों के ताले तोड़े यहां तक पंखे व बल्ब को भी तोड कर मदरसे में रहकर पढ़ाई कर रहे 13 छात्रों के दरवाजों पर पथराव कर तोड़ने की कोशिश की पर पीछे से छात्रों द्वारा जोर लगाए जाने की वजह से दरवाजा तोड़ने की कोशिश नाकाम रही। मौजूद छात्रों ने घटना की सूचना फोन द्वारा प्रबन्धक को देनी चाही पर फोन ना उठने के कारण छात्रों की यह कोशिश नाकाम रही। इसके बाद छात्रों ने प्रधानाचार्य कारी अफजाल को फोन कर घटना की सूचना दी सूचना पाते ही प्रधानाचार्य ने आसपास रह रहे लोगों को घटना के बारे में अवगत कराया लोग पहुंच गए लोगों के पहुँचते ही अराजकतत्व पीछे के रास्ते से भागने में कामयाब हो गए। मदरसा दारुल उलूम नूरिया हसनिया भरवारी मे कक्षा 1 से 8 तक सभी विषयों की पढ़ाई के अलावा, मुंशी, मौलवी, आमिल, कामिल, की शिक्षा दी जाती है।शिक्षा ग्रहण करने के लिए अलग-अलग जगह से करीब 13 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। घटना की सूचना जैसे ही स्थानीय पुलिस को हुई सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके का निरीक्षण कर जांच पड़ताल में जुट गई पर अभी भी उत्पात मचाने वाले अज्ञात लोग पुलिस की गिरफ्त से दूर हैं।फिलहाल घटना की लिखित सूचना प्रधानाचार्य अफजाल अहमद व मैनेजर हाजी महमूद द्वारा दी जा चुकी है। घटना के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है।

समय से गुणवत्तापूर्ण पुल का निर्माण करें पूरा : डिप्टी सीएम

गंगा नदी पर निमार्णाधीन सेतु का निरीक्षण करने पहुंचे डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या

अखंड भारत संदेश

टेढ़ीमोड़ कौशांबी। प्रतापगढ़ से कौशांबी जनपद को जोड़ने वाले गंगा नदी पर निमार्णाधीन सेतु का उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने निरीक्षण कर निर्माण में लगे अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया है उन्होंने संबंधित अधिकारियों को कार्य को गुणवत्ता पूर्ण एवं अति शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए है उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य प्रतापगढ़ से कौशांबी को जोड़ने वाले शहजाद पुर गंगा पुल के निरीक्षण के दौरान कार्य को धीमी प्रगति होने पर कार्यदायी संस्था को जमकर फटकार लगाते हुए कहा कि निर्माण में तेजी लाए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि समय से कार्य पूर्ण हो जाना चाहिए नहीं तो संस्था के खिलाफ कठोर

पुल का निरीक्षण कर दिशा-निर्देश देते डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य साथ में मौजूद विधायक संजय गुप्ता शीतला प्रसाद पटेल अनीता त्रिपाठी व अन्य

कार्रवाई की जाएगी इस मौके पर उपस्थित सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल चायल विधायक संजय गुप्ता जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी जिलाधिकारी सुजीत कुमार एसपी राधेश्याम विश्वकर्मा सहित पार्टी के तमाम नेता मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

आदिगुरू शंकराचार्य की मूर्ति अनावरण का लाइव प्रसारण

कौशाम्बी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा केदारनाथ धाम उत्तराखण्ड में आयोजित कार्यक्रम में आदिगुरु शंकराचार्य की मूर्ति एवं समाधि स्थल का अनावरण तथा विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया इस कार्यक्रम का प्रशासन के सहयोग से जनपद कौशांबी के विभिन्न शिवालयों पर आयोजित कार्यक्रम में लाइव प्रसारण किया गया उपस्थित लोगों ने आदिगुरु शंकराचार्य की मूर्ति एवं समाधि स्थल का अनावरण तथा विभिन्न परियोजनाओं के लोकार्पण के समय प्रधानमंत्री के उदबोधन को लाइव सुना इस समारोह का आयोजन जनपद मुख्यालय के शिव मंदिर नेतानगर मंझनपुर, शिव मंदिर नवीन मंडी अझुहा, मनकामेश्वर धाम सराय अकिल, प्राचीन शिव मंदिर कड़ा नगर पालिका परिषद भरवारी में स्थित शिव मंदिर सहित विभिन्न स्थानों में किया गया ' इसके साथ ही भजन, रुद्राभिषेक एवं साँस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन प्रशासन द्वारा आयोजित किया गया है।

संदिग्ध दशा में फंदे से लटकता मिला विवाहिता का शव

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के कमासिन गांव में एक विवाहिता महिला का शव फांसी के फंदे से लटकता हुआ मिला है। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के अनुसार सैनी कोतवाली क्षेत्र के कमासिन गांव की उषा देवी उम्र तकरीबन 25 वर्ष पत्नी बबलू का शव घर के कमरे में धन्नी में साड़ी के सहारे फांसी के फंदे से लटकता हुआ शव मिला है परिजनों के मताबिक महिला ने पारिवारिक कलह के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या की है महिला की शादी करीब 7 वर्ष पूर्व हुई है पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पंचनामा भर कर पोस्टमार्टम को भेजकर अग्रिम कार्रवाई में जुट गई है।

चोरी के उपकरण सहित चरवा पुलिस ने दो को किया गिरफ्तार

चरवा कौशाम्बी। चरवा पुलिस ने दो आरोपियों को चोरी की बैटरी वा अन्य उपकरण के साथ गिरफ्तार किया है आरोपियों के विरुद्ध पूर्व से घटना का मुकदमा दर्ज था पुलिस ने बताया कि अजय कोरी पुत्र राम सिंह कोरी निवासी चौराडीह थाना चरवा वा अंकुश त्रिपाठी पुत्र स्व0 ज्ञान सिंह त्रिपाठी निवासी चौराडीह थाना चरवा लम्बे समय से चोरी की घटनाओं में लिप्त थे दोनो आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए अभियुक्तों के पास से एक अदद बैट्री, तीन अदद मोबाईल , दो अदद चार्जर तथा एक अदद हेड फोन बरामद कर अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया गया गिरफ्तारी करने वाली टीम में उ0नि0 आदित्य कुमार चौकी प्रभारी बरियावाँ थाना चरवा का0 अतुल कुमार का0 राधेश्याम का0 सन्तराम का0 रविशंकर चौहान चौकी प्रभारी बरियावाँ मौजूद रहे।

प्रेशर हॉर्न लाउड स्पीकर आदि प्रदूषण यंत्रों का न करें प्रयोग : रविन्द्र त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप का प्रयोग एवं रात्रि के समय उसकी उपयोगिता एवं दुर्घटनाओं से बचाव के बारे में किया गया जागरूक

वाहन चालकों को यातायात की जानकारी देते यातायात निरीक्षक रविंद्र त्रिपाठी

कौशाम्बी। यातायात माह के तहत पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जनपद के करारी चौराहा मंझनपुर चौराहा में बस ट्रक, टैक्सी टेंपो ट्रैक्टर ई-रिक्शा एवं लोडर तथा अन्य व्यवसायिक वाहन चालकों एवं संचालकों के साथ गोष्ठी एंव कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें तीव्र ध्वनि के हॉर्न प्रेशर हॉर्न लाउडस्पीकर आदि ध्वनि प्रदूषण यंत्रों के प्रयोग न किए जाने एवं रात्रि के समय वाहन की हेडलाइट के उचित डिपर का प्रयोग एवं हेड लाइट के ऊपरी हिस्से को काले रंग से पेंटेड करने वाहनों की हेड लाइट और बैक लाइफ सही दशा में रखे जाने तथा सर्दियों में फोग लाइट के प्रयोग किए जाने हेतु प्रशिक्षण दिया गया रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप का प्रयोग एवं रात्रि के समय उसकी उपयोगिता एवं दुर्घटनाओं से बचाव के बारे में जागरूक किया गया ध्वनि प्रदूषक यंत्रों के दुष्प्रयोग एवम रिफ्लेक्टर रिफ्लेक्टिव टेप का प्रयोग न किये जाने की दशा में मोटर वाहन अधिनियम के तहत दंड के प्रावधानों तथा जुमार्ने की धनराशि से अवगत कराया गया। तदुपरांत जनपद के पाल चौराहा, समदा चौराहा ओसा चौराहा नवीन गल्ला मंडी ओसा आदि स्थानों पर यातायात टीम के साथ पहुच कर ट्रैक्टर ट्राली रोडवेज तथा प्राइवेट बस ट्रक टैक्सी टेम्पो ई रिक्शा लोडर एंव दुपहिया वाहनों सहित 91 वाहनों में निशुल्क रेट्रोस्पेक्टिव टेप लगवाए गए तथा इनके प्रयोग हेतु प्रेरित किया गया इसके साथ ही यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध प्रवर्तन की कार्यवाही भी संपादित की गई।

महिला और उसके समर्थकों ने युवक पर किया लाठी-डंडे से हमला

अखंड भारत संदेश

मामले में पुलिस बनी रही तमाशबीन

अझुवा कौशाम्बी। सैनी थाना क्षेत्र के फरीदागंज गांव में शराबी युवक पर घर में आग लगाने का आरोप लगाकर लाठी डंडे से हमला किया गया है जिससे वह गंभीर रूप से घायल है घायल युवक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है मामले की सूचना स्थानीय थाना पुलिस को दोनों पक्षों ने दी है खबर लिखे जाने तक मामले में मुकदमा नहीं दर्ज हो सका है युवक ने पड़ोसी महिला के घर आग लगा दिया इससे अफरा-तफरी मच गई महिला के घर पर पडा छप्पर धू धू कर जल गया, घटना की सूचना पुलिस को दी गई, मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच पड़ताल किया बताया जाता है कि युवक पर महिला और उसके समर्थकों ने बेरहमी से लाठी-डंडे से हमला किया है जिससे युवक को गंभीर चोटें आई हैं। फरीदागंज गांव में दीपावली के दिन भगवत का लड़का श्याम बाबू पड़ोसी महिला झपटटी के घर चोरी किया था दूसरे दिन महिला चोर के घर उलाहना देने गई, तो उसका पिता भगवत शराब पीकर शनिवार की दोपहर १२ बजे शराब के नशे में धुत होकर महिला के घर में आग लगा दिया इससे अफरातफरी मच गई,महिला के घर पर पडा छप्पर धू धूकर जल गया,घटना की सूचना पुलिस को दी गई, मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की छानबीन किया, इसी दौरान मौके का फायदा उठाकर शराबी युवक फरार हो गया, जबकि शराबी युवक के चोर लड़के श्याम बाबू को महिला और उसके ग्रामीण समर्थकों ने लाठी डंडे से मार पीट कर घायल कर दिया सूचना पर पहुंची एंबुलेंस ने घायल को उपचार के लिए सीएचसी सिराथू मे भर्ती कराया है।

जुआ फड़ पर पकड़े गए धन्ना सेठों से 80000 की रकम बरामद

तीन जुआरियो को छोड़कर पुलिस ने डकार ली बड़ी रकम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र में बीती रात 10 व 11 बजे के लगभग जुआ खेल रहे 7 धन्ना सेठ जुआरियों को सराय अकिल की पुलिस ने जुआ खेलते हुए फड़ से पकड़ा है मौके से 80 हजार रुपये बरामद किए जाने की चर्चा है लेकिन पुलिस ने तीन जुआरियो को छोड़ दिया और बड़ी रकम डकार लिया है पुलिस के मुताबिक उनके पास से 9250 रुपये और गड्डी की ताश पुलिस ने बरामद हुई है जुआ खेलने वाले लोगो मे देवनारायण पुत्र सत्यनारायण फकीराबाद मनीष केसरवानी पुत्र गिरधर गोपाल निवासी सराय महबूब पुत्र मुनव्वर फकीराबाद सराय अकिल अर्जुन पुत्र रामचंद्र आदि का नाम प्रकाश में आया है चचाओं पर जाए तो जुआ फड़ में तीन अन्य लोग भी जुआ खेलते हुए पकड़े गए थे जिन्हें पुलिस ने मोटी रकम लेकर छोड़ दिया है बताया जाता है कि जुआ फड़ में ?80000 बरामद हुआ था लेकिन पुलिस ने कम रुपए दिखाकर जुआरियो के ऊपर लिखा पड़ी की है इतना ही नहीं जुआ संचालन के सरगना को भी पुलिस ने संबंधित धाराओं में मुकदमा नहीं दर्ज किया है सार्वजनिक स्थान पर नाल निकालकर जुआ संचालित कराया जाता था लेकिन पुलिस ने इसे साधारण जुआ मानते हुए लिखा पढ़ी की है।

सत्ता पक्ष के नेताओ समेत तमाम लोग जुआ खेलने में रहे मस्त

अखंड भारत संदेश

दीपावली के पर्व पर मुस्तैद पुलिस ने शांतिभंग के आरोप में दर्जनों को किया गिरफ्तार

विभिन्न थाना क्षेत्रों में जुए की फड़ बेखौफ तरीके से संचालित होती रही जुआ फाड़ से मिली रकम को डकारने में पुलिस माहिर

कौशांबी। दीपावली के पर्व पर पूरे जिले की थाना पुलिस अपने अपने क्षेत्र में पूरी मुस्तैदी से संदिग्धों की चेकिंग कर रही थी पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक अमन चैन में दखल देने के आरोप में महेवाघाट पुलिस ने दो व्यक्तियों पर शांति भंग की कार्रवाई की है करारी थाना पुलिस ने 3 व्यक्तियों पर शांति भंग की कार्यवाही की और कौशांबी थाना पुलिस ने 10 व्यक्तियों पर शांति भंग की कार्यवाही की है पूरे जिले में थाना पुलिस द्वारा पैदल गस्त कर अमन चैन बनाने का प्रयास किया गया है दीपावली के पर्व पर पूरे जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में जुए की फड़ बेखौफ तरीके से संचालित होती रही तमाम बड़े सफेदपोश नेता भी जुआ फड़ संचालन कर नाल की रकम वसूलते दिखाई पड़े हैं भरवारी क्षेत्र में एक भाजपा महिला नेत्री की जुआ फड़ में उपस्थित होने की चर्चा तेजी से हो रही थी तमाम जुआरी पकड़े जाने के बाद पुलिस के सामने चिरौरी बिनती करते सुने गए हैं जुआरी को पकड़ कर फड़ से मिले नगदी को बरामद कर पुलिस और जुआ संचालक लुका छुपी का खेल खेलते रहे सराय अकिल थाना क्षेत्र सहित अन्य थाना क्षेत्रों में तमाम जुआ के फड़ में मोटी रकम मिलने की चर्चा है जिसे थाना पुलिस डकार गई है।

करोड़ों खर्च फिर भी नगरपालिका के लोग मूलभूत सुविधाओं से वंचित

अखंड भारत संदेश

एक माननीय का संरक्षण नगरपालिका के घोटाले बाज अधिकारियों को मिल जाने से योगी सरकार की योजनाओं को पलीता लगाने में सफल होते दिख रहे हैं नगरपालिका के जिम्मेदार

नगर पालिका मंझनपुर के पतौना की सड़क का दृश्य

कौशांबी। योगी सरकार में विकास के नाम पर सरकारी खजाने से रकम निकालकर विभागीय अधिकारियों द्वारा तिजोरी भरने का खेल बेखौफ तरीके से चल रहा है जिससे विकास योजनाओं का लाभ आम जनता को नहीं मिल रहा है और आम जनता आज भी नारकीय जीवन जीने को विवश है ताजा मामला नगर पालिका मंझनपुर के पतौना का है। नगर पालिका मंझनपुर ने करोड़ों रुपए विकास के नाम पर अभिलेखों में खर्च कर दिया है लेकिन जमीनी हकीकत में नगर पालिका क्षेत्र का विकास नहीं हो सका है पतौना में पंछी लाल सरोज के घर से सुखराम सरोज के घर तक सड़कों में पानी भरा हुआ है जिससे नगर पालिका के लोगों को निकलने में दिक्कतें होती हैं कई बार आसपास के लोगों ने नगरपालिका के जिम्मेदारों से सड़क में पानी भरे होने की शिकायत कर समस्या के निदान की मांग की लेकिन नगरपालिका मंझनपुर के जिम्मेदार कुंभकरण की नींद सो रहे हैं उन्हें सरकारी खजाने को फर्जी कार्य योजना बनाकर सरकारी धन लूटने से फुर्सत नहीं है जिससे आम जनता नारकीय जीवन जीने को विवश है।आखिर मंझनपुर नगर पालिका में विकास के नाम पर मिलने वाला करोड़ों का बजट कहां खर्च किया जा रहा है इसे देखने की फुर्सत किसी आला अधिकारी के पास नहीं है सरकारी बजट को लूटो मौज उड़ाओ की तर्ज पर नगर पालिका मंझनपुर का विकास चल रहा है योगी सरकार के मंत्री विधायक सांसद और अधिकारी भी नगरपालिका मंझनपुर के भ्रष्टाचार पर चुप्पी साध कर बैठे हैं जिससे मंझनपुर नगर पालिका के जिम्मेदारों के भ्रष्टाचार के हौसले बुलंद हैं यदि नगरपालिका क्षेत्र में विकास कार्यों के नाम पर किए गए करोड़ों के घोटाले की आला अधिकारियों ने सूक्ष्म जांच कराई तो नगरपालिका के जिम्मेदारों पर शासन का चाबुक चलना तय है लेकिन क्या योगीराज में नगरपालिका मंझनपुर के घोटाले पर कार्यवाही हो पाएगी यह असंभव लगता है सूत्र बताते हैं कि एक माननीय संरक्षण नगरपालिका के घोटाले बाज अधिकारियों को मिला हुआ है जिससे योगी सरकार की योजनाओं को पलीता लगाने में नगरपालिका के जिम्मेदार सफल होते दिख रहे हैं।

सम्पादकीय

जहरीली हवा

सर्दी का मौसम शुरू होते ही दिवाली के आसपास दिल्ली और इसके सटे इलाकों की हवा में प्रदूषण बढ़ना शुरू हो जाता है। हालांकि इसे रोकने के लिए दिल्ली सरकार काफी हाथ-पांव मारती देखी जाती है, पर उसे सफलता मिलती नजर नहीं आती। अक्सर इस मौसम में प्रदूषण बढ़ने की बड़ी वजह किसानों के पराली जलाने, पटाखे फोड़ने और निर्माण कार्यों से उड़ने वाली गर्द को बताया जाता रहा है। मगर इस साल इन सभी पहलुओं पर सरकार पहले से सतर्कता बरत रही थी। निर्माण कार्यों से उड़ने वाली गर्द पर अंकुश लगाने के लिए पूरी दिल्ली में जांच दल गठित कर दिए गए थे। किसानों को पराली न जलानी पड़े, इसके लिए दिल्ली सरकार ने विशेष रूप से तैयार जैव रसायन का मुफ्त वितरण शुरू किया था, जिससे पराली आसानी से खेतों में ही गल-पच जाती है। पटाखों पर अदालत की तरफ से रोक है। यों भी दिवाली से पहले इतने पटाखे नहीं फोड़े जाते कि उनसे निकलने वाला धुआं सारे वातावरण को दमघोटू बना दे। मगर इतने एहतियात के बावजूद स्थिति यह है कि दिल्ली में प्रदूषण का स्तर खतरे के बिंदु तक पहुंच गया। मंगलवार को दर्ज आंकड़ों में दिल्ली में प्रदूषण का स्तर देश के प्रमुख शाहरों में सबसे ऊपर था। तीन सौ नौ अंक। आने वाले दिनों में इस स्तर में और बढ़ोतरी की संभावना जताई गई है।

जब मौसम सर्द होने लगता है, तो हवा पृथ्वी की सतह के आसपास सिमटने लगती है, फिर उसमें घुले प्रदूषक वातावरण को दमघोटू बना देते हैं। पिछले कुछ सालों में तो ऐसा अनुभव रहा कि बच्चों के स्कूल बंद करने पड़े, लोगों को सुबह टहलने निकलने से परहेज करने की सलाह दी गई। दमकल की गाड़ियों से पेड़ों पर पानी की बौछार मार कर प्रदूषक तत्त्वों को कम करने का प्रयास किया गया। बहुत सारे लोगों ने अपने घरों में वायु प्रदूषण अवशोषक संयंत्र भी रख लिए। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए दिल्ली सरकार ने एक जगह वायु प्रदूषण सोखने वाला विशाल संयंत्र भी लगाया है, जिसके नतीजे उत्साहजनक हैं। ऐसे संयंत्र अन्य स्थानों पर भी लगाने की उसकी योजना है। मगर अब यह साफ हो गया है कि तमाम उपायों के बावजूद अगर वायु प्रदूषण पर काबू पाना चुनौती बना हुआ है, तो इसकी वजहें दूसरी हैं। वायु प्रदूषण का बड़ा कारण वाहनों से निकलने वाला धुआं है। इसे कम करने के भी कई उपाय सरकार आजमा चुकी है, पर उस पर काबू नहीं पाया जा पा रहा। हालांकि वाहनों पहले से ही ऐसे यंत्र लगाया जाने लगे हैं, जो धुएं को पानी में बदल देते हैं, उसे हवा में घुलने नहीं देते। बसों में सीएनजी इस्तेमाल होने लगी है। अब बैट्री चालित टैक्सियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। मगर दुपहिया वाहनों से निकलने वाले धुएं पर काबू पाना कठिन बना हुआ है। आंकड़े बताते हैं कि दिल्ली में सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण दुपहिया वाहनों की वजह से फैलता है। दिवाली नजदीक होने की वजह से आनलाइन खरीदारी पर जोर रहा। ऐसी वस्तुओं की आपूर्ति करने वाले ज्यादातर दुपहिया वाहनों का उपयोग करते हैं। दिल्ली की सड़कों पर दुपहिया वाहनों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, इसलिए इनसे निकलने वाला धुआं चुनौती बना हुआ है। फिर चोरी-छिपे बहुत सारे धुआं उगलने वाले छोटे और मंझोले उद्योग-धंधे भी दिल्ली के अंदर चल रहे हैं। इस दिशा में जब तक कोई व्यावहारिक उपाय नहीं निकाला जाएगा, तब तक इस समस्या पर काबू पाना कठिन बना रहेगा।

गांधी-नेहरू को नकारने की कोशिश

पलाश सुरजन

गांधी जी को भारतीय जनमानस से हटाने की शुरूआत उस दिन से हो गई थी जिस दिन उन्हें स्वच्छ भारत अभियान तक सीमित कर दिया गया था। स्वच्छता के अलावा भी गांधी जी के जो सबक थे, उन सबको किनारे कर दिया गया। नेहरू जी की छवि को तरह-तरह से धूमिल करने की कोशिशें की गईं। इसके बावजूद अनचाहे ही सही, गांधी जी को जब-तब सर नवाना ही पड़ता है और 15 अगस्त के भाषणों में नेहरु जी को याद करना ही पड़ता है। पिछले दिनों सावरकर के माफीनामे को लेकर छिड़ी बहस के बीच किन्हीं राकेश कृष्णन सिम्हा का एक ट्वीट आया- व्हाट अ ब्रिलियंट ऑब्जर्वेशन : 54 कॉमनवेल्थ देशों में से 53 बिना किसी गांधी-नेहरु के 1946-1956 के बीच अंग्रेजों से आजाद हो गए थे और वो भी बिना किसी बंटवारे के। श्री सिम्हा का जो संक्षिप्त परिचय इंडिया फैक्ट्स डॉट ओ आर जी और स्वराज्य मार्ग डॉट कॉम पर मिलता है, उसके मुताबिक वे न्यूजीलैंड में निवासरत पत्रकार हैं जो रक्षा और विदेश मामलों पर लिखते हैं। अनेक राष्ट्रीय -अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित हुए हैं और अनेक राष्ट्रीय -अंतरराष्ट्रीय संगठनों-संस्थाओं में उनके काम सराहा गया है, उनके शोध पत्रों में श्री सिम्हा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हालांकि बहुत ढूंढने पर भी विकिपीडिया या ऐसी ही किसी और जगह पर सिम्हा जी का परिचय नहीं मिलता, न ही भारत की नामचीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके लेख के नेट पर कोई लिंक मिलते हैं। इसके पीछे के कारण सिम्हा जी ही बेहतर बता सकते हैं। फिलहाल को मान लेते हैं कि राकेश कृष्णन सिम्हा एक विद्वान व्यक्ति हैं। उनके लेखों और ट्वीट से उनकी विचारधारा स्पष्ट हो जाती है और इसलिए यह बेहिचक कहा जा सकता है कि उनका कथन न केवल आजादी की लड़ाई में गांधी - नेहरु की भूमिका को, बल्कि उस पूरे दौर के इतिहास को ही नकारने की कुचेष्टा है। महात्मा गांधी हों, जवाहर लाल नेहरु हों या स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली सारी हस्तियां - वे तमाम लोग हाड़-मांस के इंसान थे, रामायण-महाभारत जैसे किसी टीवी धारवाहिक के पात्र नहीं जो पलक झपकते उन सब जगहों पर पहुंच पाते जहां अंग्रेजों का राज था और जिसकी बिना पर यह कहा जाता था कि बरतानी साम्राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता। भारत दो सौ सालों तक ब्रिटेन के अधीन रहा। इस दौरान असंख्य भारतीय अपने-अपने तरीके से अंग्रेजों से लोहा लेते रहे और बेड़ियां तोड़ने की कोशिश करते रहे लेकिन उनके संघर्ष को दिशा तो तभी मिली जब महात्मा गांधी भारत आए और आन्दोलन का नेतृत्व उन्होंने अपने हाथों में लिया।

सिम्हा जी एक पूरा आलेख इसी विषय पर लिखते कि आजादी की लड़ाई में गांधी-नेहरू की जरुरत क्यों नहीं थी या उनके बिना भी देश कैसे आजाद हो सकता था, तो बेहतर होता। वे अपनी प्रतिष्ठा के साथ न्याय करते यदि बताते कि उन देशों की परिस्थितियां क्या थीं और वे कितने समय तक गुलाम रहे। क्या ब्रिटेन ने किसी स्व प्रेरणा से उन देशों को मुक्त कर दिया था या वहां भी कोई आन्दोलन चला था और वह आन्दोलन भारत के संघर्ष से प्रेरित था या नहीं। क्या उन देशों में भी वैसी विविधता थी जैसी भारत में अभी तक है और क्या उनका आकार-प्रकार भी वैसा था जैसा हमारे देश का है। अगर गांधी-नेहरू वहां नहीं थे तो जिन्ना और सावरकर भी वहां थे या नहीं। और कुछ नहीं तो वे उन देशों की फेहरिस्त ही दे देते जिनकी बात वे अपने ट्वीट में करते हैं। लेकिन सिम्हा जी तो आईटी सेल के कारिंदे की तरह व्यवहार करके खामोश बैठ गए। उन्हें पता है कि ऐसी बेसिर-पैर की बातों पर लोग न केवल आंख मूंदकर भरोसा कर लेते हैं, उन्हें हकीकत से कोई वास्ता नहीं होता।

बहरहाल, सिम्हा जी और उनके अनुचरों को जान लेना चाहिए कि भले ही गांधी-नेहरू उन 53 देशों में नहीं थे, लेकिन उनके अथक संघर्ष ने पूरी दुनिया को प्रेरणा दी। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला तो गांधी से इस कदर प्रभावित थे कि उन्हें उनके देश में महात्मा गांधी कहा जाता था। गांधी जी की तर्ज पर जूलियस न्येरेरे ने तंजानिया की मुक्ति के लिए अहिंसक आन्दोलन चलाया और अपने देश के राष्ट्रपिता कहलाए। अमेरिका में रंगभेद के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व करने वाले महान नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने गांधी जी से ही प्रेरणा प्राप्त की थी। म्यांमार में लोकतंत्र की प्रबल समर्थक रहीं आंग सान सू ची गांधी के विचारों से प्रभावित रहीं। अमेरिका में पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा का भी गांधी के विचारों में दृढ़ विश्वास है, जिसे वे बार-बार व्यक्त कर चुके हैं। साइप्रस के निकोसिया म्युनिसिपल पार्क में गांधी जी की मूर्ति है और वहां के संसद भवन का नाम, नेहरू जी के नाम पर रखा गया है। ऐसे अनेकानेक उदाहरण हैं, उन पर बात फिर कभी। दरअसल, गांधी जी को भारतीय जनमानस से हटाने की शुरूआत उस दिन से हो गई थी जिस दिन उन्हें स्वच्छ भारत अभियान तक सीमित कर दिया गया था। स्वच्छता के अलावा भी गांधी जी के जो सबक थे, उन सबको किनारे कर दिया गया। नेहरू जी की छवि को तरह-तरह से धूमिल करने की कोशिशें की गईं। इसके बावजूद अनचाहे ही सही, गांधी जी को जब-तब सर नवाना ही पड़ता है और 15 अगस्त के भाषणों में नेहरु जी को याद करना ही पड़ता है। दुनिया में शायद ही कोई लोकतांत्रिक देश ऐसा होगा जिसका रवैया आजादी दिलाने और देश को सबल-सशक्त बनाने वाले अपने पुरखों के प्रति ऐसे पाखण्ड और घृणा से भरा होगा। ऐसा न हो कि आने वाले समय में इस कृतघ्नता के दुष्परिणाम हमें भुगतान पड़ें। बकौल अल्लामा इकबाल -

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालों।
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।।

बिजली संकट को टालिए मत, सामना कीजिए

डॉ. भरत झुनझुनवाला

आने वाले समय में ऐसी समस्या पुनः उत्पन्न न हो इसके लिए हमें दो कदम उठाने होंगे। पहली बात यह कि देश में ऊर्जा का खपत कम करना होगा। हमारे पास कोयले के भंडार केवल 150 वर्षों के लिए उपलब्ध हैं और तेल के लिए हम आयातों पर निर्भर हैं इसलिए हमे देश में ऊर्जा के मूल्य को बढ़ाना चाहिए और उस रकम को ऊर्जा के कुशल उपयोग के लिए लगाना चाहिए। जैसे यदि सरकार बिजली का दाम बढ़ा दे और कुशल बिजली की मोटरों को लगाने के लिए सब्सिडी दे तो देश में ऊर्जा की खपत कम होगी लेकिन उद्यमी को नुकसान नहीं होगा और हमारा जीडीपी प्रभावित नहीं होगा। बीते समय बरसात में कोयले की खदानों में पानी भरने से अपने देश में कोयले का उत्पादन कम हुआ था। बिजली का उत्पादन भी कम हुआ और कई शहरो में पॉवर कट लागू किए गए। फिलहाल बरसात के कम होने से यह संकट टल गया है। लेकिन यह केवल तात्कालिक राहत है। हमें इस समस्या के मूल कारणों का निवारण करना होगा अन्यथा इस प्रकार की समस्या बार-बार आती रहेगीं। वर्तमान बिजली संकट के तीन कथित कारणों का पहले निवारण करना जरूरी है। पहला कारण बताया जा रहा है कि कोविड संकट के समाप्तप्राय हो जाने के कारण देश में बिजली की मांग बढ़ गई है जिसके कारण यह संकट पैदा हुआ है। यह स्वीकार नहीं है क्योंकि अप्रैल से सितंबर 2019 की तुलना में अप्रैल से सितंबर 2021 में कोयले का 11 फीसदी अधिक उत्पादन हुआ था। इसी अवधि में देश का जीडीपी लगभग उसी स्तर पर रहा। यानी कोयले का उत्पादन बढ़ा और आर्थिक गतिविधि पूर्व के स्तर पर रही। इसलिए बिजली का संकट घटना चाहिए था न कि बढ़ना चाहिए था जैसा कि हुआ है। दूसरा कारण बताया जा रहा है कि कोयले के खनन में बीते कई वर्षों में निवेश कम हुआ है। बिजली उत्पादकों का रुझान सोलर एवं वायु ऊर्जा की तरह अधिक हो गया है। यह बात सही हो सकती है लेकिन इस कारण बिजली का संकट पैदा नहीं होना चाहिए था। कोयले के खदान में जितने निवेश की कमी हुई है यदि उतना ही निवेश सोलर और वायु ऊर्जा में किया गया तो कोयले से बनी ऊर्जा में जितनी कमी आई होगी उतनी ही वृद्धि सोलर और वायु ऊर्जा में होनी चाहिए थी। ऊर्जा क्षेत्र में कुल निवेश कम हुआ हो ऐसे संकेत नहीं मिलते हैं इसलिए कोयले में निवेश की कमी को संकट का कारण नहीं बताया जा सकता है। हाल में आए बिजली के संकट का मूल कारण ग्लोबल वार्मिंग दीखता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण एक तरफ बिजली का उत्पादन कम हुआ तो दूसरी तरफ बिजली की मांग बढ़ी है। पहले उत्पादन पर विचार करें। जैसा ऊपर बताया गया है, बीते समय में बाढ़ के कारण कोयले का खनन कम हुआ था। यह बाढ़ स्वयं ग्लोबल वार्मिंग के कारण बढ़ी है ऐसे संकेत मिल रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग से वर्षा कम समय में अधिक मात्रा में होने के अनुमान है जो कि बाढ़ का कारण बनता है। इसलिए बाढ़ को दोष देने के स्थान पर हमको ग्लोबल वार्मिंग पर ध्यान देना होगा। ग्लोबल वार्मिंग का दूसरा प्रभाव यह रहा है कि अमेरिका के लुजियाना और टेक्सास राज्यों में कई तूफान आए। इन्हीं राज्यों में तेल का भारी मात्रा में उत्पादन होता है जिससे विश्व अर्थव्यवस्था में तेल की उपलब्धि कमी हुई और कोयले का उपयोग बढ़ा। विश्व बजार में कोयले की मांग बढ़ी, दाम बढ़े और हमारे लिए आयातित कोयला महंगा हो गया जिसके कारण अपने देश में भी संकट पैदा हुआ। ग्लोबल वार्मिंग का तीसरा प्रभाव चीन में रहा है। चीन के कई क्षेत्रों में सूखा पड़ा है जिसके कारण जल विद्युत का उत्पादन कम हुआ है और कई क्षेत्रों में हवा का वेग कम रहा है जिसके कारण वायु ऊर्जा का उत्पादन कम हुआ है। इन तीनों रास्तों से ग्लोबल वार्मिंग ने कोयले और बिजली की उपलब्धि को कम किया है। दूसरी तरफ ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही ऊर्जा की मांग बढ़ी है। बीते वर्ष यूरोप एवं अन्य ठंडे देशों में सर्दी का समय लंबा खींचा है जिसके कारण वहां घरों को गर्म रखने के लिए तेल की खपत बढ़ी है। इस प्रकार ग्लोबल वार्मिंग के कारण एक तरफ बाढ़, तूफान और सूखे के कारण ऊर्जा का उत्पादन गिरा है तो दूसरी तरफ मकानों को गर्म रखने के लिए तेल की खपत बढ़ी है। इस असंतुलन के कारण विश्व में तेल और कोयले का दाम बढ़ा है और जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ा है। हम अपनी खपत का 85 प्रतिशत तेल और 10 प्रतिशत कोयला आयात करते हैं। यूं तो 10 प्रतिशत कम दिखता है। लेकिन आयातित कोयले का महंगा हो जाने के कारण आयातित कोयले पर चलने वाले घरेलू बिजली संयंत्रों से बिजली का उत्पादन महंगा पड़ने लगा जिसे बिजली बोर्डों ने खरीदने से मना कर दिया।

ईसाई अल्पसंख्यक और भारतीय प्रजातंत्र

राम पुनियानी

यह आरोप अक्सर लगाया जाता है कि ईसाई मिशनरियां हिन्दुओं को बड़े पैमाने पर ईसाई बना रही हैं परंतु आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते हैं। सन् 1971 में ईसाई भारत की आबादी का 2.60 प्रतिशत थे। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार उनका प्रतिशत 2.30 था। ईसाईयत को विदेशी धर्म बताया जाता है परंतु सन् 52 में सेंट थामस मलाबार तट पर उतरे थे और तब से भारत में ईसाई धर्म अस्तित्व में है। कुछ ईसाई मिशनरियां खुलकर यह घोषित करती हैं कि उनका उद्देश्य लोगों को ईसाई बनाना है परंतु उनमें से अधिकांश दूरस्थ इलाकों में और गरीब दलित समुदायों की बस्तियों में स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं। जैसे-जैसे साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद और मजबूत, और मुखर होता जा रहा है वैसे-वैसे धार्मिक अल्पसंख्यकों को डराने-धमकाने और उनके विरूद्ध हिंसा की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। पिछले एक दशक में इस प्रवृत्ति में तेजी से वृद्धि हुई है। मुस्लिम विरोधी हिंसा की चर्चा तो फिर भी होती रहती है किंतु ईसाई समुदाय के खिलाफ हिंसा अनेक अलग-अलग कारणों से अखबारों की सुर्खी नहीं बनती। इसका एक कारण यह है कि ईसाई आबादी बिखरी हुई है और उनके विरूद्ध जो हिंसा की जाती है वह अक्सर बड़े पैमाने पर नहीं होती। ये सभी नागरिकों के एक तथ्यान्वेषण दल के निष्कर्ष हैं जिसने देश के अलग-अलग भागों में ईसाई विरोधी हिंसा का अध्ययन और विश्लेषण किया है। इस दल की रपट में कहा गया है कि भारत में ईसाईयों के विरूद्ध हिंसा पर नजर रखने वाले मानवाधिकार संगठनों को लगातार इस समुदाय के खिलाफ हिंसा और उन्हें आतंकित किए जाने की घटनाओं की जानकारी मिलती रहती है परंतु मीडिया और यहां तक कि मानवाधिकार के क्षेत्र में काम करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठनों की नजर इन घटनाओं पर नहीं पड़ती।

इस रपट में उत्तरप्रदेश के विभिन्न जिलों में ईसाईयों के खिलाफ हिंसा की घटनाओं को सूचीबद्ध किया गया है। इसके साथ ही अक्टूबर 2020 में रूड़की में चर्च पर हमले की घटना की जांच के निष्कर्ष भी शामिल हैं। रपट कहती है कि इस मामले में पुलिस को पूर्व सूचना दी गई परंतु इसके बाद भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। हमला शुरू होने के बाद पुलिस को सूचना दी गई परंतु वह तब पहुंची जब हमलावर अपना काम करके जा चुके थे। ईसाईयां और उनके धार्मिक स्थलों पर हमलों का उद्देश्य इस आख्यान को मजबूती देना है कि ईसाई मिशनरियां हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करवा रही हैं।

रपट में देश के विभिन्न भागों में इस तरह की घटनाओं के विवरण संकलित किए गए हैं। इस वर्ष ऐसी घटनाएं अनेक स्थानों पर हुईं जिनमें शामिल हैं मऊ (10 अक्टूबर), इंदौर (26 जनवरी), शाहजहांपुर (3 जनवरी), कानपुर (27 जनवरी), बरेली (16 फरवरी), अम्बेडकरनगर (21 फरवरी), प्रयागराज (25 फरवरी), कानपुर (3 मार्च), आगरा (14 मार्च), केरल (22 मार्च), महाराजगंज (19 अप्रैल), बिजनौर (23 जून), गोंडा (25 जून), आजमगढ़ (25 जून), रामपुर (26 जून), रायबरेली (28 जून), शाहजहांपुर (29 जून), औरेया (29 जून), जौनपुर (3 जुलाई), होशंगाबाद (3 अक्टूबर), महासमुंद (3 अक्टूबर) और भिलाई (3 अक्टूबर)। इस सूची से पता चलता है कि इस तरह की घटनाओं में से अधिकांश उत्तरप्रदेश में हो रही हैं। हरियाणा, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी कुछ घटनाएं हुई हैं और एक घटना केरल में हुई है। अधिकांश मामलों में हमला ईसाईयों की प्रार्थना सभाओं पर किया गया। आरोप यह था कि ये सभाएं धर्म परिवर्तन का अड्डा हैं।

बहुसंख्यकवाद के उभार के साथ-साथ धार्मिक अल्पसंख्यकों को नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। अलग-अलग धार्मिक अल्पसंख्यक समूहों पर अलग-अलग ढंग के आरोप लगाए जाते हैं। ईसाईयों के मामले में मुख्य आरोप यह होता है कि वे हिन्दुओं को लालच, कपट और जोर-जबरदस्ती से ईसाई बना रहे हैं। आज से छः साल पहले सन् 2015 में जूलियो रिबेरो, जिन्होंने अत्यंत प्रतिबद्धता और ईमानदारी से पुलिस अधिकारी बतौर अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया, ने कहा था कि एक ईसाई बतौर अचानक मैं अपने आपको इस देश में अजनबी सा महसूस करने लगा हूं। तब से स्थितियां और खराब ही हुईं हैं। भारत में ईसाई विरोधी हिंसा पर नजर रखने वाले एक संगठन प्रोसीक्यूशन रिलीफ के अनुसार सन् 2020 की पहली छैमाही में देश में ईसाईयों को प्रताड़ित करने की 293 घटनाएं हुईं। इनमें से 6 मामलों का अंत हत्या में हुआ। दो महिलाओं का बलात्कार करने के बाद उनकी हत्या कर दी गई। दो अन्य महिलाओं और एक दस साल की लड़की का इसलिए बलात्कार किया गया क्योंकि उन्होंने ईसाई धर्म त्यागने से इंकार कर दिया। उत्तरप्रदेश इस मामले में ईसाईयां के लिए सबसे बुरा राज्य था। वहां ईसाईयों के खिलाफ नफरत से उद्धत 63 घटनाएं हुईं। इस संस्था के संस्थापक शिबू थामस के अनुसार ये केवल वे घटनाएं हैं जिनकी जानकारी उन्हें प्राप्त हुई है। यह भी हो सकता है कि अनेक ऐसी घटनाएं हुईं हों जिनकी जानकारी उन तक न पहुंची हो। चर्चों के लिए काम करने वाली एक अन्य संस्था ओपन डोर्स के अनुसार ईसाईयों को उनके सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों जीवन में प्रताड़ित किया जाता है। धर्मांतरण निरोधक कानूनों (जो अभी नौ राज्यों में लागू हैं) के अंतर्गत उन्हें परेशान किया जाता है। इन कानूनों के अंतर्गत दोषसिद्धि तो बहुत कम लोगों की होती है परंतु सालों तक अदालतों के चक्कर लगाना अपने आप में एक सजा है। भारत उन दस देशों में शामिल है जहां ईसाईयों का रहना खतरनाक है।

कर्नाटक सरकार जल्दी ही धर्मांतरण निरोधक कानून बनाने वाली है। उसने अभी से चर्चों और वहां होने वाले समागमों की जासूसी करवानी शुरू कर दी। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में 1 अक्टूबर को आयोजित एक रैली में स्वामी परमात्मानानंद ने भाजपा नेताओं की मौजूदगी में यह आह्वान किया कि धर्मांतरण में रत अल्पसंख्यकों को चुन-चुनकर मारा जाना चाहिए। यह आरोप अक्सर लगाया जाता है कि ईसाई मिशनरियां हिन्दुओं को बड़े पैमाने पर ईसाई बना रही हैं परंतु आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते हैं। सन् 1971 में ईसाई भारत की आबादी का 2.60 प्रतिशत थे। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार उनका प्रतिशत 2.30 था। ईसाईयत को विदेशी धर्म बताया जाता है परंतु सन् 52 में सेंट थामस मलाबार तट पर उतरे थे और तब से भारत में ईसाई धर्म अस्तित्व में है। कुछ ईसाई मिशनरियां खुलकर यह घोषित करती हैं कि उनका उद्देश्य लोगों को ईसाई बनाना है परंतु उनमें से अधिकांश दूरस्थ इलाकों में और गरीब दलित समुदायों की बस्तियों में स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं। ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाएं अपनी गुणवत्ता के लिए जानी जाती हैं। इनमें प्रवेश पाने के लिए कड़ी प्रतियोगिता होती है।

देश में ईसाई विरोधी प्रचार की शुरूआत सन् 1970 के दशक में हुई जब विहिप और वनवासी कल्याण आश्रम ने आदिवासी इलाकों में घुसपैठ करना शुरू किया। गुजरात के डांग में सन् 1998 में हिंसा हुई। स्वामी असीमानंद, जो कई बम धमाकों के आरोपी हैं, ने डांग में शबरी कुंभ का आयोजन किया और शबरी माता मंदिर बनवाए। झाबुआ में आसाराम बापू (जो अब जेल में हैं) के समर्थकों ने इसी तरह के आयोजन किए और इसके बाद झाबुआ में हिंसा हुई। ओडिशा में स्वामी लक्ष्मणानंद ने अपना काम शुरू किया और इसके नतीजे में सन् 2008 में कंधमाल हिंसा हुई। इसके पहले सन् 1999 में बजरंग दल के दारा सिंह ने पॉस्टर ग्राहम स्टेन्स की हत्या कर दी थी। उन पर यह आरोप था कि वे भोले-भाले आदिवासियों को ईसाई बना रहे हैं। इस घटना की जांच करने वाले वाधवा आयोग के अनुसार पॉस्टर स्टेन्स न तो धर्म परिवर्तन करवा रहे थे और न ही उस इलाके, जिसमें वे सक्रिय थे, में ईसाई आबादी के प्रतिशत में कोई वृद्धि हुई थी। धार्मिक स्वतंत्रता एक मानव और सामाजिक अधिकार तो है ही वह एक संवैधानिक अधिकार भी है। ईसाईयों और मुसलमानों के खिलाफ लक्षित हिंसा इस अधिकार का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन है।

जाति है कि जाती नहीं

हर्ष वी. पंत

भारतीय जनता पार्टी पिछले बीस सालों से इन्हीं अति पिछड़ी जातियों की लड़ाई लड़ने की बात करती रही है। और इन दिनों के जातीय सम्मेलन शायद उसी की बानगी हों लेकिन जो भी हो, यह जातिवाद किसी भी सूरत में उचित नहीं कहा जा सकता है। जब भाजपा खुद को 'पार्टी विद डिफरेंस' कहती रही है तो फिर आगे वह किस मुंह से अपनी यह पहचान बनाए रख पाएगी। उत्तरप्रदेश में पिछले साढ़े चार सालों तक राष्ट्रवाद, राष्ट्र निर्माण और विकास की बातों का परचम लहराते-लहराते अचानक जातियों का झंडा बुलंद किया जाने लगा है। पिछले तीन दशक से अधिक समय से यहां पर जातियों का ठेका समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के पास था। इन दोनों पार्टियों के झंडाबरदारों ने समाजवाद और दलितवाद का लबादा ओढ़कर जातियों की ऐसी आंधी चलाई कि राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद का परचम थामे चल रही कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी हवा में उड़ गई। एक दौर में सपा और बसपा ने मिलकर अपनी साझा जनसभाओं में एक उछाला था- 'मिले मुलायम-कांशीराम, हवा में उड़ गए जय श्रीराम।' यह जातिवाद का प्रचंडतम और विद्रूप चेहरा था, जिसने विरोधी पार्टी भाजपा को पीछे ढकेलने के नाम पर श्रीराम का अपमान किया था। अब अपनी राजनीति चमकाने और साधने के लिए यही दोनों पार्टियां उन्हीं श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या से अपने जातीय सम्मेलनों का शुभारंभ करने लगी हैं। श्रीराम और देवी-देवताओं के मंदिरों से बचने वाले नेता अब मंदिर-मंदिर घूम रहे हैं। लेकिन विडंबना यह है जातिवाद से बचने वाले भी अब जातिवादी चाशनी का स्वाद चखने को आतुर दिख रहे हैं। यह आचरण इसलिए और भयावह है कि खुद को श्रेष्ठजन कहने वाले भी यदि वैसा ही आचरण प्रदर्शित करेंगे तो छोटी-छोटी पार्टियों का जातिवादी लबादा कैसे उतरेगा और फिर वह इन्हें किस मुंह से जातिवादी कह पाएंगी।

उत्तर प्रदेश में फिलहाल जो दिखता है उसमें समाजवादी पार्टी यादव और मुसलमानों के सहारे अपनी राजनीतिक नाव खेती रही है। बहुजन समाज का मुख्य वोट बैंक जाटव रहे हैं। अपना दल कुर्मियों का ठेका लिये घूम रहा है तो सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी महज चार-पांच जिलों में रहने वाली बमुश्किल आधा प्रतिशत जातीय हिस्सेदारी वाली राजभर जाति के सहारे अपनी राजनीति चमकाने की कोशिश में है। निषाद पार्टी केवट-निषाद-मल्लाह जातियों की ठेकेदार बनी घूम रही है। ऐसे ही महान दल, पीस पार्टी, राष्ट्रीय लोकदल आदि पार्टियां एक-एक, दो-दो जातियों के भरोसे अपना-अपना झंडा लिए इधर-उधर टहल रही हैं। इन्हीं के बीच हैदराबाद से आए असदुद्दीन ओवैसी मुस्लिम समुदाय को गोलबंद करते हुए समाजवादी पार्टी का खेल खराब करने की कोशिश में हैं। कुल मिलाकर उत्तरप्रदेश जातियों की लड़ाई की रणभूमि बना हुआ है। जातियों के बंटवारे के इस खेल में दो बड़े राजनीतिक खिलाड़ी भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस भी कूद पड़े हैं। वह भले ही प्रच्छन्न तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं लेकिन कुल मिलाकर खेल वही है। क्या यह कम अंधेरगर्दी नहीं है कि यहां राजनीति करने वाली तीन पार्टियों ने तो एक ही जाति के नेताओं को अपना-अपना प्रदेश अध्यक्ष बना रखा है। सारी पार्टियां पिछड़ा-पिछड़ा खेल रही हैं। इस राजनीतिक खेल में समाज का एक बड़ा हिस्सा हाशिए पर चला गया है। उसकी गरीबी और हालात पर सबने आंखें बंद कर रखी हैं। सवर्ण समाज पर कोई अत्याचार, अनाचार होता है तो उस पर चुप्पी साधने की प्रवृत्ति भी इन दिनों राजनीति का हिस्सा हो चली है। इससे राजनीति शास्त्र के किन सिद्धान्तों के जरिए सामाजिक ताना-बाना मजबूत हो रहा है, इसका जवाब किसी के पास नहीं है। पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधि सम्मेलनों की आड़ में भाजपा बीते एक पखवाड़े से राजधानी लखनऊ में जातियों की जो जुटान कर रही है, उस पर समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव का यह बयान कम प्रासंगिक नहीं है कि 'भाजपा तो जाति पर जाति निकाल रही है।' अखिलेश यादव की परेशानी की वजह भी यही है कि पिछड़ों का नाम लेकर उनके पिता मुलायम सिंह यादव और बाद में वह जातियों की ठेकेदारी कर रहे हैं और अब उसमें दूसरे भी हिस्सेदार हो चुके हैं। उनको अपनी ही जातीय गोलबंदी टूटती नजर आने लगी है क्योंकि भाजपा ने कानपुर में एक ऐसा आयोजन कर डाला जिसमें चालीस सालों से समाजवादी बने घूम रहे यादव परिवार ही शामिल हो गए। भाजपा के रणनीतिकारों का मानना है कि अपने पिछड़ा वर्ग प्रतिनिधि सम्मेलनों के जरिए यह उन पिछड़ी जातियों को समाज की मुख्य धारा में लाने की कोशिश है जिनका मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव ने अपने हित के लिए इस्तेमाल तो किया, पर उन्हें कोई लाभ नहीं दिया। वह जहां के तहां खड़े रह गए। फायदा सिर्फ एक दो जातियों ने ही उठाया। जातियों को इस तरह से राजनीतिक गोलबंद करने की भाजपा की कोशिश से सपा मुखिया अखिलेश यादव और बसपा सुप्रीमो मायावती बेहद परेशान हैं। शायद उन्हें अपना जनाधार खिसकता महसूस हो रहा है। दरअसल तीन दशक से पिछड़ों को अधिकार दिलाने के नाम पर समाजवादी पार्टी सिर्फ एक ही जाति को ही लाभान्वित करती दिखाई पड़ी है। पिछड़ा वर्ग अनुसूची की बाकी जातियां इनके लिए वोट बैंक के सिवा और कोई मायने नहीं रखती हैं। उत्तर प्रदेश की पिछड़ी जातियों में यादव, कुर्मी, कुशवाहा- मौर्य, जाट, गूजर, निषाद या इक्का-दुक्का और जातियां ही अब तक राजनीतिक और सरकारी लाभ हासिल कर पाई हैं, बाकी सत्तर से अधिक जातियां सिर्फ इस्तेमाल ही की जाती रही हैं, गुमराह की जाती रही हैं।

क्रिस गेल ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने के दिए संकेत, फैन्स को गिफ्ट में बांटे ग्लव्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में वेस्टइंडीज के विस्फोटक बल्लेबाज क्रिस गेल ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने के संकेत दिए। उन्होंने अपने ग्लव्स फैंस को गिफ्ट दिए। वेस्टइंडीज की बात करें तो वो सेमीफाइनल की रेस से पहले ही बाहर हो गई है। टी-20 वर्ल्ड कप के अपने आखिरी मुकाबले में आज वेस्टइंडीज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेल रही है। क्रिस गेल जब बल्लेबाजी करने के लिए उतरे तो टीम के कप्तान कीरोन पोलार्ड समेत वेस्टइंडीज टीम के बाकी खिलाड़ियों ने बाउंड्री लाइन पर उनके सम्मान खड़े होकर तालियां बजाई। गेल की बात करें तो वो वेस्टइंडीज की तरफ से ओपनिंग करने आए। चश्मा पहनकर बैटिंग करने आए यूनिवर्स बॉस ने एक बार फिर से अपने अंदाज में आतिशी शुरूआत की। उन्होंने 9 गेंदों में दो छक्कों की मदद से 15 रन बनाए। गेल का विकेट पैट कमिंस ने लिया। उन्होंने गेल को बोल्ड किया। ड्रेसिंग तौर की तरफ से जाते हुए उन्होंने फैंस की तरफ बल्ला दिखाते हुए अभिवादन किया। जब वो ड्रेसिंग रूम की तरफ जा रहे थे, तो ड्वेन ब्रावो, जेसन होल्डर और आंद्रे रसेल ने उन्हें गले लगाया।

आज के मैच की बात करें तो ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 157 रन बनाए। टीम के लिए कप्तान कीरोन पोलार्ड ने सर्वाधिक 44 रनों की पारी खेली। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से जोश हेजलवुड ने सबसे ज्यादा चार विकेट झटके।

दक्षिण अफ्रीका से हारकर भी ऑस्ट्रेलिया का काम खराब कर सकती है इंग्लैंड

शारजाह (एजेंसी)। शानदार लय में चल रही इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका की टीमें शनिवार को आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के सुपर 12 राउंड के ग्रुप ए मुकाबले में शनिवार को जब एक-दूसरे का सामना करेंगी तो उनके सामने टूनार्मेंट के सेमीफाइनल में जगह पक्की करने की चुनौती होगी। इंग्लैंड की टीम ने अब तब अपने चारों मुकाबले जीते हैं और +3.183 के नेट रनरेट के कारण उनका सेमीफाइनल में पहुंचना लगभग तय है। दक्षिण अफ्रीका की टीम चार मैचों में छह प्वॉइंट्स के साथ ग्रुप में इस समय तीसरे नंबर पर है। इंग्लैंड के अलावा इस ग्रुप से दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के पास सेमीफाइनल में पहुंचने का मौका है। ऑस्ट्रेलिया का नेट रनरेट दक्षिण अफ्रीका से बेहतर है। ऐसे में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ इंग्लैंड अगर हार जाती है तो वह अप्रत्यक्ष रूप में ऑस्ट्रेलिया को झटका देकर खुद के अलावा प्रोटियाज टीम को सेमीफाइनल का टिकट दिला सकती है।

अहम मैच होने की वजह से दक्षिण अफ्रीका की टीम इंग्लैंड के खिलाफ थोड़ी भी कोताही नहीं बरतना चाहेगी। उन्हें अपनी उम्मीदों को बनाए रखने के लिए एक शानदार जीत की जरूरत है। टीम की लय पर सवाल उठ रहा है और ऐसे में शानदार फॉर्म में चल रही इंग्लैंड की टीम इस मैच में जीत की प्रबल दावेदार होगी। बांग्लादेश, श्रीलंका और वेस्टइंडीज पर लगातार तीन जीत के बाद दक्षिण अफ्रीका को अपने पिछले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहली हार का सामना करना पड़ा। इससे उनके अभियान पर सवाल खड़े हो गए। इंग्लैंड इसका फायदा उठाना चाहेगा और अपने ग्रुप अभियान को शानदार रिकॉर्ड के साथ समाप्त करना चाहेगा। उन्होंने अपने अभियान में अब तक कमोबेश सभी कमियों को दूर किया है।

इंग्लैंड की टीम पाकिस्तान के अलावा टूनार्मेंट में सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक लग रही है। उनके लिए हालांकि ग्रुप स्टेज के सभी चार मैच आसान नहीं रहे। टीम पर जब भी कोई परेशानी होती है तो कोई न कोई खिलाड़ी सफलता से उन्हें इससे बाहर निकाल लेता था। इंग्लैंड की बल्लेबाजी जोस बटलर, जेसन रॉय, डेविड मलान, जॉनी बेयरस्टो और कप्तान इयोन मोर्गन के इर्द-गिर्द घूमती है। बटलर ने पिछले मैच में दो शानदार उपलब्धि हासिल की। उन्होंने टी-20 इंटरनेशनल में अपना पहला शतक लगाया। वे इसके साथ ही खेल के तीनों फॉर्मेट में शतक लगाने वाले इंग्लैंड के पहले बल्लेबाज भी बन गए। बटलर शनिवार को मैच में एक बार फिर अपनी लय को जारी रखना चाहेंगे। इंग्लैंड के लिए एक और सकारात्मक चीज यह है कि कप्तान इयोन मोर्गन लय में लौट आए हैं।

उन्होंने पिछले मैच में 36 गेंदों में 40 रन बनाए और बटलर के साथ 112 रन की साझेदारी की। गेंदबाजी के मोर्चे पर मोईन अली और आदिल राशिद की स्पिन जोड़ी अब तक बेहतरीन रही है, जबकि क्रिस वोक्स, क्रिस जॉर्डन ने फास्ट बॉलिंग डिपार्टमेंट में टीम के लिए अच्छा योगदान दिया है। इंग्लैंड को हालांकि बाएं हाथ के तेज गेंदबाज टायमल मिल्स की कमी खलेगी। वे अपने पिछले मैच में मांसपेशियों में खिंचाव के कारण टूनार्मेंट से बाहर हो गए है।

दक्षिण अफीका भले ही लगातार तीन मैच जीतने में सफल रहा हो, लेकिन टीम का अभियान प्रभावशाली नहीं रहा है। वे ऑस्ट्रेलिया जैसे बेहतर टीम के खिलाफ दबाव में बिखर गए और टेम्बा बावुमा की टीम इंग्लैंड के खिलाफ कोताही बरतने की गलती नहीं कर सकते। अगले दौर में पहुंचने के लिए दक्षिण अफ्रीका की किस्मत पूरी तरह से उनके के हाथ में नहीं है। टीम को ऑस्ट्रेलिया के मुकाबले नेट रनरेट बेहतर करने के लिए इंग्लैंड के खिलाफ बड़े अंतर से जीत की जरूरत है या उम्मीद करनी होगी कि वेस्टइंडीज ऑस्ट्रेलिया को बड़े अंतर से हराए। दक्षिण अफ्रीका बल्लेबाजी डिपार्टमेंट में क्विंटन डिकॉक, एडेन मार्कराम, रासी वान डर डुसेन, टेम्बा बावुमा और डेविड मिलर पर निर्भर करेगा, जबकि बॉलिंग अटैक का नेतृत्व टी-20 के टॉप गेंदबाज तबरेज शम्सी करेंगे। इस डिपार्टमेंट में एनरिच नोट्र्जे और ड्वेन प्रीटोरियस ने उनका अच्छा साथ दिया है।

टीमें

दक्षिण अफ्रीका : दक्षिण अफ्रीकाः टेम्बा बावुमा (कप्तान), केशव महाराज, क्विंटन डिकॉक (विकेटकीपर), ब्योर्न फोर्टुइन, रीजा हेंड्रिक्स, हेनरिक क्लासेन, एडेन मार्कराम, डेविड मिलर, डब्ल्यू मुलडर, लुंगी एनगिडी, एनरिच नोर्किया, ड्वेन प्रिटोरियस, कैगिसो रबाडा, तबरेज शम्सी, रासी वान डर डुसेन।

इंग्लैंड : इयोन मोर्गन (कप्तान), मोईन अली, जॉनी बेयरस्टो, सैम बिलिंग्स, जोस बटलर, टॉम करेन, क्रिस जॉर्डन, लियाम लिविंगस्टोन, डेविड मलान, आदिल राशिद, जेसन रॉय, डेविड विली, क्रिस वोक्स, मार्क वुड।

जसप्रीत बुमराह की इस गेंद का बल्लेबाज पर नहीं था कोई जवाब, एमएस धोनी भी हुए ताली बजाने को मजबूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम ने शुक्रवार को यूएई और ओमान में खेले जा रहे टी-20 वर्ल्ड कप में कमजोर स्कॉटलैंड को आसानी से 8 विकेट से पीट दिया। टीम की इस जीत में गेंदबाजों ने अहम भूमिका निभाई और स्कॉटलैंड को मात्र 85 रनों पर ही समेट दिया। इस मैच में वैसे तो रविंद्र जडेजा और मोहम्मद शमी ने शानदार गेंदबाजी करते हुए सर्वाधिक 3-3 विकेट झटके, लेकिन यहां जसप्रीत बुमराह के प्रदर्शन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, जिन्होंने स्कॉटलैंड की पारी का आखिरी विकेट झटकते हुए पारी समाप्त कर दी। उन्होंने 18वें ओवर की चौथी गेंद पर मार्क वॉट को क्लीन बोल्ड करते हुए अपना दूसरा विकेट झटका। इस दौरान उनकी यॉर्कर इतनी शानदार थी कि टीम का मैच देख रहे मेंटॉर धोनी भी खुद को ताली बजाने से रोक नहीं सके।

इसका वीडियो आईसीसी ने भी शेयर किया है। इस मैच में भारतीय गेंदबाजों ने शुरू से ही स्कॉटिश बल्लेबाजों पर लगाम लगाए रखी और इसे आखिर तक बरकरार रखा। स्कॉटलैंड की तरफ से सलामी बल्लेबाज जॉर्ज मुंसी ने 19 गेंदों पर चार चौके और एक छक्के की मदद से सर्वाधिक 24 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में दिग्गज स्पिनर आर अश्विन के खिलाफ लगातार तीन चौके लगाए। उनके अलावा माइकल लीस्क ने 21 रनों का योगदान दिया। स्कॉटलैंड से मिले 86 रनों के मामूली लक्ष्य को स्टार बल्लेबाजों से सजी भारतीय टीम ने मात्र 6.3 ओवर में हासिल कर लिया। ऐसा होते ही भारत का नेट रनरेट प्लस 1.619 हो गया, जो ग्रुप की छह टीमों में सर्वश्रेष्ठ है। पहले स्थान पर काबिज पाकिस्तान का नेट रनरेट भी प्लस 1.065 है। अफगानिस्तान के नेट रनरेट प्लस 1.481 को पीछे छोड़ने के लिए भारत को इस मैच में लक्ष्य को 7.1 ओवर में हासिल करना था। केएल राहुल और रोहित शर्मा ने पहले पांच ओवर में ही 70 रन बना डाले। राहुल ने 19 गेंद में 50 और रोहित ने 16 गेंद में 30 रन बनाए। भारत के 50 रन चार ओवर में बन गए, जो इस टूनार्मेंट का सबसे तेज अर्धशतक है। भारतीय बल्लेबाजों ने मिलकर 11 चौके और पांच छक्के लगाए।

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान इंजमाम उल हक ने बताया, कौन सा भारतीय खिलाड़ी विपक्षी टीम की रीढ की हड्डी तोड़ देता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान इंजमाम उल हक टीम इंडिया को अपनी क्षमता के अनुसार खेलते हुए देखकर बेहद खुश हैं। उन्होंने भारत के सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा की जमकर तारीफ की और कहा कि वो किसी भी टीम की रीढ़ तोड़ सकते हैं। शुक्रवार को टीम इंडिया ने स्कॉटलैंड के खिलाफ बड़ी जीत दर्ज की। इससे पहले उसने बुधवार को अफगानिस्तान को बड़े अंतर से हराया था। हालांकि भारत को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए नामीबिया को ना सिर्फ बड़े अंतर से हराना होगा बल्कि इस बात पर निर्भर होना होगा कि अफगानिस्तान रविवार को न्यूजीलैंड को बड़े अंतर से हराए। स्कॉटलैंड के खिलाफ जीत से भारत का नेट रन रेट +1.619 हो गया है।

इंजमाम ने अपने यू ट्यूब चैनल में कहा,' भारत का चयन बेहतर हो गया है और मैं ऐसा इसलिए कहता हूं क्योंकि उन्होंने अश्विन को टीम मे शामिल किया और रोहित से ओपनिंग कराई। दूसरे मैच में उन्होंने रोहित को 3 पर बल्लेबाजी करने भेजा और दिखाया कि आप अपने खिलाड़ियों के बारे में आश्वस्त नहीं हैं।

रोहित वनडे और टी 20 इंटरनेशनल में उस तरह के खिलाड़ी हैं अकेले ही खेल का रुख बदल सकते हैं और उन्होंने राशिद खान के खिलाफ शुरूआत की जो अफगानिस्तान के मुख्य खिलाड़ी हैं। उन्होंने वास्तव में भारत की गति को सुनिश्चित किया।' रोहित ने अफगानिस्तान के खिलाफ 47 गेंदों में तीन छक्कों और 8 चौंको की मदद से 74 रनों की पारी खेली। इंजमाम रोहित के विपक्षी टीम के प्रमुख गेंदबाज के पीछे जाने से काफी प्रभावित दिखे। उन्होंने राशिद खान के खिलाफ अटैक किया। राशिद ने इस मैच में 36 रन दिए और कोई विकेट नहीं मिली। उन्होंने आगे कहा,'इस तरह के हमले से विपक्ष की रीढ़ की हड्डी टूट जाती है। जब उन्होंने राशिद को 2 छक्के मारे तो बाकी गेंदबाज भी हताश हो गए। यह रोहित की क्लास है। उनकी खासियत यह है कि वह विपक्षी टीम के बेस्ट गेंदबाज पर हमला करते हैं। वह उस शाम शानदार खेले।

वीरेंद्र सहवाग की सलाह, पांच खिलाड़ियों को अगले टी-20 विश्व कप के लिए तैयार करे टीम इंडिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 विश्व कप 2021 में पहले दो मैच गंवाने के बाद टीम इंडिया ने जोरदार कमबैक किया है। पहले अफगानिस्तान और फिर स्कॉटलैंड को धूल चटाने के साथ भारत ने सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदों को बरकरार रखा है। हालांकि, भारत अंतिम चार में अपनी जगह फिक्स कर पाएगी या नहीं इसका फैसला न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाले मैच में अफगानिस्तान की जीत या हार पर निर्भर है। इस बीच, भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने उन पांच युवा खिलाड़ियों के नाम बताए हैं, जिनको वीरू के हिसाब से अगले साल ऑस्ट्रेलिया में होने वाले विश्व कप के लिए अभी से तैयार किया जाना चाहिए। फेसबुक पर अपने शो 'वीरूगीरी' पर बात करते हुए कहा, 'इशान किशन, सूर्यकुमार यादव, केएल राहुल और शायद अगले वर्ल्ड कप में ऋतुराज गायकवाड़ और श्रेयस अय्यर भी होंगे। इस खिलाड़ियों को

तैयार किया जाना चाहिए और इनको मौका मिलना चाहिए क्योंकि यह भविष्य हैं। तो, बाकी सीनियर खिलाड़ियों को आराम दिया जा सकता है ताकि यह प्लेयर्स घरेलू टी-20 सीरीज में खेल सकें और अनुभव हासिल करके खुद को अगले विश्व कप के लिए तैयार कर पाए।' इशान और सूर्यकुमार यूएई और ओमान में खेले जा रहे विश्व कप में टीम इंडिया हिस्सा है, पर उनको अबतक अपना दमखम दिखाने का भरपूर मौका नहीं मिल सका है। वहीं, अय्यर को रिजर्व खिलाड़ी के तौर पर टीम में रखा गया है। भारत को टी-20 विश्व कप 2021 के ठीक बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज खेलनी है, जिसमें माना जा रहा है कि रोहित शर्मा को नया टी-20 कप्तान बनाया जा सकता है और कई युवा खिलाड़ियों को मौका मिल सकता है। विराट कोहली ने पहले ही ऐलान कर दिया है कि वह विश्व कप के बाद टी-20 टीम की कप्तानी छोड़ देंगे और बतौर बल्लेबाज टीम में खेलेंगे। इस सीरीज से राहुल द्रविड़ का बतौर हेड कोच कार्यकाल भी शुरू होगा।

उत्साहपूर्वक मनाया गया भैयादूज का पर्व

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। भाईबहन के प्यार का प्रतीक भैया दूज का पर्व शनिवार को उत्साह के साथ मनाया गया। इस दौरान भाइयों के माथे टीको से सजे दिखाई दिए। दिन भर बहनों का अपने भाइयों के यहां टीका लगाने के लिए पहुंचने का सिलसिला जारी रहा। माथे पर टीका लगाते हुए बहनों ने अपने भाइयों की सलामती व दीघार्यु की दुआ मांगी। वहीं सुबह से ही दुकानों पर खरीदारी करने के लिए महिलाओं और युवतियों का तांता लगा रहा। मिठाइयों से लेकर आकर्षक तोहफों की खरीदारी की गई। बहन भाई के प्रेम को दशार्ता भैया दूज का त्योहार जिले के विभिन्न बाजारों के अलावा ग्रामीणांचलों में धूमधाम से मनाया गया। भाईबहन के अटूट प्रेम को सूत्र में पिरोते इस त्योहार को जितना उत्साह बहनों में दिखा उतने ही भाई भी उत्साहित दिखे। भाइयों ने भी अपनी बहनों को स्नेह स्वरूप उपहार दिए। बाजार में महिलाओं और युवतियों ने जमकर खरीदारी की। मंदिरों में इस मौके पर सुबह से ही पूजा.अर्चना के लिए तांता लगा रहा। धनतेरस छोटी दीपावली लक्ष्मी पूजन गोवर्धन पूजा और भैया दूज के साथ ही दीपावली का पर्व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हो गया। बताया जाता है कि भाई दूज का पर्व भाई.बहन के रिश्ते पर आधारित पर्व है जिसे बड़ी श्रद्धा और परस्पर प्रेम के साथ मनाया जाता है। रक्षाबंधन के बाद भाईदूज ऐसा दूसरा त्योहार है जो भाई बहन के अगाध प्रेम को समर्पित है। भाई दूज का पर्व दीपावली के तीसरे दिन मनाया जाता है। इस दिन भाई को तिलक लगाकर प्रेमपूर्वक भोजन कराने से परस्पर तो प्रेम बढ़ता ही है भाई की उम्र भी लंबी होती है। भाईदूज के रूप में मनाए जाने वाले त्योहार के लिए ऐसा माना जाता है कि दीपावली के बाद भाई दूज के दिन ही यमराज ने अपने बहन यमी के घर का रुख किया था यमराज की बहन यमी ने उनके माथे पर तिलक लगाकर सलामती की दुआ मांगी थी। इस पर यमराज ने अपनी बहन को हमेशा इस दिन उसके पास आने का वचन दिया। मान्यता है कि इस दिन जो भी भाई अपनी बहन से माथे पर तिलक लगाता है उसकी लंबी आयु होती है। एक अन्य कथा के अनुसार भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध करने के बाद अपनी बहन सुभद्रा के घर का रुख किया था। कृष्ण की बहन सुभद्रा ने दिए जलाकर भाई का स्वागत किया था और तिलक लगाकर लंबी उम्र की दुआ मांगी थी।

कायस्थ समाज ने भगवान चित्रगुप्त का किया पूजा

ज्ञानपुर। जनपद में कायस्थ समाज ने धूमधाम के साथ भगवान चित्रगुप्त का पूजन अर्चन विधि विधान पूर्वक किया गया। दीपावली के एक दिन बाद कायस्थ समाज द्वारा भगवान चित्रगुप्त की पूजा करने का विधान है। शुक्रवार को मनोज अम्बष्टद्व के आवास पर भारी संख्या में जुटे कायस्थ समाज द्वारा सुबह कलम दवात की पूजा की गयी एवं सांयकाल दुधनाथ मंदिर के पास भगवान चित्रगुप्त मंदिर पर कायस्थ बंधुओ द्वारा भगवान का पूजन अर्चन एवं हवन विधि विधान द्वारा किया गया। मनोज अम्बष्टद्व ने बताया कि कायस्थ समाज दीपावली के एक दिन बाद भगवान चित्रगुप्त की पूजा करते है। दीपावली के दिन सांयकाल कलम की पूजा करने के बाद २४ घण्टे के लिए कलम का प्रयोग नही किया जाता है।

जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों में मारपीट, दोनों पक्ष घायल

ज्ञानपुर। स्थानीय थानाक्षेत्र क्षेत्र के भिदिउरा गांव में शुक्रवार को जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई। इसमें एक पक्ष के भिदिउरा गांव निवासी हरिशंकर मौर्या तथा दूसरे पक्ष से राजेंद्र मौर्य के परिजनों के बीच आज शुक्रवार को कहासुनी होते.होते मारपीट शुरू हो गई। इस दौरान मारपीट में महिलाओं सहित दोनों पक्ष के लोग घायल हो गए। घटनास्थल पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों पक्ष को उपचार हेतु जिला चिकित्सालय चेतसिंह ले गयी। दोनों पक्षों का मेडिकल परीक्षण कराया गया। दोनों के माथे में काफी चोट आई है। जानकारी के अनुसार जमीन को लेकर हरिशंकर मौर्या और राजेंद्र प्रसाद मौर्या के बीच काफी अर्से से विवाद चला आ रहा है।

आकाश चोपड़ा ने बताया, रोहित शर्मा, विराट कोहली नहीं इस अकेले खिलाड़ी के बिना आधी हो जाती है टीम इंडिया की ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 विश्व कप 2021 के सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए टीम इंडिया का संघर्ष जारी है। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के हाथों करारी हार झेलने के बाद विराट कोहली एंड कंपनी ने अफगानिस्तान और स्कॉटलैंड के खिलाफ लगातार दो बड़ी जीत दर्ज की है। हालांकि, टीम की तकदीर का फैसला अब अफगानिस्तान के हाथों में है, जो 7 नवंबर को न्यूजीलैंड से भिड़ेगी। आखिरी दो मैचों में भारतीय बल्लेबाजों और गेंदबाजों दोनों ने ही अपना दमखम दिखाया है, पर टीम इंडिया का एक खिलाड़ी ऐसा भी रहा है जिसने सभी मैचों में टीम की जीत के लिए पूरा जोर लगाया है। और वह रहे हैं जसप्रीत बुमराह, जिन्होंने हर मुकाबले में अपनी गेंदबाजी से छाप छोड़ी है और

पिछली दो धमाकेदार जीत में भी अहम किरदार निभाया है। यही वजह है कि भारत के पूर्व क्रिकेटर और कमेंटेटर आकाश चोपड़ा का मानना है कि बुमराह के बिना कोहली की यह टीम आधी नजर आती है। अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए आकाश चोपड़ा ने कहा, 'बिलकुल ईमानदारी से बात करते हैं, यह टीम अचानक से एक खिलाड़ी को निकालने के बाद आधी लगती है और वह खिलाड़ी रोहित, राहुल या कोहली नहीं, बल्कि जसप्रीत बुमराह हैं। बुमराह हमारी इंश्योरेंस पॉलिसी हैं। उन्होंने भारत को कमाल की शुरूआत दी। बुमराह की कहानी इन दिनों ऐसी है कि वह या तो यॉर्कर फेंक रहे हैं या फिर धीमी गति की गेंद। वह इस टूनार्मेंट में लाजवाब रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि कुछ गेंदबाजी लेंथ के ऊपर भी की जा सकती है, जो वह कर सकते हैं, पर इस समय कर नहीं रहे हैं।'

बुमराह ने स्कॉटलैंड के खिलाफ खेले गए मुकाबले में अपने 3.4 ओवर के स्पैल में महज 10 रन खर्च किए और दो बड़े विकेट चटकाए। इस टूनार्मेंट में यॉर्कर किंग के नाम से मशहूर बुमराह का प्रदर्शन बेमिसाल रहा है और उन्होंने अबतक पांच विकेट अपने नाम किए हैं। भारत के इस तेज गेंदबाज का इकॉनमी भी छह के अंदर का रहा है। भारत ने स्कॉटलैंड को हराकर सेमीफाइनल में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को जिंदा रखा है। टीम को अपना अगला मैच 8 नवंबर को नामीबिया के खिलाफ खेलना है।

केदारनाथ धाम का दर्शन कर निहाल हुए लोग

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के केदार नाथ धाम की यात्रा पर 5 नवम्बर को जनपद के चयनित 5 शिवालयों में आजादी का अमृत महोत्सव एवं दीपोत्सव का आयोजन किया गया। इस श्रृंखला मे बाबा तिलेश्वर नाथ धाम मे आयोजित विशेष धार्मिक अनुष्ठान मे बड़ी संख्या में शामिल होकर लोगो ने लाइव प्रसारण का अवलोकन किया। कार्यक्रम के दौरान प्रवुद्ध जनों को सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री के केदारनाथ धाम मंदिर में दर्शन पूजन एवं आदि गुरु शंकराचार्य जी की समाधि व प्रतिमा का लोकार्पण व विभिन्न विकास कार्यों के उदघाटन कार्यक्रम का सजीव प्रसारण तथा भजन कीर्तन रूद्राभिषेक प्रभुद्ध नागरिक संतगणो का सम्मान समारोह का आयोजन करने की योजना बनाई गई थी। इसके दृष्टिगत जनपद के 5 शिवालयों बुढ़ेनाथ शिव मंदिर असनाव औकारनाथ शिव मंदिर पल्हैया नाथ शिव मंदिर तिलगा गोपीगंज हरिहर नाथ शिव मंदिर ज्ञानपुर शिव मंदिर द्वारिकापुर औराई में प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का सजीव प्रसारण एवं भजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गोपीगंज के तिलगा गांव स्थित तिलेश्वर नाथ धाम मे ग्राम प्रधान द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे बड़ी संख्या में लोग शामिल होकर कार्य क्रम का लाइव प्रसारण देख अभिभूत हो गये। मुख्य अतिथि रमेश चन्द्र पांडेय का स्वागत प्रधान श्रीमती सुमन जिलाजीत दुबे बीडीसी दीपक तिवारी ने किया तथा त्रिवेणी दुबे राजधर दुबे अनिल दुबे बिष्णु दुबे शिवम दुबे लम्बू राविन मिश्रा राजेश मिश्रा आशू दुबे किशन दुबे जटा शंकर पाण्डेय विनय दुबे विरेंद्र सिंह शीतला प्रसाद दुबे मिथिलेश दुबे रोहित यादव कमलेश दुबे राकेश दुबे मनीष दुबे उत्तम दुबे दुर्गेश मिश्रा शिवम् तिवारी भोलु सुमित पाण्डेय सोमनाथ दुबे अभिषेक दुबे मंटु आलोक मिश्रा अनुज मोदनवाल विष्णु मिश्रा महेश दुबे आदि मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाई गई चित्रगुप्त पूजा

अखंड भारत संदेश

सीतामढ़ी। कायस्थ समाज के लोगों ने शनिवार को श्री चित्रगुप्त महाराज की पूजा.अर्चना की। इस अवसर पर कई स्थानों पर प्रतिमाएं स्थापित कर बड़े धूमधाम से चित्रगुप्त महाराज की पूजा.अर्चना की गई। कायस्थ समाज के लोगों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कलम दवात कॉपी व पुस्तक की पूजा की गई। नगर के बालीपुर मोहल्ला में कायस्थ समाज ने भगवान श्री चित्रगुप्त जी महाराज की पूजा.अर्चना की व मनोवांछित कामना की। पौराणिक आख्यानों के अनुसार सृष्टि की रचना के बाद ब्रह्माजी चिंतातुर हो गए। चिंता का कारण था सकल सृष्टि की देखरेख एवं लेखा.जोखा रखना। कोई उपाय न सूझने पर ब्रह्माजी 12 हजार वर्ष की अखंड समाधि में लीन हो गए। इसके बाद उनकी काया से एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ जिनका नाम ब्रह्माजी ने कायस्थ रखा और कहा कि समस्त जीवों के कर्मों का लेखा.जोखा रखना ही तुम्हारा दायित्व है। युवावस्था में उनका विवाह इरावती एवं शोभावती नामक कन्याओं से हुआ जिनकी प्रथम पद्यी से चार एवं द्वितीय से आठ पुत्र उत्पन्न हुए। इन पुत्रों का नामकरण इनके शासित प्रदेश के आधार पर क्रमशरू श्रीवास्तव निगम कर्ण कुलश्रेष्ठ माथुर सक्सेनाए गौड़ अस्थाना एवं वाल्मिकी आदि किया गया। आज भी कायस्थ वंश की उपजातियां इन्हीं नामों से अपनी पहचान कायम रखे हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का आगमन आज

ज्ञानपुर। मिशन मोदी अगेन पीएम के जिलाध्यक्ष अजय कुमार सिंह ने बताया कि मिशन मोदी अगेन पीएम काशी प्रांत के समस्त पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि ७ नवम्बर दिन रविवार समय 1० बजे सुबह एक रेस्टोरेट में मुख्य अतिथि व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामगोपाल काका का आगमन होने जा रहा है। अध्यक्ष ने जनपद के समस्त पदाधिकारियो व कार्यकर्ताओ की उपस्थिति अनिवार्य हो।

मासिक बैठक सम्पन्न

ज्ञानपुर। जिला समाजवादी पार्टी कार्यालय पर जिला इकाई की मासिक बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें मतदाता सूची मे नाम बढाने सहित वई बिन्दुओ पर चर्चा की गयी। जिलाध्यक्ष बाल विद्या विकास यादव ने कहा कि बूथो पर मतदाताओं का नाम बढवाने में कोताही न बरते कार्यकर्ता। आगामी चुनाव मे भ्रष्टाचार की आकंठ में डूबी भाजपा सरकार को उखाड़ कर फेंक देंगी जनता। अब जनता की पीड़ा असहनीय है और सरकार अपनी मस्ती में पड़ी है ऐसे अत्याचार भ्रष्टाचार बलात्कारीयो को संरक्षण दे रही है सरकार। नौजवानों किसानों और मजदूरों के पीड़ा को आवाज को दबने नहीं देंगे।

अयोध्या में दर्दनाक हादसा, ट्रेन से कटकर दो बच्चों समेत एक ही परिवार के चार लोगों की मौत

अयोध्या (एजेंसी)। भाई दूज पर यूपी के अयोध्या में दर्दनाक हादसा हो गया। थाना महाराजगंज अंतर्गत ग्राम दुगार्पुर रमपुरवा में मानव रहित रेलवे क्रासिंग पर बाइक सवार एक परिवार के पति, पत्नी व दो वर्षीय बच्चे की ट्रेन के इंजन से कटकर दर्दनाक मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल चार वर्षीय पुत्र को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी भी मौत हो गई। एक ही परिवार के चार लोगों की मौत से क्षेत्र में शोक का माहौल है। महाराजगंज थानाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार राय ने बताया कि मृतक रामचंद्र निषाद (38) पुत्र भैरवदीन निषाद, विमला निषाद (34) पत्नी रामचंद्र निषाद, चार वर्षीय पुत्र विमल निषाद व दो वर्षीय पुत्र गणेश निषाद ग्राम रामपुर पुवारी मांझा के मजरे धनयी का पुरवा थाना महाराजगंज के निवासी थे।

फ्री राशन बनाम पेट्रोल-डीजल

केजरीवाल ने पीएम को लिखा पत्र तो बीजेपी ने सीएम आवास के बाहर दिया धरना

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में मुफ्त राशन और पेट्रोल-डीजल पर टैक्स को लेकर राजनीति तेज हो गई है और अब आम आदमी पार्टी (आप) और दिल्ली भाजपा ने एक दूसरे के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को जहां बढ़ती महंगाई और आम आदमी की दुहाई देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिख केंद्र की फ्री राशन योजना को और छह महीने बढ़ाने का अनुरोध किया है। वहीं, दिल्ली भाजपा ने आज मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास के पास धरना देकर पेट्रोल तथा डीजल पर वैट में कटौती करने की मांग की।

केंद्र द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त राशन वितरण को 30 नवंबर से आगे बढ़ाने से इनकार के बाद मुख्यमंत्री केजरीवाल ने शनिवार को कहा कि उनकी सरकार ने मुफ्त राशन देने की अपनी योजना छह महीने के लिए मई 2022 तक बढ़ा दी है। केजरीवाल ने आज ट्वीट कर कहा, "महंगाई बहुत ज्यादा हो गई है। आम आदमी को दो वक्त की रोटी भी मुश्किल हो रही है। कोरोना की वजह से कई बेरोजगार हो गए प्रधानमंत्री जी, गरीबों को मुफ्त राशन देने की इस योजना को कृपया छह महीने और बढ़ाया जाए। दिल्ली सरकार अपनी फ्री राशन योजना छह महीने के लिए बढ़ा रही है। वहीं, दूसरी तरफ दिल्ली भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता की अगुवाई में भाजपा कार्यकताओं ने भी शनिवार को फ्लैगस्टाफ रोड पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास के पास धरना देकर पेट्रोल तथा डीजल पर मूल्य वर्धित कर (वैट) में कटौती की मांग की। गुप्ता ने कहा कि जब तक केजरीवाल पेट्रोल और डीजल पर वैट में कमी की घोषणा नहीं करते, पार्टी कार्यकर्ता आंदोलन जारी रखेंगे। उन्होंने दावा किया कि केजरीवाल सरकार को आम आदमी की फिक्र नहीं है और इस वजह से वह पेट्रोल तथा डीजल की कीमतों पर कोई ध्यान नहीं दे रही। गुप्ता ने कहा कि मोदी सरकार ने जनता की भावनाओं को समझते हुए एक्साइज ड्यूटी में कटौती कर देशवासियों को तोहफा दिया है, लेकिन केजरीवाल सरकार को जनता की चिंता नहीं है, इसलिए पेट्रोल-डीजल पर वो श्अळ कम नहीं करना चाहती। भाजपा शासित प्रदेशों द्वारा पेट्रोल-डीजल पर श्अळ कम करने से वहां की जनता में खुशी का माहौल है, लेकिन दिल्ली की केजरीवाल सरकार अभी भी सो रही है।

पेट्रोल-डीजल पर चित्त हुआ विपक्ष? अपनी सरकारों में टैक्स न घटाया तो होगी मुश्किल, उठने लगी मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार की ओर से पेट्रोल और डीजल पर टैक्स में कटौती के बाद भाजपा शासित राज्यों ने भी वैट घटाया है। इसके चलते यूपी, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक जैसे राज्यों में पेट्रोल और डीजल के दाम 100 रुपये से नीचे आ गए हैं। भले ही विपक्षी दल इसे उपचुनाव में भाजपा को मिले झटके का असर बता रहे हैं, लेकिन खुद उनके ही शासन वाले राज्यों में टैक्स कटौती न होना सवाल खड़े करता है। अब तक सिर्फ पंजाब में ही टैक्स में कटौती किए जाने के संकेत मिले हैं। इसके अलावा अन्य राज्यों में ऐसी कोई सुगबुगाहट नहीं है। ऐसे में यह साफ है कि महंगाई के मसले पर अब भाजपा उलटे विपक्षी दलों को घेरना शुरू कर सकती है। राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष सतीश पूनियां ने शनिवार को कहा कि राज्य की कांग्रेस सरकार को डीजल व पेट्रोल पर मूल्य संवर्धित कर (वैट) कम करना चाहिए ताकि आम जनता को राहत मिल सके। पूनियां ने कहा कि अगर राज्य सरकार वैट घटाती है तो लोगों को यह ईंधन 10 रुपये और सस्ता मिल सकता है। उन्होंने कहा, 'डीजल और पेट्रोल पर उत्पाद शुल्क में कमी के मोदी सरकार के फैसले से आम आदमी को काफी राहत मिली है। गहलोत सरकार को वैट कम करना चाहिए ताकि राजस्थान में लोगों को पंजाब व हरियाणा जैसे पड़ोसी राज्यों की तरह सस्ता ईंधन मिल सके।' पूनिया ने कहा कि राज्य सरकार को जनहित में जल्द फैसला करना चाहिए।

सीन से गायब नहीं होंगे समीर वानखेड़े, आर्यन खान केस की जांच में होगा यह रोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक दिन पहले आर्यन खान केस के सिलसिले में एक चौंकाने वाली खबर सामने आई थी। जिसमें सामने आया कि समीर वानखेड़े को क्रूज ड्रग्स केस समेत 6 मामलों की जांच से बाहर कर दिया गया है। लेकिन नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो का कहना है कि समीर वानखेड़े को आर्यन खान केस की जांच से पूरी तरह से नहीं हटाया गया है। वे अभी भी जांच में सहयोग करेंगे। ब्यूरो के अधिकारियों के मुताबिक उनका रोल अब चेंज हो गया है। आर्यन खान केस की जांच कर रहे नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के उप महानिदेशक संजय कुमार सिंह ने कहा कि समीर वानखेड़े को क्रूज ड्रग्स केस समेत 6 मामलों की जांच टीम से हटाने का निर्णय प्रशासनिक फैसला है। हालांकि समीर वानखेड़े ब्यूरो के जोनल डायरेक्टर हैं, इसलिए वे इस जांच में सहयोग करेंगे।

दरअसल, महाराष्ट्र सरकार में मंत्री नवाब मलिक के आरोपों के बाद समीर वानखेड़े के खिलाफ विभागीय जांच शुरू हो गई है। समीर वानखेड़े पर जबरन वसूली और अन्य अनियमितताओं के

आरोप हैं। शनिवार को मुंबई पहुंचे संजय कुमार सिंह ने एएनआई से बातचीत में कहा, "हमने छह मामलों की जांच के लिए अधिकारी को बदला है। वह (समीर वानखेड़े) मुंबई के जोनल निदेशक हैं, हम निश्चित रूप से जांच में उनकी सहायता लेंगे। बता दें कि केंद्रीय एजेंसी नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने शुक्रवार को एक बयान जारी किया और स्पष्ट किया कि आर्यन खान केस की जांच का स्थानांतरण ₹राष्ट्रीय और अंतरार्ष्ट्रीय प्रभाव₹ के कारण हुआ है। किसी भी अधिकारी या अधिकारी को उनकी वर्तमान भूमिकाओं से नहीं हटाया गया है और वे तब तक जांच में सहयोग करते रहेंगे, जब तक कि उनके खिलाफ कोई विशेष आदेश जारी नहीं किया जाता है।

शुक्रवार को ब्यूरो के फैसले की घोषणा के बाद समीर वानखेड़े ने कहा था, ₹मुझे जांच से नहीं हटाया गया है। अदालत में मेरी रिट याचिका थी कि मामले की जांच केंद्रीय एजेंसी से की जानी चाहिए। इसलिए दिल्ली एनसीबी की एसआईटी द्वारा आर्यन मामले और समीर खान मामले की जांच की जा रही है।₹ यह दिल्ली और मुंबई की एनसीबी टीमों के बीच आपसी समन्वय है। एनसीबी के एक अधिकारी ने एएनआई को बताया कि समीर वानखेड़े केंद्रीय एजेंसी के उप महानिरीक्षक रैंक के अधिकारी हैं और किसी भी मामले के जांच अधिकारी बनने के लिए बहुत वरिष्ठ हैं। अधिकारी ने कहा, ₹वह सिर्फ क्षेत्र की किसी भी जांच की निगरानी करते हैं। इसलिए यह कहना निराधार है कि समीर वानखेड़े को इन मामलों की जांच से हटाया गया। वास्तव में, वह कभी भी इन मामलों की जांच नहीं कर रहे थे।

अखिलेश के गढ़ में गरजे सीएम योगी, अब माफियाओं का साथ देने वालों पर चलेगा बुलडोजर

इटावा (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अभी माफियाओं पर बुलडोजर चल रहा है इसके बाद उनके सरपरस्तों का नंबर आएगा। बिना किसी का नाम लिए सीएम ने आगाह किया कि जिन्हें जेल में डाला जा रहा है उनसे हाथ मिलाने वालों की सरकार आई तो प्रदेश का क्या होगा? ऐसे लोगों के मंसूबों को समझना जरूरी है। पिछली सरकारें बेईमानी, भ्रष्टाचार करती रहीं। पहले पैसा कब्रिस्तानों की बाउंड्रीवाल बनाने में जाता था, अब गरीबों के काम आ रहा है। यह बातें मुख्यमंत्री ने शनिवार को इटावा और औरैया में जनसभा को संबोधित करते हुए कहीं। बता दें कि इटावा मुलायम सिंह और अखिलेश यादव का गढ़ माना जाता है। इटावा में आजादी के बाद बनी प्रदेश की पहली सेंट्रल जेल का उद्घाटन करने के साथ ही मुख्यमंत्री ने 454 करोड़ की योजनाओं का लोकार्पण और 13 करोड़ की 27 योजनाओं का शिलान्यास किया।

आंखों में जलन, सांस लेने में दिक्कत, दिमाग पर भी होता है असर...

एक्सपर्ट ने बताया कितना खतरनाक है पलूशन

नई दिल्ली नई दिल्ली (एजेंसी)। दीपावली के बाद हवा में जहर घुलने से प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। खासकर राजधानी दिल्ली में विजिबिलिटी बहुत कम हो गई है। प्रदूषण से शहरवासियों को कई दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों को आंखों में जलन, सांस लेने में दिक्कत और दिमाग पर भी असर पड़ने लगा है। एक्सपर्ट का कहना है कि पिछले दस पंद्रह दिनों में अस्थमा और एलर्जी वाले लोगों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। दिवाली के बाद हवा और जहरीली हो गई है। दिल्ली समेत तमाम महानगरों में शहरवासियों का बाहर निकलना भी दूभर हो गया है। एक्सपर्ट का कहना है कि दिवाली के बाद से स्थिति और चिंताजनक हो गई है। सर गंगा राम अस्पताल में बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. धीरेन गुप्ता ने बताया कि पिछले 10-15 दिनों में हमने अस्थमा और एलर्जी वाले लोगों में अचानक वृद्धि देखी है। उन्हें अधिक इनहेलेशन थेरेपी की आवश्यकता होती है। अभी हमारे

पास अस्थमा के गंभीर दौरे के 3 मरीज भर्ती हैं।

उन्होंने बताया कि यह रेस्पिरेटरी सिंकाइटियल वायरस का मौसम है, ऐसे में प्रदूषण के कारण जिन बच्चों को रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट इंफेक्शन हो रहा है, उन्हें सांस की समस्या ज्यादा हो रही है। आंखों में भी है जलन। डॉ. धीरेन गुप्ता ने बताया कि हवा में प्रदूषण की मात्रा बहुत बढ़ गई है। पीएम वैल्यू इतनी खराब है कि यह आंखों को प्रभावित कर रही है, जलन पैदा कर रही है और इससे दिमाग पर भी बुरा असर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदूषण के कारण बच्चे और चिड़चिड़े हो जाते हैं।

अनिल देशमुख को 14 दिन की न्यायिक हिरासत, ईडी ने मांगी थी 9 और दिन की कस्टडी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को स्पेशल हॉलिडे कोर्ट ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। मामले की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने देशमुख की नौ दिनों की और

रिमांड मांगी थी लेकिन अदालत ने जांच एजेंसी की याचिका को खारिज कर दिया और उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया। महाराष्ट्र के पूर्व डीजीपी परम बीर सिंह के 100 करोड़ रुपए की रिश्वत के आरोपों के बाद ईडी ने राज्य के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को मनी लॉड्रिंग मामले में गिरफ्तार किया था। जिसके बाद 6 नवंबर तक कोर्ट ने ईडी को देशमुख की कस्टडी दी थी। शनिवार को स्पेशल हॉलिडे कोर्ट के समक्ष ईडी ने अनिल देशमुख को पेश किया। सुनवाई के दौरान ईडी ने कोर्ट से देशमुख की 9 और दिन की कस्टडी मांगी, जिसे कोर्ट ने नामंजूर कर दिया और देशमुख को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

बता दें कि महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को ईडी ने 12 घंटे से ज्यादा की पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया था। ईडी के अधिकारियों ने दावा किया था कि देशमुख कई सवालों का संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए थे। उन पर परम बीर सिंह ने 100 करोड़ रुपए की रिश्वत मांगने का आरोप लगाया था। जिसके बाद उन्हें गिरफ्तार किया गया था। अनिल देशमुख पर आरोप है कि गृह मंत्री रहते हुए उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग किया और बर्खास्त सिपाही सचिन वाजे के जरिए मुंबई के कई बार और रेस्तरां से 4.70 करोड़ रुपये एकत्र किए। इस मामले में ईडी ने देशमुख के अलावा उनके दो सहयोगियों कुंदन शिंदे और संजीव पलांडे को भी गिरफ्तार किया है. दोनों फिलहाल न्यायिक हिरासत में हैं।

अखिलेश यादव के जिन्ना वाले बयान पर यूपी के मंत्री की टिप्पणी, अपना नार्को टेस्ट करवाएं सपा अध्यक्ष

बालिया (एजेंसी)। यूपी सरकार में मंत्री आनंद स्वरूप शुक्ला ने पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना पर टिप्पणी करने के लिए समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए शनिवार को कहा कि यादव को अपना नार्को टेस्ट करवाना चाहिए। शुक्ला ने जिला मुख्यालय पर संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कहा कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का जिन्ना को लेकर दिया गया बयान एक सामान्य घटना नहीं है, अखिलेश यादव यूपी के मुख्यमंत्री रहे हैं, वहीं जिन्ना देश के विभाजन के दोषी हैं।

उन्होंने कहा, जिन्ना एक ऐसे खलनायक हैं, जिन्हें कोई भारतीय देखना व सुनना पसंद नहीं करता है। अखिलेश यादव किस भाव से प्रेरित होकर, किस दबाव व किस लालच में जिन्ना की जयकार व गुणगान कर रहे हैं, उन्हें स्पष्टीकरण देना चाहिए। मंत्री ने कहा कि मैं चाहूंगा कि अखिलेश यादव स्वयं आगे आकर अपना नार्को टेस्ट कराएं। उन्होंने इसके साथ ही कहा, जिन्ना का गुणगान करने वाले पाकिस्तान चले जाएं। भारत में जिन्ना जिंदाबाद करने वालों, जिन्ना का विचार रखने वालों व जिन्ना के प्रति मन में भाव रखने वाले लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है, उन्हें स्वयं पाकिस्तान चले जाना चाहिए। गौरतलब हैं कि सपा प्रमुख ने रविवार को हरदोई में एक भाषण में कहा था कि सरदार वल्लभ भाई पटेल, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और जिन्ना ने उसी संस्थान से पढ़ाई की और बैरिस्टर बने और भारत की आजादी के लिए किसी भी संघर्ष से पीछे नहीं हटे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम लिए बिना कहा था अगर कोई विचारधारा है जिस पर प्रतिबंध लगाया गया था।

अखिलेश यादव ने चाचा शिवपाल के साथ सीटों के बंटवारे से पहले दिया ये खास संदेश

कन्नौज (एजेंसी)। विधानसभा चुनाव में कामयाबी के लिए समाजवादी पार्टी का दायरा बढ़ाने में जुटे पार्टी मुखिया अखिलेश यादव ने कार्यकताओं को गुटबाजी छोड़कर एकजुट होने का पैगाम दिया है। सैफई में परिवार सहित दीवाली मनाकर लखनऊ लौटने के दौरान कार्यकताओं से मुलाकात कर उन्होंने कहा कि समाजवादी कुनबा एक हो रहा है। सरकार बनने वाली है, इसलिए कार्यकर्ता भी एकजुट हो जाएं। एक दिन पहले ही सैफई में अपने चाचा शिवपाल सिंह यादव से हाथ मिलाने का इशारा दे चुके

अखिलेश यादव ने दिवाली के मौके पर कार्यकताओं को उसी तरह का पैगाम भी दिया है। सैफई से पत्नी डिंपल यादव के साथ लखनऊ लौटने के दौरान कन्नौज के ठठिया में एक्सप्रेस-वे पर कार्यकताओं से मुलाकात की। कार्यकताओं को दीप पर्व की बधाई दी। उनसे बात की। कुछ कार्यकताओं ने जिले से जुड़ी बातें रखीं। इस पर उन्होंने सभी को दो टूक कहा कि त्योहार का मौका है, आपसी गिला-शिकवा छोड़ें। दावा किया कि सरकार अपनी ही पार्टी की बनने वाली है। समाजवादी कुंबा भी एक हो रहा है। ऐसे में मिलजुल कर पार्टी के लिए काम करें। नतीजा अच्छा आएगा। शिवपाल यादव से दूरियां मिटने का इशारा देने के बाद कार्यकताओं से भी एकजुटता का पैगाम देकर अखिलेश ने सभी को चुनाव की तैयारियों पर फोकस करने को कहा।

सरकार की ओर से पेट्रोल और डीजल में एक्साइज ड्यूटी कम करने पर उन्होंने चुटकी ली। कहा कि दो दिन पहले उपचुनाव के नतीजों के बाद सरकार को बैकफुट पर आना पड़ा। कहा कि जहां सत्ता है, वहां भी भाजपा के हाथ से सीट चली गई। लोग महंगाई से गुस्से में हैं। कहा कि अब यूपी की जनता भी महंगाई का बदला लेगी। एक्सप्रेस-वे पर अपने नेता से मिलने के लिए बड़ी संख्या में कार्यकताओं का मजमा रहा।

समुद्री सुरक्षा को भारत-फ्रांस मिलकर करेंगे मजबूत, ठरअ अजित डोभाल ने अपने समकक्ष के साथ प्रशांत क्षेत्र में सहयोग पर की चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत और रक्षा औद्योगीकरण में मदद करने के अपने प्रतिबद्धता को दोहराया है। फ्रांस ने भारत के साथ संयुक्त रूप से रिसर्च और तकनीक विकास में भी सहयोग करने की बात दोहराई है।

देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन के डिप्लोमैटिक सलाहकार इमैनुएल बोन्नी के बीच हुई वार्ता के बाद पैरिस में स्थित भारतीय दूतावास की तरफ से शनिवार को कहा गया कि फ्रांस, भारत का टेक्नोलॉजी पार्टनर बनने को लेकर उत्साहित है। फ्रांस हवा, समुद्र, जमीन और साइबर डोमेन पर भारत के साथ मिलकर मिलिट्री तकनीक को विकसित करना चाहता है। अजीत डोभाल और फ्रांस में उनके समकक्ष के बीच समुद्री सुरक्षा को लेकर चर्चा हुई और दोनों देशों ने प्रशांत-क्षेत्र

में सुरक्षा को लेकर अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।वार्षिक भारत-फ्रांस रणनीतिक वार्ता से इतर अजीत डोभाल ने फ्रांस के विदेश मंत्री जीन-वेस ली ड्रेन और रक्षा मंत्री फ्लोरेंस पार्ली से भी मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने जोर देते हुए कहा कि फ्रांस भारत का वैश्किल और इंडो-पेसिफिक पार्टनर है।

भारतीय दूतावास के मुताबिक फ्रांस ने कहा कि इंडो पेसिफिक क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग जारी रखेगा और फ्रांस ने यह भी कहा कि इस क्षेत्र में उसकी मौजूदा रणनीति में भारत उसका अहम पार्टनर है। वार्षिक रणनीति वार्ता और बैठक के दौरान दोनों देशों ने इस क्षेत्र में शांति, स्थिरता और सुरक्षा लाने में अहम रोल अदा करने पर जोर दिया। बता दें कि हाल ही में पीएम मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति की मुलाकात जब जी-20 समिट में हुई थी तब भी इस विजन पर चर्चा हुई थी।

कट्टरवादियों के आगे झुकी इमरान खान की सरकार, टीएलपी के कई नेताओं को किया रिहा

लहौर (एजेंसी)। लाहौर की एक आतंकवाद रोधी अदालत ने प्रतिबंधित इस्लामिक संगठन तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान (ळछढ) के कई नेताओं को आतंकवाद संबंधित धाराओं के तहत दर्ज मामलों के तहत जमानत दे दी है। डॉन की रिपोर्ट मुताबिक, सितंबर में पंजाब में ळछढ कार्यकताओं और सुरक्षा अधिकारियों के बीच हुए हिंसक झड़पों के बाद जमानत पाने वाले लोगों पर आतंकवाद से संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था।

अब गोली खाने से दूर होगा कोरोना संक्रमण, फाइजर के ऐलान के बाद क्यों बढ़ गईं उम्मीदें

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल के दिनों में कोरोना वायरस को लेकर कई दवाईयों की रिपोर्ट आई है। इन दवाइयों को लेकर बताया जा रहा है कि ये कोविड के केस में असरदार हैं। इन्हें कोरोना की काट बताया जा रहा है। अमेरिकी फार्मा दिग्गज मर्क और फाइजर जैसी कंपनियों ने इन दवाईयों का ऐलान किया है। इसके बाद से ही यह सवाल पूछा जा रहा है कि क्या गोलियों से भी कोरोना से निजात पाई जा सकती है... कोविड के गंभीर रूप से बचने के लिए और अस्पताल में भर्ती होने से बचने के लिए कोविड के लक्षण दिखाई देते हुए इस दवाई को लिया जा सकता है। कोविड बीमारी के शुरूआत से ही इस तरह की दवाई की तलाश थी। दोनों कंपनियों का कहना है कि क्लिनिकल ट्रायल्स से अस्पताल में भर्ती होने के जोखिम में भारी कमी देखी गई है।

यदि इन दवाओं के प्रभावों की आधिकारिक पुष्टि हो जाती है तो यह कोरोना वायरस के खिलाफ बड़ा कदम होगा। किसी मरीज को घर पर आसानी से एक गोली दी जा सकती है। इसके अब तक कोई दुष्प्रभाव नहीं देखे गए हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक पांच दिनों में 10 खुराक लेने की जरूरत है। यह संक्रमण के गंभीर परिणामों को रोकने में सक्षम

है। मर्क और फाइजर ने अब तक अपने क्लिनिकल ट्रायल्स का डेटा नहीं साझा किया है। ऐसे में एक्सपर्ट्स का मानना है कि जब तक स्टडीज की जांच नहीं हो जाती तब तक सावधानी बरतने की जरूरत है। हालांकि यह खोखले वादे जैसा नहीं है लेकिन इंडिपेंडेंट मॉनिटरिंग कमिटी से सहमति का इंतजार है। मर्क के मोलनुपिरवीर को ब्रिटेन में मंजूरी दे दी गई है। अमेरिका और यूरोपीय संघ के स्वास्थ्य अधिकारी भी तत्काल दवा की समीक्षा कर रहे हैं।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम
पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।
आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025